टाइम्स ऑफ इंडिया प्रकाशन

पराग

बच्चों का मधुर मासिक

जून १९६६

आभार : डा. देश दीपक.

www.kissekahani.com

एक शानदार आदतकी छोटी सी शुरुआत

बचपन में पड़ा संस्कार बड़ा पक्का होता है, यह सभी जानते हैं। और बैंक ऑफ इन्डिया के ज़रिए पैसे बचाने की आदत सिखाना तो बहुत ही आसान है। इस चित्र के शिशु की तरह दूसरे सभी बच्चे इस बात को पसन्द करेंगे। ☐ बचपन में पड़ी आदतें बड़ी उमर में भी छाया की तरह साथ रहती हैं। तभी तो पैसे की बचत करके सुखी रहनेवाले परिवारों में बड़ों से लेकर बच्चों तक सभी बैंक ऑफ़ इन्डिया में अपनी बचत का पैसा जमा करना पसन्द करते हैं। ऐसी सुन्दर पारिपाटी **आप भी** अपने परिवार मे डालिए।

RAAS/B/84 HIN

दी बैंक ऑफ इन्डिया लि.

टी. डी. कन्सारा, जनरल मैनेजर

फोटो : आर. के. गोपाल

www.kissekahani.com

अनुक्रमणिका

मुखपृष्ठका चित्र—

नारियलका ठंडा-मीठा पानी : विद्याव्रत १

मजेदार कहानियां—

औरा भैया : बृजेश कुलश्रेष्ठ ८
जब मिर्चीको गुस्सा आया : हुस्नजमाल छीपा १२
मोतीका गुच्छा रामपाली भाटी १५
आपबीती एक बूटकी : प्यारासिंह दाता १६
बेचारा ननीगोपाल : आशापूर्णा देवी २८
मोटापेका इलाज : नेत्रसिंह रावत ३९
पहले सोचो फिर करो : शम्सुद्दीन ४८

चटपटी कविताएं—

चाचाकी याद : वीरेन्द्र मिश्र ४
टेलीफोन : गंगासहाय 'प्रेमी' २७
नन्ही टहनी : मोटी डाली : शंभूप्रसाद श्रीवास्तव ३७
यह तितली है : प्रयाग शुक्ल ४३
खटमल भैया, गबेराम : मंगलराम मिश्र ५६
उल्टे खेल, गर्दभ राग : प्रेमचंद्र गोस्वामी ५७

मनोहर कार्टून-कथाएं—

छोटू और लंबू : शेहाब २४

धारावाही उपन्यास—

बुद्धूमलके कारनामे : निकोलाई नोसोव २०

अन्य रोचक सामग्री—

आधुनिक हनुमान—मिहिरसेन (लेख) : सरोज भट्ट १०
नन्हे बातून (चुटकुले) : आशारानी ३६
फूलोंकी परी तितली (सचित्र-लेख) : सईद ४०
दुनियाका सबसे धनी देश (लेख) : मजहर शम्सी ४४

स्थायी स्तंभ—

कुछ अटपटे कुछ चटपटे : संपादक ६
आओ मेरी खिड़कीमें बैठो : आशालता २६
छोटी छोटी बातें : सिम्स ३१
लान टेनिसकी कहानी—१ : हरिमोहन ३८
बच्चोंकी नई पुस्तकें : लक्ष्मीचंद्र गुप्त ४७
खिलौनोंका डिब्बा : अरुणकुमार ५२
रंग भरो प्रतियोगिता नं. ५० : 'पराग' कला विभाग ५९

चाचा की याद

मेरी छोटी-सी किताब,
उसमें रक्खा है गुलाब,
उसमें लिक्खा हुआ चाचाजी का नाम है।
वह चाहे कहीं भी हों,
वह चाहे नहीं भी हों,
उनको देश सारा भेजता सलाम है।

वह कहते थे हमको मिलकर चलना चाहिए,
तपते सूरज के संग हमको जलना चाहिए,
ओ रे मुन्ना, तू भी देख,
हिन्दू-मुस्लिम सारे एक,
मैंने सीखा उनसे 'आराम हराम है'।

उनने आजादी संजोई बड़े ढंगसे,
वह तो देशको बचाए रहे जंग से,
ये जो बांध हैं बने,
ये जो कारखाने हैं,
इनसे मोरचों पर हुआ बड़ा काम है।

वह जो होते तो ये देखते कि आज हम—
कैसे जोसे गाते गाते वंदेमातरम् ?
हमने मांगी नहीं भीख,
हमने बदली तवारीख,
बहा खून मिला जीत का इनाम है।

बी
रे
न्द्र
मि
श्र

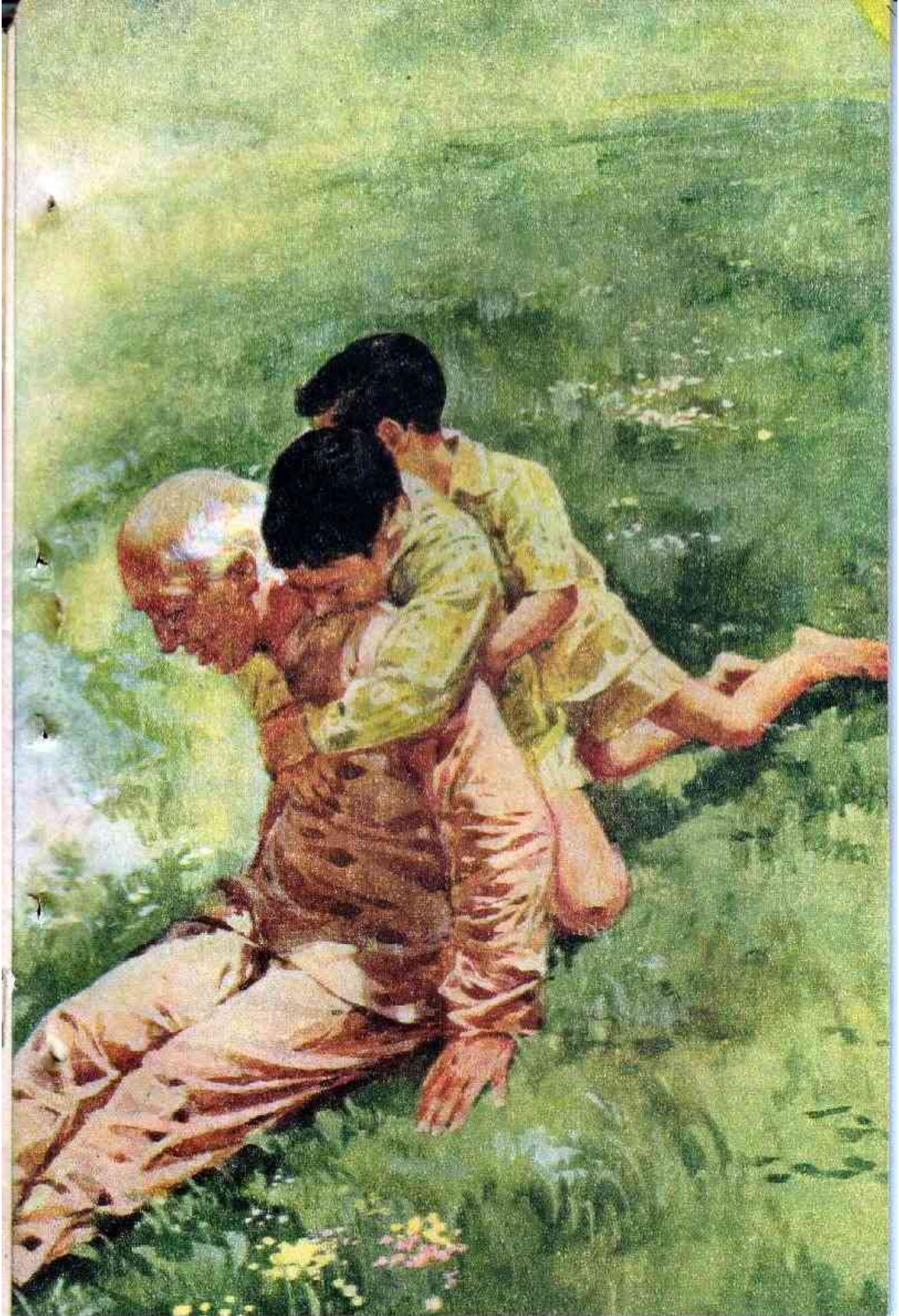

इंद्रा अम्बवानी, गोरखपुर :

पढ़ाई-लिखाईका आविष्कार किस मूर्खने किया?

जिसने सबसे पहले दूर बैठे सवाल भेजा!

कु. भारती सक्सेना, मुरादाबाद :

कुम्हारने मटका बेडौल बनाया, तो दोष मटकेका या कुम्हारका?

बननेके बाद भी मटकनेका दोष तो मटकेका ही होगा!

रमाकांत, वर्णपुर (बर्दवान) :

यदि मनुष्य घास खाना शुरू कर दे, तो आप क्या करेंगे?

'पराग' में घास खानेके लाभोंपर एक विशेष लेख छापेंगे!

कु. निर्मल मक्कड़, नई दिल्ली–३ :

कुछ लोग जूते पहनते हैं और कुछ लोग जूते 'खाते' हैं, आप इन दोनोंमेंसे किस प्रकारके लोगों-को पसंद करेंगे?

यदि देशकी खाद्य समस्या हल हो रही हो, तो हमारी पसंद अपने देशवासियोंके साथ है!

शिवसिंह चौहान, उरई (जालौन) :

अगर मनुष्य नाकसे खाना खाने लगे, तो क्या हो जाए?

और सांस मुंहसे ली जाए?—तुम्हारे दिमागकी तंदुरुस्ती तो ठीक है न?!

कु. कमलरानी अग्रवाल, बरेली :

मेरी मां कहती है कि पानीकी तरह यदि दूधकी भी एक टंकी लग जाए, तो कैसा रहे?

चार-चार टोंटियां लगी एक टंकी आती तो है, पर उसे चारा देना पड़ता है!

रयाज मोहम्मद, नागौर :

क्या कारण है कि अधिक पढ़े-लिखे लोगों-के दिमाग फेल हो जाते हैं?

अनपढ़ोंके पास हों, तो फेल हों!

अशोककुमार वर्मा, नई दिल्ली–३ :

काश कि मकान चलते-फिरते होते और हम आरामसे एक स्थानसे दूसरे स्थान तक पहुंच पाते—क्यों ठीक है न?

मगर उनके साथ एक स्कूल जरूर लगा होना चाहिए!

अशोककुमार, रोहिणी (संथाल-परगना) :

चीन, कोचीन तथा रांची, कराचीमें क्या संबंध है?

चीनके लिए कोचीन तथा कराचीके लिए रांची लोमड़ीके खट्टे अंगूर हैं!

मुकेश सक्सेना, बम्बई–७ :

मनुष्यको इज्जत प्राप्त करनेमें तो अत्यंत कष्ट सहना पड़ता है, लेकिन बेइज्जत होनेमें एक क्षण भी नहीं लगता—क्यों?

दूसरी अवस्थामें कष्टोंकी एक लंबी जंजीर उसके लिए तैयार रहती है!

कमलाकर दीक्षित, फैजाबाद :

श्रीमती इंदिरा गांधीका राज्य होनेसे अब आपको भी 'पराग'का संपादन किसी 'संपादिका' के हाथोंमें सौंप देना चाहिए —क्यों ठीक है न?

जरूर, लेकिन अगर वह हमारी तरह दाढ़ी नहीं लगा सकी, तो?!

मनमोहन मल्होत्रा, कानपुर :

कहते हैं दीपक तले अंधेरा होता है, अगर मैं अपना मन-दीप जला दूं, तो क्या मैं प्रकाश पा सकूंगा?

अगर तुम्हारा मन तुम्हारे तले है और तुम मनके तले नहीं हो, तो अवश्य पा सकोगे!

प्रदीपकुमार, मैनपुरी :

लोगोंका कहना है कि दीवारोंके भी कान होते हैं। क्या सचमुच होते हैं?

होते तो हैं, पर तुम उन्हें उमेठ नहीं सकते!

पंकजकुमार, मुजफ्फरपुर :

'सिंध' अब पाकिस्तानमें चला गया, फिर भी हमारे राष्ट्रीय गीत 'जन-गण-मन' में इसका नाम क्यों होता है?

उन सिंधियोंके कारण जिन्होंने दूसरे प्रदेशोंमें पहुंचकर रंग जमा लिया है!

बच्चोंके अटपटे प्रश्नोंके चटपटे उत्तर हम इस स्तंभमें छापते हैं। जिनके प्रश्न अधिक अटपट होंगे, उन्हें सुंदरसे पुरस्कार मिलेंगे। जिन्हें पुरस्कार मिले हैं, उनके नामके पहले ★ का निशान लगा है। प्रश्न कार्डपर ही भेजो और एक बारमें तीनसे ज्यादा मत भेजो। इस स्तंभमें पहेलियोंके उत्तर नहीं दिए जाएंगे। पता याद कर लो: संपादक, 'पराग (अटपटे-चटपटे)', पो. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई—१

कु. वीना सोलंकी, आगरा :

यदि आगे कुआं, पीछे खाई हो, तो क्या करना चाहिए?

पालथी मारकर जहांके तहां बैठ जाना चाहिए!

कहते हैं फटा मन और फटा दूध फिर नहीं मिलते। आपके ध्यानमें कोई तरकीब है इन्हें मिलानेकी?

क्यों नहीं है—मनको चमनकी हवा खिलाओ और दूधके रसगुल्ले बनाओ!

संपतलाल माली व कैलासचंद्र, रामगढ़ :

छात्र-दल और पत्र-दलमें क्या अंतर है?

परीक्षा-भवनमें प्रश्न-पत्र-दलका छात्र-दलसे कष्टप्रद मिलन होता है!

गजराजसिंह चौहान, टांकड़ी (गुड़गांव) :

नानीमें ऐसी कौनसी करामात है कि वह कठिन काम आनेपर मर जाती है, किंतु बादमें जीवित हो जाती है?

कभी कभी नहीं भी होती—तब बेचारे बेबतोंको सदा अपने ही हाथोंसे सारे काम करने पड़ते हैं!

विजयप्रताप सिंह, आगरा :

कहते हैं खोटा बेटा और खोटा पैसा समयपर काम आता है, कैसे?

जैसे बरसातमें टूटा हुआ छाता!

वीनाकुमारी शुक्ल, राउरकेला—३ :

मुझे आपके पास प्रश्न भेजते समय डर क्यों लगता है?

हमारी रद्दीकी टोकरीके कारण!

अरुणकुमार, श्रीकरणपुर (राजस्थान) :

'सिर बड़े सरदारोंके, पांव बड़े गंवारोंके,' अगर किसीके दोनों बड़े हों, तो उसे क्या कहें?

गंवारोंका सरदार!

हर्षकुमार चतुर्वेदी, रिवाड़ी (गुड़गांव) :

गधेके नाममें आने वाले दोनों अक्षर 'ग' और 'ध' संगीतके सात स्वरोंमेंसे हैं, परंतु फिर भी गधा अपनी आवाजको सुरीली क्यों नहीं बना सकता?

गलेमें आवश्यकतासे कहीं अधिक खरज होनेके कारण!

★ पुरुषोत्तमदास, कक्षा ६—ब, श्री तिलक राष्ट्रीय विद्यालय, कटनी (म. प्र.) :

बंदरोंके अधिक मित्र क्यों होते हैं?

क्योंकि हरेकके सिरमें जुएं होती हैं, जिन्हें मित्र ढूंढ़ ढूंढ़कर गड़प कर जाते हैं!

कु. स्नेहलता कौशिक, जावरा :

अक्लके फेर और समयके फेरमें क्या अंतर है?

प्रयत्न यह रहना चाहिए कि दोनों एक साथ न आएं—इन्हें एक-दूसरेसे अलग करना मुश्किल होता है!

श्यामनंदन प्रसाद, बयाजक (पटना) :

मार खानेपर हमें रोना क्यों आता है?

मारने वालेका लाड खो देनेके कारण!

प्रदीपकुमार, नई दिल्ली :

मेरी एक आंख खराब है, जिसके कारण मैं 'पराग' केवल एक ही आंखसे पढ़ सकता हूं। क्या आप मुझे पराग आधे मूल्यमें देंगे?

तुम्हारे लिए 'पराग' का दुगना मूल्य होना चाहिए, क्योंकि 'पराग' के पृष्ठोंको तुम्हारे दिमाग तक पहुंचनेके लिए एक ही खिड़कीपर क्यू लगाना पड़ता है!

कुंदनलाल, बरवाला (हिसार) :

जिस विद्यार्थीको प्रश्नका उत्तर नहीं आता, वह सिर क्यों खुजलाता है?

दिमागमें गुदगुदी पैदा करके उसे चुस्त बनानेके लिए!

★ राजीवलोचन सिनहा, द्वारा श्री हरिश्चंद्र सिनहा, १९७—सी, जटेपुर रेलवे कालोनी, गोरखपुर (उ. प्र.) :

बच्चे दिन भरमें बड़ोंसे अधिक खा जाते हैं, परंतु राशन कार्डमें उनका आधा यूनिट ही जोड़ा जाता है—क्यों?

वास्तवमें वह आधा यूनिट बड़ोंके लिए होता है!

प्रवीनकुमार चौपड़ा, कपूरथला :

जिंदगीका सबसे बड़ा दुःख और सुख क्या है?

चोटीकी फिसलन और डूबतेका तिनका! ●

कहानी

भौंरा भैया

— बृजेश कुलश्रेष्ठ

एक बगीचेमें रंग-बिरंगे, तरह तरहके ढेर-सारे फूल खिले थे। चम्पा, चमेली, गुलाब और गेंदा सभी खिलखिलाते हुए मंद मंद हवाके साथ अठखेलियां कर रहे थे। बगीचेके बीचोंबीच एक सुंदर-सा तालाब था, जिसमें बहुत-से सफेद कमल मुस्करा रहे थे और शीतल वायुके झोंकोंमें झूम रहे थे।

वहीं सैकड़ों रंग-बिरंगी तितलियां फूलोंके साथ खेल रही थीं। वे पंख फड़फड़ाती हुई कभी गुलाबके फूलपर जा बैठतीं और कभी चमेलीके फूलपर, कभी कभी मगन हो हवामें ही झूलती रहतीं।

अचानक एक तितलीकी निगाह पेड़के नीचे बैठे हुए भौंरेपर पड़ी। भौंरा चुपचाप, गुमसुम उदास-सा बैठा था। उस तितलीने अपनी सखी तितलीसे कहा, "देख री, इस भौंरेको मैं तीन दिनसे यहीं बैठा देख रही हूं। न जाने क्यों चुपचाप बैठा रहता है!"

सखी तितली बोली, "चल, बेचारेसे पूछ ही क्यों न लें कि उसे क्या दुःख है।"

बस दोनों उड़ती हुई उस भौंरेके पास आईं। पहली तितलीने पूछा, "क्यों, भौंरे भैया, तुम चुपचाप यहां क्यों बैठे रहते हो? तुम फूलोंके साथ क्यों नहीं खेलते?"

भौंरा कुछ भी नहीं बोला।

उस तितलीने फिर पूछा, "क्या तुम हमसे नाराज हो?"

"नहीं तो," भौंरा धीरेसे बोला। "मुझे फूल अपने साथ नहीं खिलाते। कहते हैं कि तुम काले हो, गंदे हो; भाग जाओ हमारे पाससे।"

भौंरेकी इस बातपर तितलियां बोलीं, "तो तुम भी फूलोंको गाना मत सुनाना।"

भौंरेने कहा, "मैंने कहा था कि—अगर तुम मुझे अपने साथ नहीं खिलाओगे, तो मैं भी तुम्हें गाना नहीं सुनाऊंगा। इसपर चमेली बोली—अरे जा जा, तुमसे गाना कौन सुने, हमें तो मधुमक्खीका गाना अच्छा लगता है।"

इतनेमें मधुमक्खी भी वहां गुनगुनाती हुई आ गई। तितली और भौंरेको चुपचाप बैठा देख बोली, "अरे! तुम यहां क्या कर रहे हो? देखो तो कितना सुंदर मौसम है! आओ, चलो फूलोंके साथ खेलें।"

तितली रूठती हुई बोली, "हम फूलोंके साथ

नहीं खेलते क्योंकि वे हमारे भौंरे भैयाको अपने साथ नहीं खिलाते।"

मधुमक्खी बोली, "अरे, चलो तुम सब मेरे साथ, मैं फूलोंको गाना सुनाकर प्रसन्न कर दूंगी।"

भौंरा और तितली एकदम प्रसन्न होकर उड़ने लगे। भौंरेको बहुत आनंद आ रहा था। उसने मधुमक्खीके साथ खूब गीत गाए। वह कभी गेंदेके फूलपर बैठ जाता और कभी चमेलीके फूलपर। लेकिन जैसे ही वह गुलाबके फूलपर बैठा, गुलाबने उसे फटकार दिया और बोला, "चल हट हमारे पाससे, काला कलूटा कहींका!"

भौंरा, जो गीत गा रहा था, एकदम सहमकर चुप हो गया और उदास होकर एक तरफ हटकर बैठ गया। यह देखकर मधुमक्खीको बड़ा क्रोध आया। वह तड़ककर बोली, "क्यों जी, तुमने हमारे भैयाको इस तरह क्यों फटकार दिया?"

गुलाब बोला, "यह कभी कभी मेरे अपना डंक चुभा देता है।"

मधुमक्खी बोली, "तो क्या हुआ, तुम भी तो कभी कभी मेरे कांटे चुभा देते हो। लेकिन मैं तो तुमसे कभी नाराज नहीं होती।"

गुलाबने जवाब दिया, "रानीजी, नाराज होकर जाओगी कहां, तुम्हें अच्छा अच्छा शहद कौन खिलाएगा?"

मधुमक्खी बोली, "शहद तुम मुफ्तमें नहीं खिला देते, पहले गाना सुनते हो।"

चमेली बीचमें ही बोल उठी, "तुम नहीं गाना सुनाओगी, रानीजी, तो हम तितली रानीके साथ खेलकर दिल बहला लेंगे।"

तितली बोली, "अगर तुम मेरे भौंरे भैयाको नहीं खिलाओगे, तो मैं क्यों खेलूंगी तुम्हारे साथ?"

इनकी लड़ाईको कमल दादा चुपचाप सुन रहे थे। बोले, "अरे भाई, तुम लड़ते क्यों हो? यहां आकर तो बताओ मामला क्या है।"

कमल दादाका आदर सब करते थे और सभी उनका कहना मानते थे। इसलिए सब चुपचाप कमल दादाके पास आकर खड़े हो गए।

कमल दादाने समझाया: "देखो, तुम्हें इस प्रकार नहीं लड़ना चाहिए। तितली रानी, अगर तुम फूलोंसे नाराज हो जाओगी, तो तुम्हारे परोंको रंग-बिरंगे रंगोंसे कौन सजाएगा?" और फिर फूलोंकी ओर मुड़कर बोले— "देखो, फूल बेटा, अगर तुम भौंरेसे और मधुमक्खीसे लड़ोगे, तो तुम्हें गाना सुना सुनाकर कौन प्रसन्न रखेगा? भौंरा तो तुमसे कुछ नहीं लेता, फिर भी गाना सुनाता है। गोरोंको कालोंसे घृणा नहीं करनी चाहिए। यह बुरी बात है।"

कमल दादाने फिर भौंरेसे कहा, "अगर तुम्हें कोई नहीं खिलाए, तो तुम मेरे साथ खेला करो।"

तितली और मधुमक्खी कमल दादाकी बातसे बड़ी प्रसन्न हुईं। भौंरा भी बहुत प्रसन्न हुआ। वह दिन भर कमल दादाके साथ खेलता रहा और गीत गुनगुनाता रहा। शामको जब थक गया, तो अलग जाकर चुपचाप बैठ गया।

कमल दादा बोले, "अरे! तुम वहां क्यों बैठे हो? आओ, मैं तुम्हें अपनी गोदमें सुलाऊंगा।"

भौंरा एकदम प्रसन्न होकर कमल दादाकी गोदमें जा बैठा। रातमें कमलने अपनी पंखुड़ियोंको बंद कर लिया। रात भर भौंरा आनंदसे सुखकी नींद सोया। सुबह होते ही कमल दादाने अपनी पंखुड़ियां खोल दीं और बोले, "भौंरे, अब दिन निकल आया है। तुम अब जाओ और खेलो।"

भौंरा प्रसन्न हो उड़ गया। ●

पाक जलडमरूमध्य को पार करने वाला आधुनिक हनुमान :

बच्चो, क्या तुमने कभी किसीको तैरते देखा है? तैरना भी एक कला है। तैरना हरेकको सीखना चाहिए। खेलके साथ साथ यह पानीसे बच निकलनेका एक साधन भी है। इंग्लैण्ड, अमरीका, ऑस्ट्रेलिया आदिमें छोटे छोटे बच्चोंको तैरना सिखाया जाता है। वहां तैरना भी शिक्षाका एक अंग ही माना गया है।

कुछ तैराक खड़े पानीमें बहुत अच्छा तैरते हैं, लेकिन बहती नदीकी धारमें इतनी अच्छी तरह नहीं तैर सकते। कुछ तेज बहती नदी, नहर और यहां तक कि समुद्रमें भी तैर लेते हैं। लेकिन नदी, नहर, तालाबसे समुद्रमें तैरना बहुत कठिन है। समुद्र तो तुमने देखा ही होगा। अथाह है। गहराई भी कम नहीं होती। ऊंची ऊंची लहरें उठती हैं। तूफान आते हैं। कहां कितनी गहराई है, कहां पानीमें भंवर है, कहां पत्थर है, कहां लहर है, कुछ पता नहीं चलता। इसके साथ ही इसमें बड़े भयंकर जहरीले सांप, बड़ी बड़ी मछलियां होती हैं। पानी भी नमकीन होता है। इसलिए समुद्रमें तैरना हर तैराककी हिम्मतका काम नहीं है। इसके लिए हिम्मतके अलावा अनुभवकी भी जरूरत है। समुद्रमें तैरना एक विशेषता है। जब लहर आती है, तो तैराक पहले उसे देखता है। अगर लहर छोटी और हल्की है, तो वह उसपरसे कूदकर आगे बढ़ जाता है। अगर लहर तेज और भारी है, तो वह डुबकी लगाकर ऊपरसे उसे निकलने देता है। ऐसा न करनेसे लहरोंके भंवरमें फंसनेका अंदेशा रहता है। समुद्रमें तैरनेके लिए शरीरमें 'ग्रीस' लगाना बहुत जरूरी है। एक तो समुद्री जल खारा होता है, दूसरे 'ग्रीस' न लगाई जाए, तो शरीरकी त्वचा फटने लगती है और 'चर्मरोग' भी होनेकी संभावना रहती है।

तो आओ, आज तुम्हें उस प्रसिद्ध भारतीय तैराक मिहिर सेनके बारेमें बताएं जो दो बार समुद्रमें तैर चुका है। यहां एक बात तैराकीके बारेमें ध्यान देने योग्य है। वैसे तो तैराकी ५० मीटरसे लेकर एक हजार मीटर तककी ही 'खेल' में मानी जाती है। लेकिन समुद्रकी तैराकी 'लंबी तैराकी' के अंतर्गत आती है और इसमें फासला मीटरोंमें नहीं, मीलोंमें होता है। तो कहनेका मतलब यह कि मिहिर सेनने मीलों तैरकर समुद्रको एक किनारेसे दूसरे किनारे तक पार किया है।

'इंग्लिश चैनल' का नाम तो तुमने सुना ही होगा। ब्रिटेनके 'डोवर' नामक तटसे फ्रांसके बीचकी २२ मील लंबी खाड़ीको 'इंग्लिश चैनल' कहते हैं। इस खाड़ीका जल बहुत ठंडा रहता है। यहांका समुद्र अन्य स्थानोंके समुद्रसे कुछ शांत है, लेकिन गहराई काफी है। लेकिन मिहिर सेनने इस ठंडे जलवाले २२ मील लंबे 'इंग्लिश चैनल' को आठ वर्ष पहले २६ सितंबर १९५८ को पौने पंद्रह घंटेमें पार कर तेज तैरने वालोंमें चौथा स्थान प्राप्त किया था। इस सफलतापर भारत सरकारने उन्हें पद्मश्रीकी उपाधिसे सम्मानित भी किया था। लेकिन 'इंग्लिश चैनल' पार करना हर तैराकके बसकी बात

नहीं है। एक तो वहां पहुंच पाना ही हर तैराकके लिए कठिन है। दूसरे काफी खर्चकी भी जरूरत पड़ती है। हर तैराक हजारों रुपये खर्च करके तो वहां जा नहीं सकता। इसलिए मिहिर सेनने सोचा, क्यों न अपने भारत और श्रीलंकाके बीच पाक जलडमरूमध्यकी खाड़ीमें ही ऐसा प्रयास किया जाए, जिससे अपने देशके तैराकोंको भी समुद्रमें तैरने और पार करनेका अवसर मिले। इससे एक तो कम खर्च होगा, दूसरे 'इंग्लिश चैनल' जो अब पर्यटन-केंद्र ही हो गया है, के अतिरिक्त तैराकोंको दूसरी तरहके समुद्रमें भी तैरनेका मौका मिलेगा। वास्तवमें उन्होंने अन्य देशके तैराकोंको एक प्रकारसे चुनौती दी है। क्योंकि पाक जलडमरूमध्य और इंग्लिश चैनलकी खाड़ीमें बहुत अंतर है। पाक जल-

मिहिर सेन

—सरोज भट्ट

डमरूमध्यमें समुद्र बहुत अशांत है। बड़ी ऊंची ऊंची लहरें आती हैं। गहराई भी ज्यादा है। पानी ठंडा नहीं है, लेकिन गर्मियोंमें तैराकको बहुत गर्मी लगती है। इसके साथ ही इस क्षेत्रमें जहरीले सांप, बड़ी बड़ी शार्क, व्हेल मछलियां और अनेक प्रकारके समुद्री जानवर बहुत ज्यादा हैं। सच कहा जाए, तो यह क्षेत्र तैराकके लिए बहुत खतरनाक है।

मिहिर सेनने जब पाक जलडमरूमध्यमें तैरनेका निश्चय किया, तो भारतीय नौसेनाने उनकी सुरक्षाकी जिम्मेवारी ली और उनकी सुरक्षाके लिए तीन पोत—सुकन्या, शारदा और कोंकण तथा ७ लांचे, चार नौकाएं और एक व्हेलर (व्हेल मछली मारने वाली नौका) को कमांडर शर्माके नेतृत्वमें तैनात किया। श्रीलंकाके तलाई मन्नार क्षेत्रसे भारतके धनुषकोटि तट तकका क्षेत्र २२ मील लंबा माना गया है। इसे मिहिर सेनने तैरनेके लिए चुना था।

५ अप्रैल मंगलवारको प्रातः ५–३५ पर मिहिर सेन शरीरपर ग्रीस लगवाकर, आठ वर्ष पुरानी दाढ़ी बनवाकर (ध्यान रहे, इंग्लिश चनल पार करनेके बाद मिहिर सेनने दाढ़ी रख ली थी और निश्चय किया था कि भविष्यमें अब जब कभी समुद्रमें तैरेंगे, तो दाढ़ी साफ करा देंगे) तैरना आरंभ किया। आगे-पीछे, दाएं-बाएं पोत तथा नौकाएं उनकी रक्षा कर रही थीं। मिहिर सेनकी अंग्रेज पत्नी बेला सेन उनके आगे आगे एक नौकापर बैठी उनके मनोरंजनके लिए गाती चल रही थीं। जब मिहिर सेनको प्यास लगती, तो वह कागजके गिलासमें बर्फका पानी, ग्लूकोज, नारियल, नींबूका पानी देती जातीं। मिहिर सेन तैरते तैरते जब थक जाते, तो पीठके बल पानीमें लेट जाते और लेटे लेटे ही तैरते। बारह घंटेमें उन्होंने बारह मीलकी दूरी तय कर ली थी।

शाम तक मिहिर सेन आरामसे तैरते रहे। रात जब आई, तो उस दिन चंद्रमा पूरा था—पूर्णिमा थी। समुद्रमें ज्वार आने लगे। ऊंची ऊंची लहरें समुद्रमें उठने लगीं। मिहिर सेन उन लहरोंको फांदते, डुबकी लगाते आगे आगे ही बढ़ते गए। एक समय ऐसा भी आ गया जब वह एक घंटेमें कुल २०० फुट ही आगे बढ़ पाए। पांचसे दस फुट ऊंची लहरोंको उन्होंने पार किया। रातको एक बार एक जहरीले पांच फुट लंबे सांपने भी उनपर हमला किया। लेकिन नौकाओंपर तैनात निशानेबाजोंने उसे मार भगाया। लहरोंकी तेज तरंगोंने उन्हें कई बार दूर दूर तक फेंका भी और इसकी वजहसे उन्हें आठ मील अधिक तैरना पड़ा। और इस प्रकार ६ अप्रैलकी प्रातः ७ बजकर १६ मिनिटपर वह भारतीय तटपर आ गए और २५ घंटे ३६ मिनिटमें उन्होंने २२ मील कही जाने वाली ३० मीलकी यह दूरी तैरकर पार की।

मिहिर सेन पहले भारतीय हैं, जिन्होंने इंग्लिश चैनलके बाद पाक जलडमरूमध्यको भी तैरकर पार किया है। वैसे वह पेशेसे तैराक नहीं हैं। तैराकी उनका शौक है। मिहिर सेनकी उम्र ३६ वर्ष है और वह कलकत्ताके रहने वाले हैं। विलायतसे उन्होंने बैरिस्ट्री पास की है और आजकल कलकत्तामें वकालत करते हैं। उनकी एक इच्छा थी, जो उन्होंने पूरी कर ली। उनके इस प्रयासपर भारत सरकारने उन्हें बधाई दी है। विश्वास किया जाता है, अब और भी तैराक इस क्षेत्रमें तैरनेका प्रयत्न करेंगे। हमें अपने ऐसे तैराकपर अभिमान है। ●

कहानी

जब मिर्ची को गुस्सा आया

शाम ढल चुकी थी। घरोंमें दिया-बत्ती हो रही थी। लोग अपने अपने घरोंको लौट रहे थे। रेलूमल भोंदूमल ठेलेवाला भी दिनभरका थका-मांदा अपना ठेला ठेलते हुए घर आ पहुंचा। उसके ठेलेमें नाना प्रकारके मौसमी फल व सब्जियां थीं। अंगूरसे लेकर मेथी, पालक आदि सब ही रेलूमल भोंदूमल बेचता था। उसने आवाज दी, तो उसका बेटा ढींगड़मल बाहर आया। उसकी सहायतासे तमाम फल व सब्जियां मकानके ठंडे भागमें रख दी गईं, जहां पानीके घड़े रखे रहते थे। फिर दोनों बाप-बेटे रसोईघरमें घुस पड़े अपने पेटकी आग बुझानेके लिए।

रातके कोई तीसरे पहर मकानके उस ठंडे भागमें कुछ शोर-सा हुआ, वहां— जहां फल-सब्जियोंका ढेर लगा था। ढेरके निचले भागसे एक मद्धिम-सी आवाज आ रही थी— 'अरे! मैं मर गया। मेरा जोड़ जोड़ बिखर गया; मुझपर इतना जोर मत डालो।'

यह आवाज सीताफलकी थी। इसपर अंगूर बोले— 'भई, हम क्या करें? हम तो ठहरे हल्के-फुल्के, सारा दोष इन तरबूजोंका है।'

वाकई दोष तरबूजोंका था, मगर उन्होंने भी अपनी सफाई पेश करनेमें कुछ कसर न रखी: 'माना कि हमारा बोझ भाई सीताफलपर पड़ रहा है। मगर हम क्या करें; हम ठहरे भारी भरकम। इस साले आदमीने ही हमें यहां रख दिया है, वरना हम तो अहिंसावादी हैं!'

'यह अहिंसा क्या होती है?' पालकजी पूछ बैठे।

'किसीपर जुल्म न करनेकी आदतको अहिंसा कहते हैं,' — एक तरबूजने करवट बदलते हुए कहा, तो एक 'पिच'की आवाज हुई। दूसरी ओर केले पड़े थे, यह आवाज उन्हींकी थी। केलोंमेंसे एक बूढ़ा केला (सबसे सड़े गलेवाला) बोला, 'क्या अहिंसा अहिंसा बकते हो? कहते हो अहिंसा, करते हो हिंसा! मेरी तो जान ही पिस गई!'

लौकी तरबूजका पक्ष लेते हुए बोली, 'भाई, तरबूजोंपर गुस्सा मत उतारो, केले मियां, यह अपना मालिक है न ठेलेवाला, सारा दोष उसीका है!'

इसपर नींबूने मुंह बनाकर कहा, 'अजी, लौकीजी, आप अपने आपेमें रहिए। आप भी तरबूजकी बहन होती हैं जी!'

लौकीको अपनी गलतीका आभास हुआ और वह अपनी दुमको मरोड़कर एक ओर दुबक गई।

नींबूने आगे कहा, 'मगर, हां जी, यह तो सही है कि जुल्म करने वाला आदमी ही है। देखो तो हमारी जातिको किस बेदर्दीसे निचोड़ते हैं। हमारे जीवनका सारा 'तत्व' ही तो निकाल लेते हैं। कभी कभी तो हमारे दो भाग करके गरम गरम अंगारोंपर रख देते हैं। फिर तिल्लीसे हमारी 'अंतड़ियों'को कुरेदते हैं! फिर तो वह दर्द होता है कि कुछ न पूछो जी! जुल्म करने वाली बात तो

www.kissekahani.com

सही है ही।'

'और नहीं तो क्या?' एक नारंगी बोल उठी। 'हमारे गुदगुदे गोल बदनके टुकड़े कर करके जब ये लोग चबाते हैं, तो हम रो पड़ती हैं। हमारी आखोंसे आंसू टपकने लगते हैं!'

तभी किसीने उदास स्वरोंमें गुनगुनाया :

'एक नारंगी के टुकडे बीस हुए!
कोई अभी गया कोई तभी गया!'

गाजर क्यों पीछे रहती—'ये जालिम आदमी कद्दूकसपर हमारा कैसा भुर्ता बनाते हैं— कि हमारा बदन छलनी हो जाता है!'

मूली बोली, 'इन्होंने तो वास्तवमें हमें गाजर-मूली समझ रखा है। मनमाने ढंगसे हमारे बदनके पारे पारे करके रख देते हैं। इन्हें कोई रोकने वाला

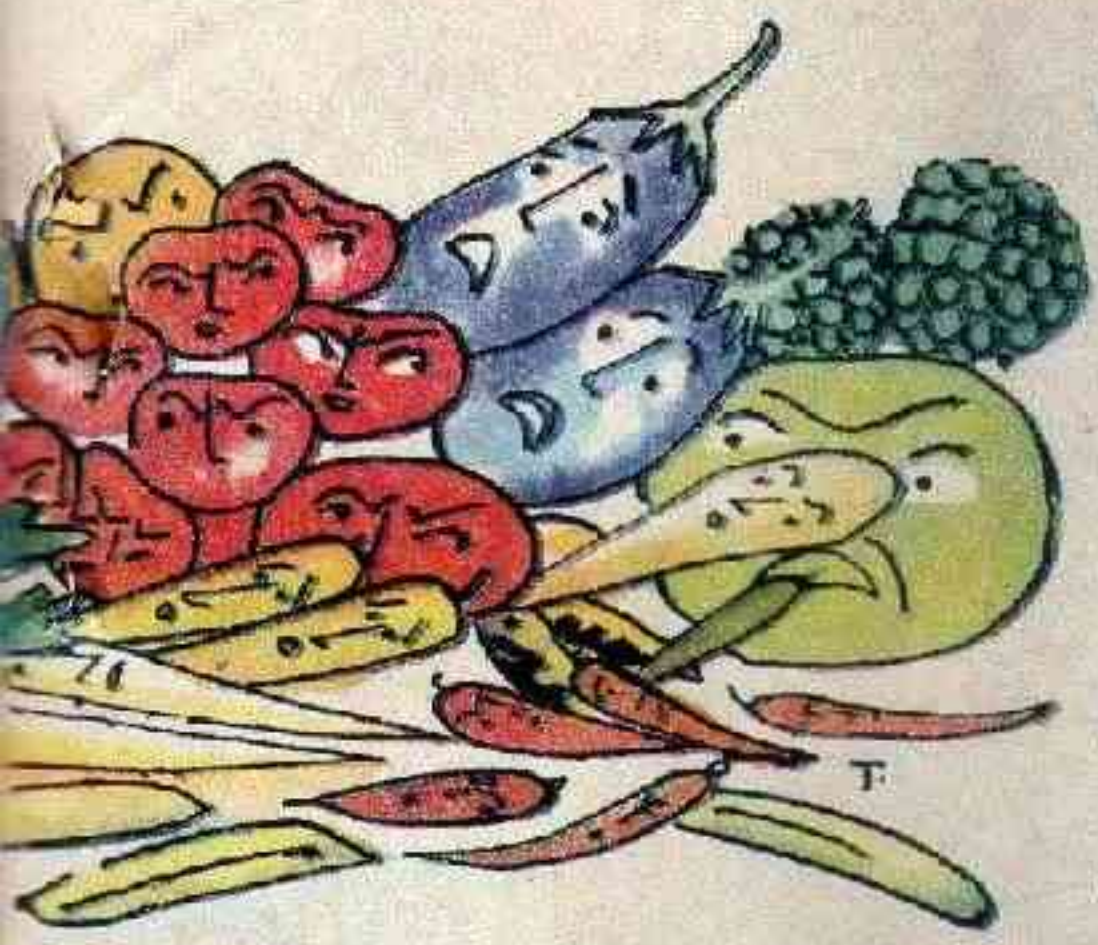

भी नहीं।'

'कौन रोके साहब?' सिंघाडे बोले। 'हमें तबाह करना तो ये लोग अपना फर्ज समझते हैं। हम अपने कोमल तनको कांटों भरी खोलीमें छिपाए रखते हैं, लेकिन ये दुष्ट फिर भी नहीं छोड़ते।'

चीकू बोला, 'हमें तो ये लोग ज्यादा ही चाव से खाते हैं।'

'अवश्य,' मिर्चियां बोलीं, 'आप मीठे जो ठहरे! मीठेको सब चाहते हैं। हमसे सब डरते हैं। जुल्म हमपर भी करते हैं, मगर डरते डरते। कई बार तो हमारी बहनें इन आदमियोंको ऐसा मजा चखाती हैं कि बेचारे आंसू बहाकर जल-थल एक कर देते हैं।'

'यह तो आप अच्छा करती हैं,' अंगूर बोले। 'कभी कभी तो हम भी इनका मुंह खट्टा कर देते हैं, तब ये कहने लगते हैं— अंगूर खट्टे हैं! फिर वह मजा आता है कि वाह वाह!'

'अरे, आप सब आदमीसे डरते क्यों हैं? हमें भी तो देखो। जरा-सी हैं मगर नानी याद दिला देती हैं। हिम्मतकी कीमत है, प्यारो!' मिर्चियां बोलीं।

'आखिर मिर्चियां जो ठहरीं!'

लौकीके इस व्यंग्यपर सारी मिर्चियां गुस्से-में भर तमतमा उठीं। नौबत 'तू तू-मैं मैं' तक आई और फिर बात ही बातमें घमासान युद्ध छिड़ने लगा।

पार्टीबाजी हो गई थी। सब एक-दूसरेके ऊपर गिरकर अपनी हिम्मत जताना चाहते थे। इस धक्कमपेलमें सीताफल और केलेकी तो हुलिया ही टेंट हो गई और नारंगीने रस छोड़ दिया। नींबुओंने मुंह खट्टा कर दिया। गोभी बिखर गई। तरबूज फट पड़े। पानी बह चला। यह हुआ वह हुआ कि कीचड़की दुनिया आबाद हो गई।

—हुस्नजमाल हीपा

सवेरे फेरीमें जानेके लिए जब रेलूमल भोंदू-मलने कपड़ा हटाया, तो दंग रह गया और माथा ठोंककर बैठ गया। बीवीको आवाज देकर कहने लगा : "अरी शीला, गजब हो गया उस बेईमान फख्रुद्दीन जमालुद्दीन फूटवालेने फिर धोखा दे दिया। कल ही तो ये सब खरीदे थे और रात ही रातमें इनकी यह हालत हो गई! मैं अभी उसके मुंहपर यह सब फेंक आता हूं। साला, धोखेबाज कहींका!"

इतनेमें रेलूका बेटा ढींगड़मल वहां आया और बोला, "बाबा, फख्रुद्दीनका कोई दोष नहीं। मुझे क्षमा करना। रात सिरहाने पानी रखना भूल गया। प्यास लगी, तो इधर आया। अंधेरेमें ठोकर खा गया और इनपर गिर पड़ा। घुटना फूट गया। बड़े हाथ-पांव मारे जब कहीं वापस खड़ा हो सका।"

रेलूमलका मुंह फटेका फटा रह गया और ढींगड़मल कान खुजाने लगा। ●

अपने ऊपर जुल्म मत कीजिए ! छुट्टियों का मजा लीजिये । फालतू सामान लेकर चलने से आपकी यात्रा और छुट्टियां दोनों ही का मजा किरकिरा हो जायगा ।

सुगम यात्रा कीजिये सभ्य यात्रा कीजिये

WESTERN RAILWAY

मोती का गुच्छा

वर्षा ऋतु आई देखकर मेघराजने बूंदोंको आज्ञा दी : "मेरी बच्चियो! जाओ, धरती-पर जाकर उसे हरा-भरा बनाओ। प्यासे पेड़, पशु-पक्षी, पृथ्वीके मनुष्य सभी तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। जाकर उनकी सेवा करो और उन्हें सुखी बनाकर अपना जीवन सार्थक करो।"

सभी बूंदें धरतीपर आनेकी तैयारी करने लगीं। किसीने अपनी ऊदे रंगकी फ्राक पहनी, तो किसीने आसमानी रंगकी। किसीने जामुनी रंगके रिबन अपने बालोंमें लगाए, तो किसीने सुनहले गहनोंसे अपने बालोंको सजाया। किसीने बिजलीकी पायल पहनी, तो किसीने जुगनुओंके बुंदे। जब सब बूंदें इस प्रकारसे धरतीपर आनेको तैयार हो रही थीं, तो मेघराजने देखा कि आभा नामकी एक बूंद चुपचाप एक कोनेमें उदास बैठी है। मेघराजने उससे पूछा—"क्या बात है, आभा! तुम धरती-पर जानेकी तैयारी क्यों नहीं कर रही हो?" आभाने मुंह फुलाकर उत्तर दिया, "मैं धरतीपर नहीं जाऊंगी।"

"आखिर क्यों?" मेघराजने आश्चर्यसे पूछा।

"गौरी नामकी बूंदने मेरा अपमान किया है," आभाने कहा।

"पर गौरी तो पहले ही पृथ्वीपर जा चुकी है।"

"हां, और वह किसी सीपमें पड़कर मोती बन चुकी है। कल जब मैं बादलके रथपर बैठकर धरतीकी सैर करने निकली, तो उसने मुझे देखकर मुंह चिढ़ाया और बोली— 'आभा, कुछ समय बाद तुम इस पृथ्वीपर गिरकर कीचड़ बन जाओगी। सब तुम्हें देखकर दूर भागेंगे। पर मैं? अरे मैं तो अनमोल मोती बन गई हूं! बड़े बड़े राजा-महाराजा मुझे अपने मुकुटमें लगाकर प्रसन्न होंगे अथवा मैं किसी मंदिरमें भगवानके गलेके हारमें सजा दी जाऊंगी", आभाने उदास मनसे सारी बात बताकर कहा, "अब तो मैं तभी पृथ्वीपर जाऊंगी, जब आप मुझे मोती बना देनेका वचन देंगे।" मेघराजने सारी बात सुनकर कहा, "अच्छा, तो तुम अभी पृथ्वीपर मत जाओ। मैं तुम्हें तभी पृथ्वीपर भेजूंगा जब तुम जाना चाहोगी।" मेघराजने और बूंदोंको भी धरतीपर जानेसे रोक दिया। कुछ दिनोंमें ही पृथ्वीपर हाहाकार मच गया। पशु-पक्षी, मनुष्य सभी भूख-प्याससे मरने लगे।

आभाने अपनी सखी गौरीको तलाश किया। वह एक व्यापारीके गलेमें सजी हुई थी, कि किसीने उसे उसके स्वामीके गलेसे नोच लिया। पर, एक दिन वह भी अपना सब सामान (गौरी सहित) एक गुफामें छोड़कर पानीकी तलाशमें कहीं निकल गया। एक किसान-बालककी गौरीपर नजर पड़ी। उसने उसे उठा-कर अपने बैलके गलेमें बांध दिया। बैल भी एक दिन पानी पीनेकी धुनमें एक तालाबकी कीचड़में फंस गया। किसी तरहसे वह तो बाहर निकल आया, पर उसका कंठा गौरी सहित कीचड़में ही रह गया। यह देखकर आभा हंसती हंसती मेघराजके पास जाकर बोली, "मैं पृथ्वीपर जानेको तैयार हूं।"

"पर तुम तो मोती बनना चाहती हो ना?" मेघराजने पूछा।

"हां! मैं मोती ही बनूंगी, पर गौरी जैसा कीचड़में पड़ा रहने वाला मोती नहीं। क्या आप मुझे ऐसा मोती बना सकते हैं, जो इन भूखे मरते प्राणियोंकी भूख भी बुझा सके और लड़ाई-झगड़े-का कारण भी न बने, जिसे सब प्यार करें।"

मेघराज उसकी बात सुनकर मुस्करा दिए। उन्होंने आभाको प्यार किया और एक खेतकी ओर इशारा करके उसमें जानेकी आज्ञा दी।

कुछ दिनोंमें किसानने देखा, उसका खेत मोती जैसी फसलके झूमकोंसे भर गया था। आभा उन्हीं मोतियोंमेंसे एक थी और उसे कीचड़से सने गौरीके उदास चेहरेको देखकर दया आ रही थी।

—रामपाली भाटी

आपबीती

एक पंजाबी कहानी

"अरे, भाई रमते, मेरी तरफ क्यों आंखें फाड़ फाड़कर देख रहे हो? मैं शुरूसे ही इस हालतमें नहीं था। किसी समय मुझपर भी जवानी थी। उस वक्त मैं भी किसी तुम्हारे जैसे रईसके पैरोंमें पड़ा हुआ था। तुम मुझसे नफरत न करो और सामने पड़े हुए पत्थरपर बैठकर मेरी आपबीती सुन लो। हां ठीक है, यहीं पर। यहांपर मेरी कमजोर आवाज भी ठीक तरह तुम्हारे कानोंमें पड़ सकेगी।

"हां, तो मैं तुम्हें बता रहा था कि आजसे पूरे आठ बरस पहले बाटाके कारखानेमें मैं तैयार हुआ। कारखानेवालोंने मुझपर १५ रुपये८५ पैसेकी मोहर लगाकर सैकड़ों जोड़ोंके साथ मुझे कलकत्तेकी एक बड़ी दूकान—पकौड़ीमल प्याजीदास, स्ट्रीट फक्कड़बाजों—में भेज दिया। उस समय मेरी शक्ल बड़ी प्यारी थी। तुम्हारे जैसोंको तो, कसम खाकर कहता हूं, मैं उस समय मुंह तक नहीं लगाता था।

"ऐं... क्या टुकुर टुकुर कभी मेरी ओर, और कभी अपने टूटे हुए जूतोंकी ओर देखे जा रहे हो? यह हालत मेरी केवल पिछले सालसे ही हुई है जबसे मेरा अंतिम मालिक फत्ता चमार मुझे पैरोंसे उतारकर यहां फेंक गया है। तुम्हारे बूटोंसे तो मैं उस समय भी हजार दरजे बेहतर था।

"हां, तो फक्कड़बाजोंकी स्ट्रीटमें आए अभी थोड़े महीने ही हुए थे कि एक बिगड़े हुए रईस टोडरमल लोटूदासका पुत्र बजौरीमल टुकड़मल मुझे खरीदकर ले गया। बजौरीमल टुकड़मल नीम पागल किस्मका रईस था। उसके दिमागमें कोई खानदानी नुक्स था। वह मुझे कई बार उल्टे पैरोंमें ही पहन लिया करता था, अर्थात् दायां बूट बाएं पैरमें, और बायां दाएंमें। उसके ड्राइवर मुरलीमनोहरने उसे लाख बार समझाया कि दायां बूट दाएं पैरमें और बायां बाएं पैरमें ही होना चाहिए, पर बजौरीमलके दिमागमें यह बात बैठती ही नहीं थी। दूसरे, उसे बूटोंके फीते बांधनेकी आदत नहीं थी। आम तौरपर उसका नौकर ही उसके फीते बांधता था।

"पर हर वक्त तो बजौरीमलका नौकर उसके साथ नहीं रहता था, इसलिए आम तौरपर मेरे फीते खुले ही रहा करते थे। खुशीकी भी एक बात है कि जब तक मैं बजौरीमलके पास रहा, मुझे उसका नौकर टीटणू पालिश करनेके बाद ब्रश मार मार कर नई-नवेली दुल्हनकी तरह खूब चमका चमका कर रखता था। बजौरीमल जब सोता था, उस समय ही मैं आराम करता था। जब वह मुझे अपने पैरोंमें पहनकर चलता, तो उस समय

एक बूट की

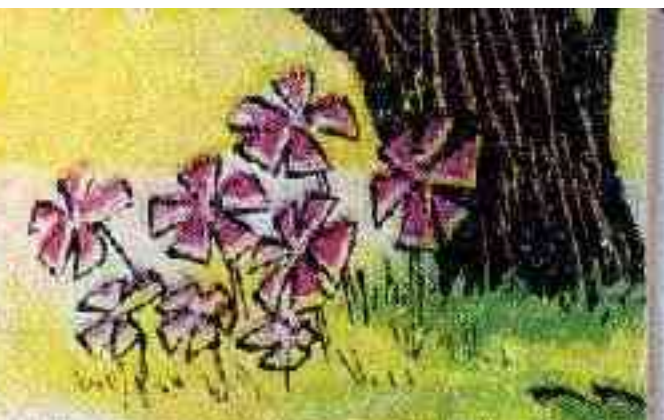

प्यारासिंह दाता

मेरे लिए यह एक मुसीबत बन जाती। बजौरीमल सारा दिन बंदरोंकी तरह उछलता रहता। काम-काज तो उसे कुछ था नहीं। कालेजमें बारहवीं कक्षामें ग्यारह बार फेल होनेके बाद उसका दिल टूट गया था, इस कारण आजकल वह केवल आवारागर्दी करता था। उसके बापका कलकत्तेमें जूटका बड़ा भारी कारखाना था, इसलिए कमाईकी बहुत चिंता नहीं थी। आम खानदानी रईसोंकी तरह भगवानने उसके सिरमें दिमाग जैसी कोई चीज नहीं रखी थी, इसलिए वह बड़ा निश्चिंत आवारागर्द और घमक्कड़ बन गया था।

"बजौरीमलके पास उस समय बूटोंके आठ-दस जोड़े थे, इसलिए मेरा नंबर जल्दी नहीं आता था, तभी तो मुझमें अभी तक पहले जैसा दमखम बाकी है।

"छह महीने मैं उस महापुरुषके पैरोंकी शोभा बना रहा। इसके बाद वह बूटके दो जोड़े और ले आए और मुझे मनीम मुंशीरामके हवाले कर दिया।

"मुंशीरामने मुझे चमकाकर घरमें ट्रंकमें संभालकर रख दिया। पूरे चार महीने उस निर्दयीने मुझे बाहरकी हवा भी न लगने दी। फिर मुंशीरामने बजौरीमलकी नौकरी छोड़ दी और वह परिवार सहित दिल्ली चला गया।

"आखिर उसने ट्रंकमेंसे मुझे तब निकाला, जब उसके पुत्र कमलनैनकी शादी थी। कमलनैनकी बाईं आंख न होने जैसी थी। मुझे कहां पता लगना था कि उस गरीबका भाग्य रूठा हुआ है। यों हुआ कि कमलनैनने जब अपने बापके हाथसे पकड़कर मुझे अपने पैरोंमें पहना, और मेरे बाएं पैरको दाईं आंख फाड़कर देखा, तो मैं रो पड़ा, 'अरे, यह तो ससुरा काना है!'

"अब क्या हो सकता था। इस काने मालिकके साथ जो एक साल बिताया, वह मैं ही जानता हूं। कमलनैनके पैर ऊंट जैसे बड़े बड़े थे। वह मुझे पैरोंमें पहनकर बहुत देर तक पहलवानोंकी तरह धींगाधींगी करता था। वह अपने पैरोंको मुझमें बुरी तरह घुसेड़ा करता था, लेकिन कई बार मुझे पैरोंसे उतारते समय मददके लिए वह अपने बाप मुंशीरामको बुला लेता था। दोनों मिलकर उस ऊंटके पैरोंसे मुझे निकालते, और साथ ही साथ मेरे पहले मालिक बजौरीमल टुकड़मलको हजारों गालियां देते।

"कई बार मैंने उसके पैरोंमें छाले डाले, उंगलियोंको जख्मी कर दिया, पर इसका परिणाम मेरे पक्षमें कोई अच्छा न निकला। अगले क्षण वह अपनी जख्मी उंगलियोंपर पट्टी बांधकर अपने ऊंट जैसे पैरोंको फिर मुझमें घुसेड़ देता।

"इस कानेसे मेरी जानको छुटकारा नहीं मिलता अगर उसकी साली मेरी सहायता न करती। यह इस प्रकार हुआ कि एक बार जब वह अपनी ससुराल गया, तो उसकी सालीने मुझे तंदूरके पीछे छिपा दिया। सालीने समझा कि कमलनैनने उसे बूट उठाते हुए देख लिया

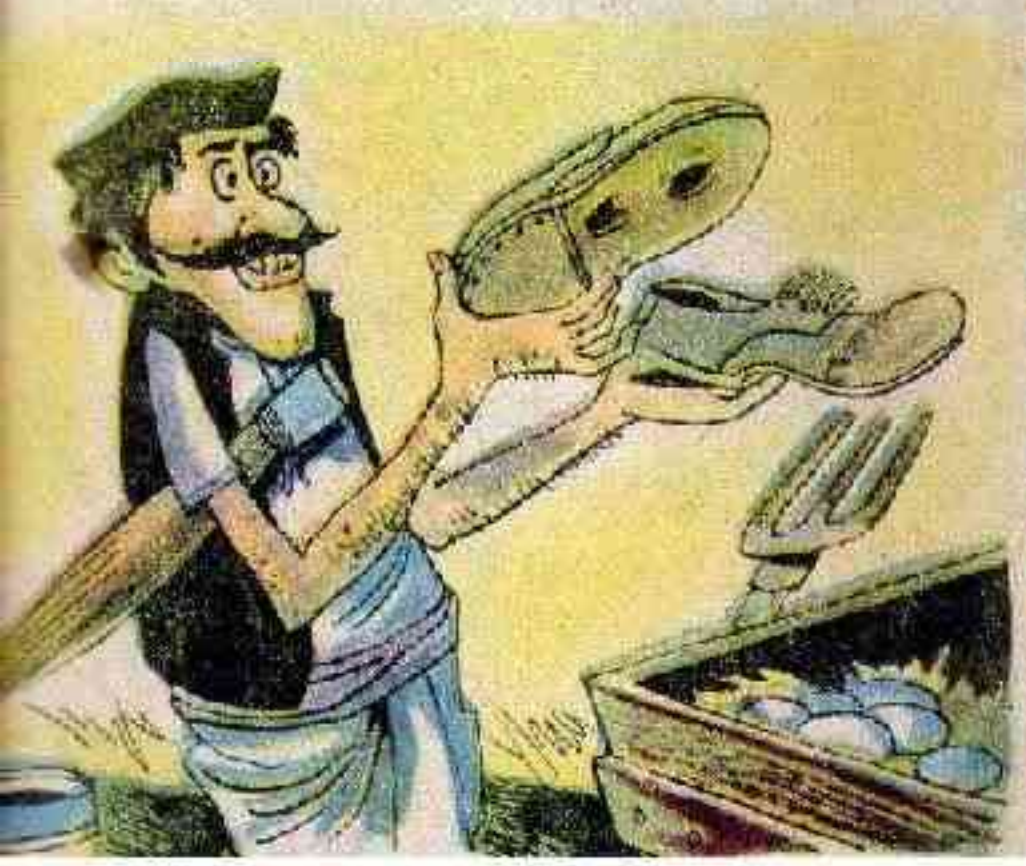

आकर्षक सौन्दर्य

अफगान क्रीम केक

श्रृंगार की सम्पूर्ण सामग्री है जिसमें आपके रूप को आकर्षक बनाने के लिए क्रीम तथा पावडर दोनों का एक में सम्मिश्रण है।

इस सुविधापूर्ण कम्पेक्ट में कम्प्रेस किया हुआ पावडर है जो प्रत्येक नारी के लिए आवश्यक है विशेष तौर पर कर्मचारी महिलाओं के लिए। यह पर्स में ले जाने के लिए सुविधाजनक है व इस्तेमाल का तरीका भी सुगम है।

अफगान स्नो

सौन्दर्य प्रसाधन

ई. एस. पाटनवाला, बम्बई-७७

होगा, पर उस बेचारीको क्या पता था कि कमलनैनके उस तरफकी आंख नहीं है। कमलनैन सो गया और उसकी साली और किसी काममें लग गई, उसे यह बात ही भूल गई कि कमलनैनके बूट उसने छिपाए हैं।

"शामको जब कमलनैन जागा, तो उसके बूट गायब थे। उसने अपनी दाईं आंख अच्छी तरह मलकर टकटकी लगाकर देखा, पर बूट नजर नहीं आए।

"उसने अपनी सासको बताया। सासने इधर-उधर चारों ओर देखा, घरमें सभीसे पूछा, पर किसीने हामी न भरी। सालीने तंदूरके पीछे देखा। जब उसे वहां बूट नजर न आए, तो वह चुप हो गई। उसने किसीको नहीं बताया कि उसने कमलनैनके बूट छिपाए थे।

"उसी दोपहरको जब मेहतरानी संडास साफ करनेके लिए आई, तो उसने तंदूरके पीछे नए बूट देखे। उसने मुझे अपने कूड़ेकी टोकरीमें छिपा लिया और घर ले गई।

"जमादार लच्छूने जब अपनी बीवीके पास बूटोंका जोड़ा देखा, तो वह नाच उठा। सारी उम्र उसे ऐसे बूट पहननेका अवसर नहीं मिला था। पर लच्छोने उससे कहा, 'लच्छू प्यारे, इन्हें अभी पहनना नहीं, कहीं करमा इन्हें देखकर थानेमें रिपोर्ट न कर दे। शायद ये बूट उसके जमाई कमलनैन कानेके होंगे।'

"लच्छूने लच्छोका कहा मानकर पूरे पांच साल तक बूट न पहने, और आखिर उसे भगवानकी ओरसे आगे चलनेके लिए संदेशा आ गया। उसकी मौतके बाद उसके पुत्र जमादार खजूरेने मुझे झाड़-पोंछकर पैरोंमें पहन लिया। मुझे पहनकर खजूरेके पैर धरतीपर ही नहीं टिकते थे। वह अपने आपको अपनी सारी जातिका नेता समझने लगा। उस समय तक मेरे तल्ले कुछ घिस गए थे, सो खजूरेने अपने दोस्त चमूणे मोचीसे मुफ्त तल्ले लगवाकर ऊपर एक छंटाक मोटी मोटी कीलें लगवा लीं। अब वह खूब मटक मटककर चलता था और दूरसे ही उसके बूटोंकी आवाज पहचानी जाती थी।

"बरस भरके बाद मेरी सारी चमक-दमक जाती रही। खजूरेने न कभी मेरी पालिश की, और न ही झाड़ा-पोंछा। उसके लिए बूट केवल पैरोंमें फंसानेके लिए ही होते हैं, और इनकी सफाई या पालिश कराना बड़े बड़े रईसोंका ही काम होता है।

"एक दिन खजूरेके घरमें चोरी हो गई। चोरोंने उसके मुंहमें कपड़ा ठूंसकर घरमें जो कुछ मिला, लेकर चलते बने। उस लूट-खसोटमें मैं भी था। अब मेरी हालत काफी खस्ता हो चुकी थी। फीतोंके बजाय रस्सियां बंधी हुई थीं और पंजों और एड़ियोंमें असंख्य सूराख थे।

"मेरा नया मालिक फत्ता चमार था। उसने दो महीने तक मुझे खूब दबाकर पहना। पिछले साल जब वह इस राहसे गुजर रहा था, तो उसके दोनों पैरोंमें तीन-चार सुइयां जैसे कांटे चुभ गए थे। उसने मुझे पैरोंसे उतारकर इस स्थानपर फेंक दिया और स्वयं कांटे निकालकर पैदल ही आगे चलता बना।

"बस उसके बाद मैं यहींपर ही पड़ा हुआ अपनी किस्मतको रो रहा हूं। हां, अब तुम थक गए होगे और तुम्हारे टूटे हुए जूते भी मेरे निकट बहुत देर तक बैठनेके कारण बागी हो रहे होंगे। सो अब तुम जाओ, दोस्त, अपने घर जाओ। अच्छा अलविदा!" (अनुवाद : सुरजीत)

'पराग' के लिए लिखने वालों से

- यदि आप अपनी रचना खोना चाहें, तो उसकी प्रतिलिपि कभी न रखिए।
- यदि आप अपनी रचना वापस मंगाना न चाहें, तो उसके साथ वापस लौटानेके लिए पर्याप्त डाक टिकट न भेजें। हम आपका मतलब समझ जाएंगे।
- यदि आप चाहते हैं कि संपादक आपकी रचना न पढ़े, तो उसे गहरी स्याहीके रिबनसे टाइप कराने या कागजकी एक ओर स्पष्ट अक्षरोंमें लिखनेका कष्ट मोल न लें।

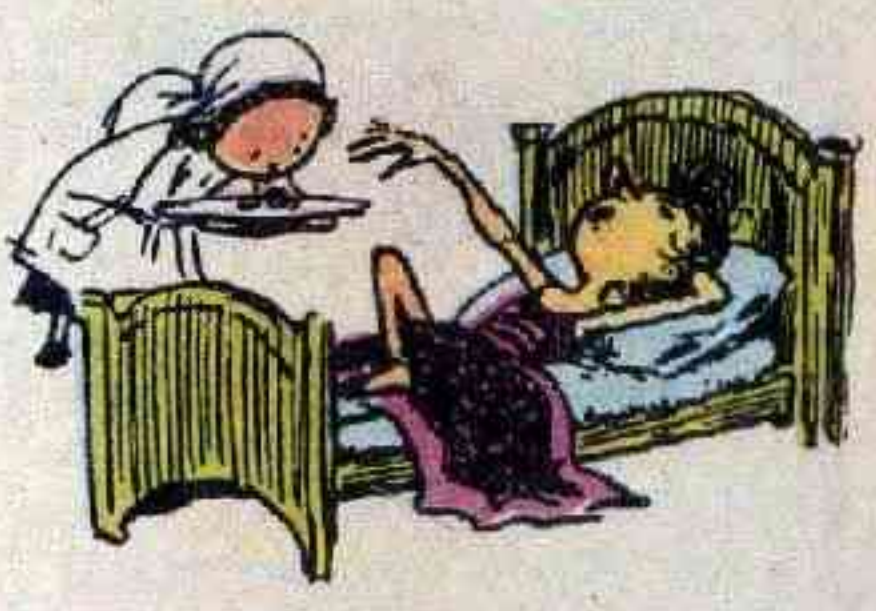

जब डाक्टर गोलीचंद और लखाराम अस्पताल-से भाग खड़े हुए, तो अस्पतालमें सिर्फ एक ही मरीज रह गया—निशानाचंद। इसलिए ससुरालमें जमाईकी तरह उसका सेवा-सत्कार होने लगा। उसके दिमाग सातवें आसमानपर पहुंच गए। अस्पतालका इकलौता मरीज होनेके कारण डाक्टर सहित सारी नर्सें उसके लिए आकाशके तारे तक तोड़ लानेको तत्पर हो गईं। नतीजा यह हुआ जब हलुआ-परांठा, खीर-पूरी, चाट-पकौड़ी खा खाकर मन भर गया, तो हजरत लाड़-प्यारके नखरोंमें मुड़ने लगे। कभी कहते कि हलुवेमें नमक डालकर लाओ, कभी पकौड़ीकी खीर बनानेको कहते, कभी पूरीमें मीठा डलवाते, कभी उसमें मीठा [illegible]दा होनेकी शिकायत करते और दूसरी पूरियां बनाकर लानेको कहते।

बेचारी नर्सें उसकी हर एक झखको पूरा करनेका भरसक प्रयत्न करतीं। उन्होंने कभी अपनी सारी जिंदगीमें ऐसा मरीज नहीं देखा था। उसके ऊपर हर दिन सुबहको वह एक नर्सको बुलाता और उससे अपने कुत्ते बिन्दुको खोजनेको कहता। जब हरा गांवमें सब तरफ खोज खोजकर वह थककर चूर शामको वापस आती, तो वह उसे धमकाता कि उसने खोज ठीकसे नहीं की है और उसे दुबारा खोजने-को भेजता। सब लोग मनाते कि वह जल्दीसे अच्छा होकर अस्पताल से बिदा ले।

दिनमें तीन बार वह किसी नर्सको अपने दोस्तोंकी खबर लेने-के लिए भेजता। दूसरी नर्सको पकड़कर वह परियोंकी कहानियां सुनानेको कहता। अगर उसकी कहानियां अच्छी न होतीं, तो वह झटसे उसे हटाकर उसकी जगह किसी अन्य नर्सको बुलाता, जो ज्यादा अच्छी कहानियां सुना सकती थी। डाक्टर मधुपी जानती थी कि वह लाड़-प्यारसे कितना बिगड़ गया है, लेकिन उसका घुटना जो टूटा हुआ था। ऐसेमें कैसे उसे अस्पतालसे छुट्टी दी जा सकती थी?

एक दिन उसका घुटना कुछ ठीक भी हुआ। पर उसी दिन उसने जो धमाचौकड़ी मचाई और कूदकर सीढ़ियोंपर जा पहुंचा, तो घुटना फिर टूट गया। वह हाय रे, मरा रे, चिल्लाता रहा और डाक्टर मधुपी-को सारी रात जागकर उसके घुटनेकी सूजनपर सेंक देनी पड़ी।

थोड़े दिनोंमें वह लड़कियोंके सहारे चलने-फिरने लायक हुआ। डाक्टर उसे एक नर्सके साथ अस्पतालके अहातेमें घूमनेके लिए भेज देती। इससे उसका गुस्सा थोड़ा कम हुआ। पर, जब शामको नर्स उसे वापस भीतर चलनेको कहती, तो वह अपनी बैसाखीसे उसे मारनेको उतारू हो जाता। तब बहुत सी नर्सोंको मिलकर उसे जबरदस्ती उठा-कर भीतर ले जाना पड़ता।

आखिरकार वह दिन भी आया, जिस दिन डाक्टरने घोषित कर दिया कि वह बिलकुल अच्छा हो गया है और अब अस्पताल

परियोंके देशमें बसे एक नगरमें कुछ बौने रहा करते थे। आदमीकी तरह वे भी दो जातियोंके थे—बौने लड़के और बौनी लड़कियां। बौने लड़कोंमेंसे एक थे बुद्धूमल।

पिछले अंकोंमें तुमने पढ़ा था कि बुद्धूमल अपने साथियोंके साथ एक गुब्बारेमें बैठकर आसमानकी सैर कर रहे थे कि तभी गुब्बारा अचानक जमीनसे आ टकराया। नतीजा यह हुआ कि बुद्धूमल छिटककर कहीं और गिरे और बाकी साथी कहीं और। लेकिन सबकी जान बच गई। जान बचाने वाली थीं बौनी लड़कियां। बुद्धूमल बहुत जल्द उनमें हीरो बन गए और जब उन्हें पता चला कि उनके बाकी साथी भी पासके अस्पतालमें पड़े हैं, तो वह तुरंत कुछ बौनी लड़कियोंके साथ वहां जा पहुंचे और किसी तरह डाक्टरनीको राजी किया कि वह उन्हें मंजूरवार अस्पतालसे छुट्टी दे दे। सबसे पहले छुट्टी मिली तानप्रकाश बांसुरीवादक और कुंजीराम चित्रकारको, इसके बाद छोड़े गए मेठूमल और मोठूमल टिनसाज, और फिर बारी आई शायरसिंह और झटपटरामके छूटने की। और डाक्टर गोलीचंद और श्री क्खाराम बारी आनेसे पहले ही भाग निकले। अब अस्पतालमें रह गए सिर्फ अकेले निशानाचंद।

निशानाचंदके अलावा अस्पतालसे निकले हुए सभी बौनोंका हाल तुम पढ़ चुके हो। अब निशानाचंद महाशयकी कारगुजारियों और उनसे आगेका हाल पढ़ो।

धारावाही उपन्यास

बुद्धूमल के कारनामे

मूल लेखक: निकोलाई नोसोव

www.kissekahani.com

छोड़कर जा सकता हूं। यह खबर सुनकर सबकी बांछें खिल गईं।

अगले दिन सुबह ही सुबह निशानाचंदका अन्य बौने लड़कोंसे मिलन हुआ। निशानाचंदने प्रसन्न होकर कहा, "अंत में हम सब फिरसे मिल गए—मेरा मतलब है सुबोध और बिन्दुको छोड़ कर।"

"ठीक है, ठीक है," उन सबने निशानाचंदको दिलासा दिया। "हो सकता है सुबोध और बिन्दु भी जल्दी ही मिल जाएं।"

"अपने आपसे वे नहीं मिलेंगे," निशानाचंदने कहा। "हमें उन दोनोंकी खोज करनी होगी।"

"हां," बुद्धमलने कहा। "उस मूर्ख सुबोधको तो खोजना ही पड़ेगा। नहीं तो न जाने उसका क्या हाल हो।"

"तुम उसे मूर्ख क्यों कहते हो?" डाक्टर गोलीचंदने पूछा।

"क्योंकि वह है—और साथमें डरपोक भी है," बुद्धूमलने कहा।

"नहीं, वह मूर्ख नहीं है," क्खारामने कहना आरंभ किया, लेकिन बुद्धूमलने उसे पहले ही टोक दिया:

"जबानपर लगाम दो जी," उसने कहा, "तुम यहांके सरदार हो या मैं? या तुम्हारे जीमें फिरसे अस्पताल

खाद्यान्न में आत्मनिर्भरता के लिए चतुर्मुखी अभियान.... उसे सफल बनाइए

महाराष्ट्र चुनौति का सामना करता है

- अधिक उत्पादनक्षम मिश्रित जातियों के बीजों का उपयोग
- खाद्यान्न फसलों के अंतर्गत के क्षेत्र के लिए सिंचाई जल का मुफ्त उपयोग और गन्ने के आधीन के क्षेत्र में कमी
- गेहूं और धान की दो फसलों का उत्पादन
- संपूर्ण मौसमभर में किसानों को उचित मूल्यों का आश्वासन।

प्रसिद्धी संचालक, महाराष्ट्र शासन, बंबई

जानेकी है?"

अस्पतालका नाम सुनते ही रूखारामको सांप सूंघ गया।

हेमापुष्पाने कहा, "रविवारके दिन हम सब सामूहिक नृत्यका कार्यक्रम रखेंगे। इसके बाद तुम सब लोग सुबोध और बिन्दुकी तलाश में निकल जाना। जब तुम्हें सुबोध मिल जाएगा, तो एक कार्यक्रम सामूहिक नृत्यका और रखा जाएगा।"

"वाह, वाह! हुर्रा!" हरेक चिल्ला उठा।

फल तोड़नेका काम खत्म हो गया था। हर मकानका तहखाना उन फलोंसे भर गया था और अब उनमें एक भी और फल समाने वाला नहीं था। लेकिन पेड़ोंपर अब भी बहुतसे फल बच गए थे। लड़कियोंने सोचा कि लड़कोंको उन फलोंकी भेंट दी जाए।

अब सामूहिक नृत्यकी तैयारियां आरंभ हो गईं। इसके लिए एक जमीनका टुकड़ा खूब खोद-खादकर पाटा गया और चिकना बनाया गया। झटपटराम, मौनूमल तथा चंचलने आरकेस्ट्रा-के लिए दुहरा मंच बनानेका काम अपने अपने सिर लिया। तानप्रकाशने इस बीच लड़कियोंमें-से दस सारंगी, वीणा आदि बजाने वालियों-को चुन लिया था और वे सब मिलकर दिन-रात एक कर रहे थे।

सबसे ज्यादा ताज्जुब चंचलको देखकर हो रहा था। वह इन सब कामोंमें बड़ी उमंगके साथ आगे बढ़कर हिस्सा ले रहा था। वह तो मानो एकदम बदल ही गया था। हालांकि वह काम करनेमें सबसे ज्यादा तेज था, लेकिन उसकी बहुतसी बुरी आदतें उसका पीछा नहीं छोड़ती थीं। सबके सामने जोरोंसे नाक साफ करना और कुरतेकी बांहोंसे नाक पोंछ लेना, बात करते समय गंदे शब्द बोलना आदि कुछ बातें ऐसी थीं, जिन्हें लड़कियां बिल्कुल पसंद नहीं करती थीं। लेकिन वे उसके काम करनेके उत्साहसे बहुत प्रभावित थीं। उन्होंने निश्चय किया कि जब वह अच्छे काम करेगा, तो उसकी तारीफ करेंगी। इससे वह और अच्छे काम करेगा। उन्होंने उसे सामूहिक नृत्यमें सम्मिलित होनेका निमंत्रण भी दिया।

इससे चंचलको इतनी प्रसन्नता हुई कि उसने अच्छा लड़का बननेका निश्चय कर लिया।

(२६)

जब चंचल भी एक बार जाकर गायब ही हो गया, तो पतंगपुरके निवासियोंमेंसे और किसीकी हिम्मत नहीं हुई कि जाकर खरखरे भाई, नलकू भाई और चंचलको खोजकर लावें। अफवाह फैल गई थी कि सौ सिरोंवाला भयानक दैत्य सारी बौनी लड़कियोंको चट कर गया है और जल्दी ही लड़कोंका कलेवा करनेके लिए पतंगपुरमें पदार्पण करने वाला है।

समय गुजरता चला गया। राक्षस तो कहीं दूर भी दिखाई नहीं दिया, हां, एक अजनबी जरूर पतंगपुरमें आया। उसका कहना था कि वह अपने अनेक साथियों सहित एक गुब्बारेमें उड़ा था और जब गुब्बारा गिरने वाला था, तो एक हवाई छतरीके सहारे उससे कूद गया था। वह एक घने जंगलमें जाकर उतरा था और तभीसे अपने साथियोंकी खोजमें भटकता फिर रहा था।

अब इसका पता लगाना मुश्किल नहीं कि वह कौन था। वह सुबोध था।

पतंगपुरके निवासियोंने उसे बता दिया कि कुछ दिन पहले हरा गांवमें कुछ बौने लड़के आए थे, जिनका गुब्बारा फट गया था। उनमें से दो तो पतंगपुर भी आए थे एक टांकी लेने और खरखरे भाई उन्हें अपनी कारमें छोड़नेके लिए हरा गांव ले गए थे। सुबोधने उन लोगोंसे उन दोनोंका हुलिया पूछा और जब उसे पता चला कि वे दोनों चमड़ेकी जाकट पहने हुए थे, तो उसे यह अनुमान लगाते देर न लगी कि वे मोटूमल और मेठूमल ही थे। श्री रोशनाईराम 'रोशन' ने इसका समर्थन किया। सुबोध इससे बहुत खुश हुआ और तुरंत हरा गांव जानेके लिए तैयार हो गया। लेकिन जब उसने उन बौने लड़कोंसे हरा गांवका रास्ता दिखानेके लिए कहा, तो उनकी जान निकलती मालूम दी। उन्होंने कहा कि हरा गांव तक पहुंच पाना असंभव है, क्योंकि रास्तेमें सौ सिरों-वाला भयानक राक्षस रहता है, जिसने सभी बौनी लड़कियोंका कलेवा कर लिया है और उसे इतनी भी तमीज नहीं है कि कमसे कम लड़कों को तो छोड़ दे।

"फूहा!" सुबोधने कहा, "सौ सिरोंवाला राक्षस भी कहीं होता होगा!"

(शेष पृष्ठ ५५ पर)

www.kissekahani.com

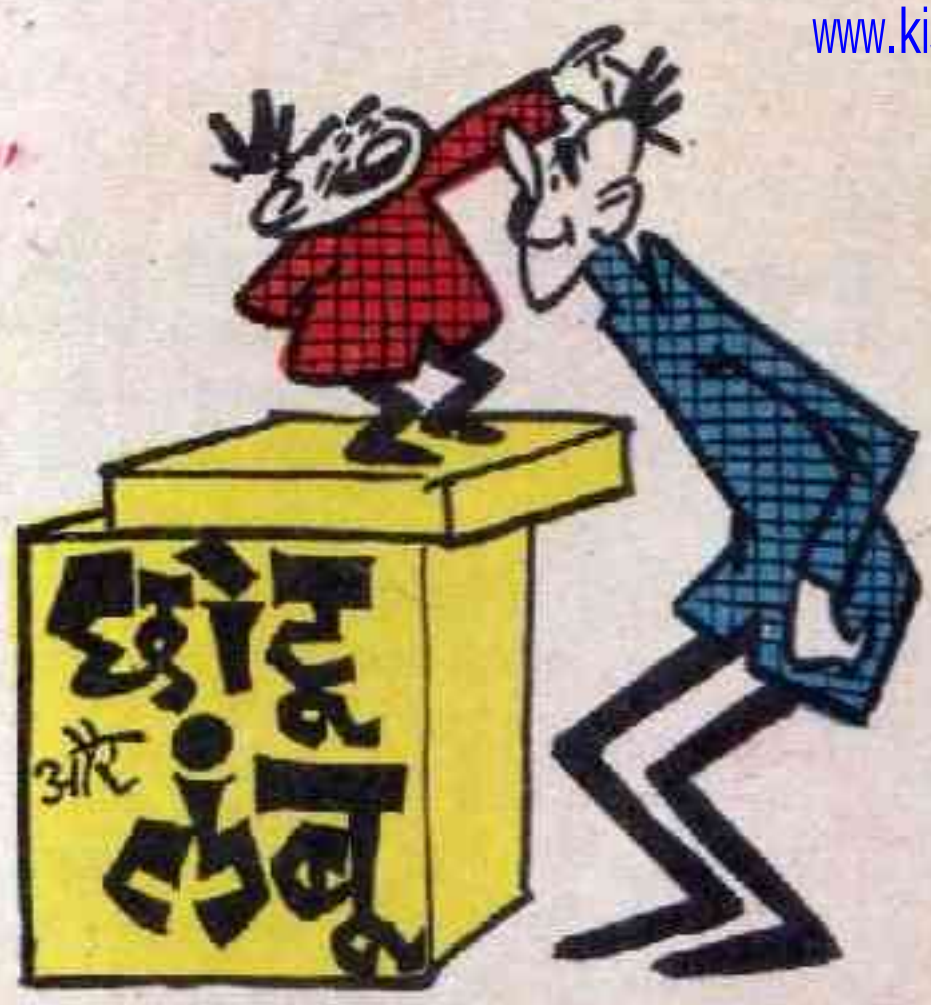

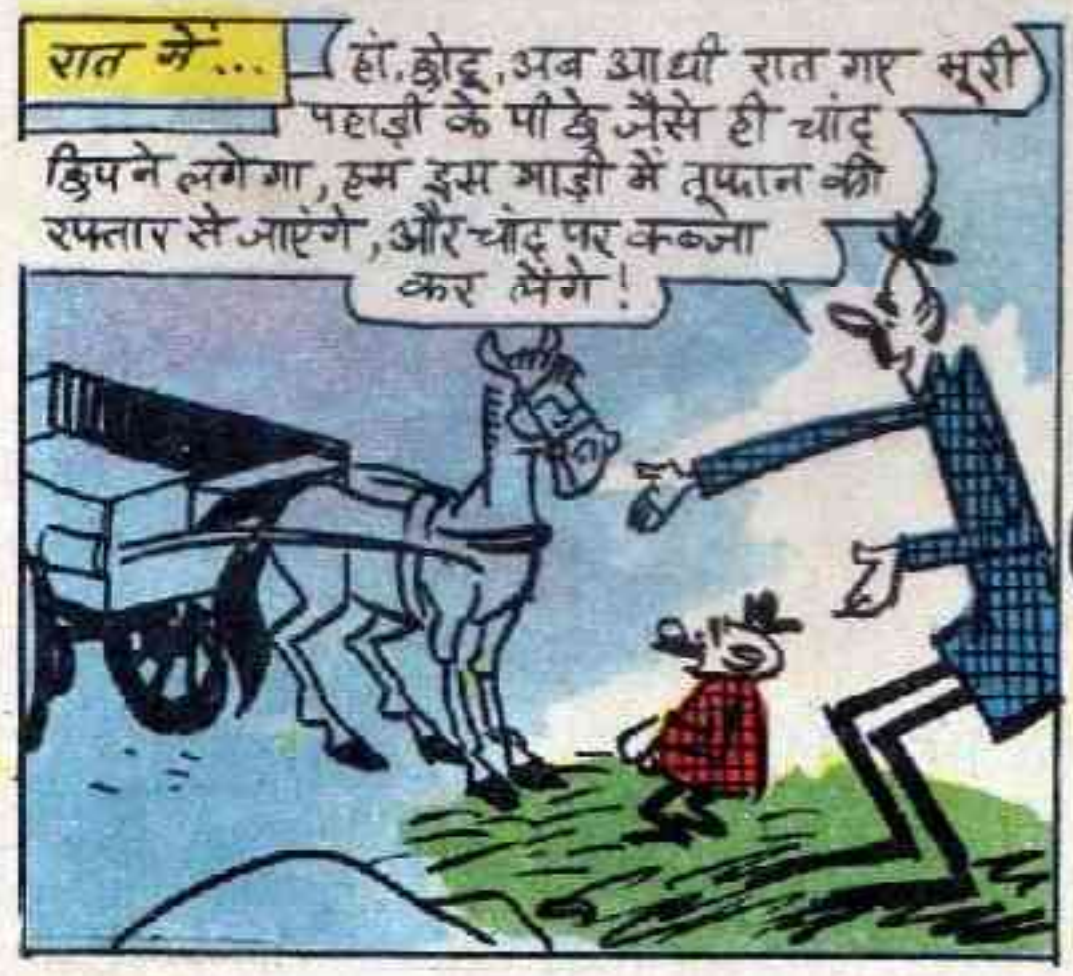

ओहो, मैंने तुम्हारी सारी बातें सुन ली हैं। सचमुच तुमने चंद्रमा पर जाने का जो तरीका अपनाया है वह वैज्ञानिक तरीकों से कहीं बेहतर है, पर मुझे भी तो अपने साथ ले लो। आखिर तुम्हारी कामयाबी का कोई गवाह भी तो होना चाहिए!
?!
अजनबी को गवाह चुन लिया गया और ढेर सारे खाने की चीजें साथ ले कर गाड़ी दूर, बहुत दूर पहाड़ों की ओर उड़ चली!
सचमुच, तुम्हारी गाड़ी तो तूफान की तरह चलती है!
क्यों न हो, चालीस रुपये तो सिर्फ गाड़ी का भाड़ा दिया है!
उन्हें चलते चलते सुबह होने को आई, लेकिन रास्ता तै न हो सका। तीनों मुसाफिर तो खाते-पीते चल रहे थे, लेकिन घोड़ा थकान और भूख से ऐसा बेहाल हुआ कि गाड़ी उलट दी। लंबू के चाबुक से तो वह और भी तंग आ गया था!
अजनबी चालाक था, संभल गया, लेकिन
अरे, ये तारे कैसे नज़र आ रहे हैं?!
हम चांद पर पहुंच चुके हैं, यहां हर तरफ तारे ही तारे हैं
फिर उन्होंने देखा, घोड़ा भाग चुका था। अब लंबू-छोटू खुद ही अजनबी को गाड़ी में बिठा कर "संसार" की तरफ भागे!
कमाल है! कितनी आसानी से मूरखों ने मुफ्त में इतनी दूर की सैर भी कराई और खाना भी खिलाया! हुं! कहां चांद, कहां ये!

बच्चो, तुम्हें याद होगा कि कभी अपनी खिड़की-में बैठकर आशालता बहन तुम्हें बड़ी सुंदर सुंदर झांकियां दिखाया करती थीं। कुछ कारणोंसे वह खिड़की कुछ समयके लिए बंद हो गई थी। अब अपने बाल पाठकों-के आग्रहपर पिछले अंकसे आशाजी ने फिरसे नई नई झांकियां दिखाना शुरू कर दी हैं। लो, अब देखो एक और नई झांकी। —संपादक

(१३)

बड़ी देरसे मैं देख रही थी कि नत्थू चबूतरेसे नीचे पांव लटकाए, हथेलीपर ठुड्डी टिकाए चुपचाप बैठा हुआ था। उसके सिरपर बड़ी-सी पट्टी बंधी हुई थी और दूसरे हाथमें वह एक बड़ा-सा पत्थर तौल रहा था। मुझे उसकी शकल

www.kissekahani.com

देखकर तरस आ रहा था और मैं सोच रही थी कि किसी तरह बेचारेकी चोटका पता लगाऊं कि तभी गोपाल, परमू और नारायण आ धमके।

"अरे इतनी चोट कैसे आ गई, नत्थू?"

"क्या किसी बैलसे लड़ गए?"

"या पांव फिसल गया?"

"या सीढ़ियोंसे लुढ़क गए?"

आते ही उन्होंने सवालोंपर सवाल कर डाले।

"कुछ बोलते क्यों नहीं, नत्थू?"

"कहीं निर्मला चाचीने पिटाई तो नहीं कर डाली?"

इस बातपर नत्थू जरा तुनका। बोला, "चुप रहो।"

"जरूर पिटे हो!" गोपाल बोला।

"नहीं," नत्थूने कहा।

"फिर बताते क्यों नहीं?" परमूने कहा।

"अब क्या बताऊं . . ." नत्थू बोला।

"यही कि इतनी बड़ी चोट कैसे लग गई?"

"यही तो बता रहा हूं," नत्थू बोला। "आज सुबह मैं मामाजीके लड़के सुरेशका फोटो टांगनेके लिए दीवारमें इस पत्थरसे एक कील ठोक रहा था . . ."

"अरे रे, इतना बड़ा पत्थर! जरूर छूटकर सिरपर गिर गया होगा, नहीं?" गोपालने पूछा।

"नहीं," नत्थूने कहा। "मैंने खुद सिरपर मार लिया।"

"क्यों?"

"पागल हो?"

"दिमाग तो खराब नहीं हो गया?"

"कभी हो गया था," नत्थू बोला। "पिछले सालकी बात है, मैं मामाजीके घर गया था। एक

आशालता

दिन सुरेशसे मेरी शर्त हो गई कि हम एक दूसरेसे पहेली पूछेंगे; जो हारेगा, आठ आने देगा। पहला नंबर सुरेशका था। उसने कहा—'मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूं। तुम हां, हां, कहते रहोगे। अगर तुमने नहीं कहा, तो तुम हार जाओगे। मंजूर?'

"मैंने कह दिया—मंजूर।

"उसने कहानी शुरू की: 'एक लड़का था, बिल्कुल गधा।'

'हां,' मैंने कहा।

'उसका नाम था नत्थू।'

'हां,' मुझे कहना पड़ा।

'मान लो, वह लड़के तुम्हीं हो।'

'हां।

'एक दिन मेरी-तुम्हारी पांच पांच रुपयेकी शर्त हुई।'

'हां।'

'और चूंकि तुम गधे हो, इसलिए वह शर्त हार गए।'

'हां।'

'पर, तुम्हारे पास पैसे नहीं थे।'

'हां।'

'तुमने कह दिया कि तुम मेरे पैसे बादमें दे दोगे; अभी तुम्हें माफ कर दिया जाए।'

'हां।'

'मैंने तुमपर दया करके तुम्हें छोड़ दिया था।'

'हां।'

'तो अब तुम मेरे पांच रुपये दे दो,' आखिर में सुरेश बोला।

"अब मैं क्या करता? अगर हां कहता तो पाच रुपये हारता, इसलिए ना कहकर आठ ही आने हारना ठीक समझा।"

"इसमें आज पत्थर मार लेनेकी क्या बात थी भला?" नारायणने पूछा।

"बात क्यों नहीं थी? मैं गधा तो था ही। जब मेरा नंबर आया था, तो मैं भी तो उसे यही कहानी सुना सकता था। कील ठोकते वक्त यह बेवकूफी याद आई और मैंने पत्थर सिरमें मार लिया।"

"ठीक कहते हो, नत्थू, तुम वाकई गधे हो," नारायणने गंभीरतासे कहा।

"क्यों जलेपर नमक छिड़कते हो?" परमूने कहा।

"बल्कि उल्लू भी हो!" नारायणने जोड़ा।

"क्यों?" नत्थू भौंचक-सा बोला।

"क्यों क्या? अरे, इतना तो सोचते कि अगर तुम भी वही किस्सा पूछने लगते, तो सुरेश 'हां' कहना मंजूर ही क्यों करता?"

एक पल नत्थू नारायणको देखता रहा, फिर बोला, "बेकार सिरमें पत्थर मार लिया! मैं उल्लू हूं, बिल्कुल उल्लू . ." और नत्थूने मारे गुस्सेके अपने हाथका पत्थर फिर अपने सिरपर दे मारा! ●

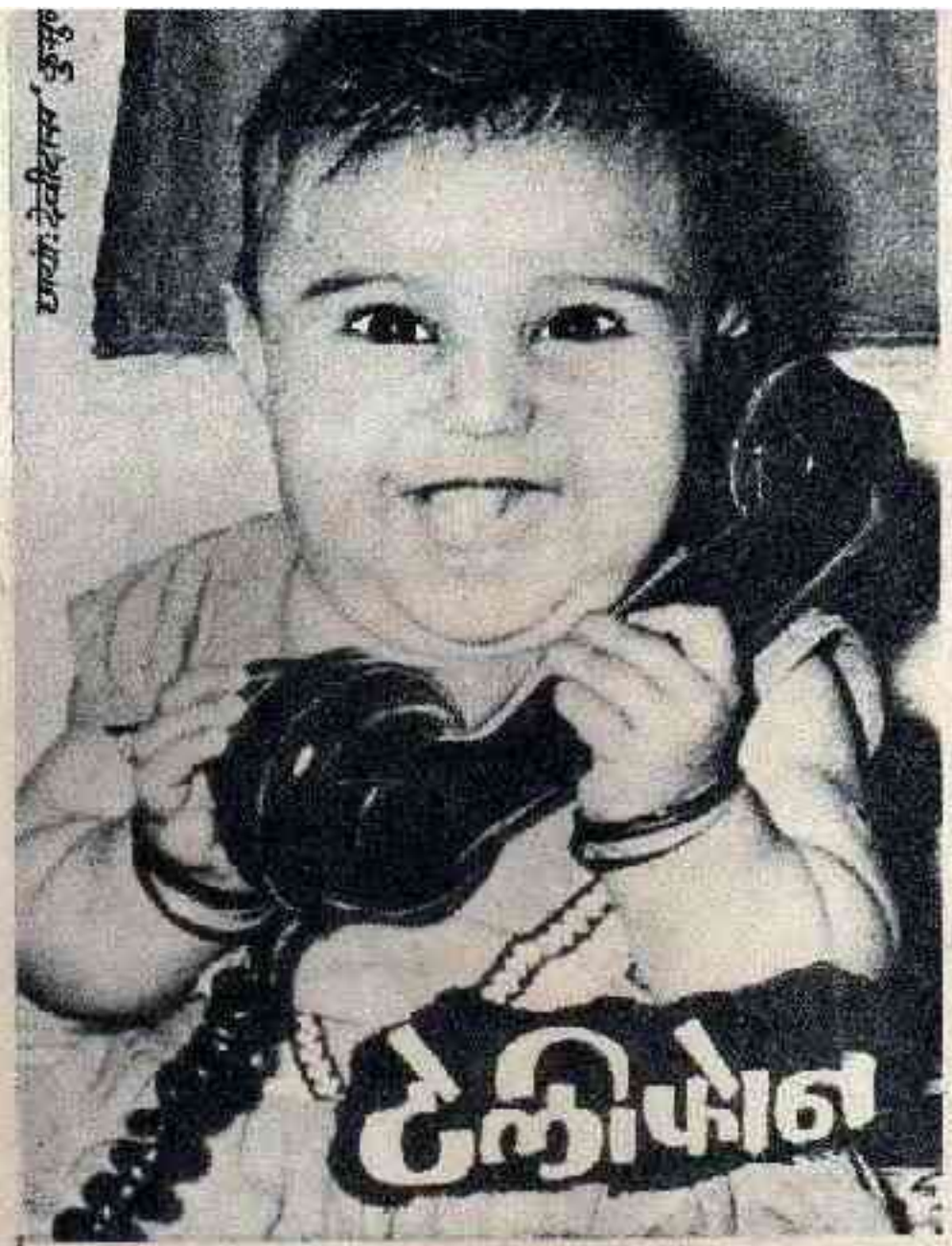

हैलो कौन... हैलो कौन... हैलो कौन...?
यह है रोठासल मीठामलजी का टेलीफोन!

जी मैं पप्पू बोल रहा हूं, कहिए है क्या काम?
काम बाद में बतलाना, पहले बतला दो नाम।
नाम बताने में शरमाते, तो इतना कह डालो,
आप कहां से बोल रहे हैं? बोर कर दिया राम!
अरे, आप तो गर्म हो गए, गुस्से की क्या बात?
नापसंद है मुझे आपने अपनाई जो टोन,
हैलो कौन... हैलो कौन... हैलो कौन...?

बड़ा अनोखा नाम आपका—मीरामक्खी जानी!
क्षमा कीजिए आप नहीं मेरी जानी-पहचानी।
फोन किया होता मच्छर को तो मिल जाती जोड़ी,
मगर आपने मुझे तंग करने की मनमें ठानी।
अरे आप तो तनक बोलकर हो जाती हैं मौन,
हैलो कौन ... हैलो कौन... हैलो कौन... ?

अच्छा है यह बात—आपने समझी है दूकान,
जिस पर मिलता खाने-पीनेका सारा सामान।
नंबर गलत मिल गया, यह है लालाजी की कोठी,
इसी फोन के कारण अपनी आफत में है जान!
क्षमा कीजिए यहां न बिकता हल्दी, मिर्चा, नौन!
हैलो कौन... हैलो कौन... हैलो कौन...?

—गंगासहाय प्रेमी

बंगला कहानी

बेचारा ननीगोपाल

www.kissekahani.com

'प्रसिद्ध हो जाना बहुत बुरी बात है,' बालकलाकार अचिन-कुमारने गहरी सांस लेते हुए सोचा। सोचते सोचते उसकी हालत रोनी-सी हो गई। वह सोचने लगा—'प्रसिद्ध हो जानेका मतलब ही यह है कि अपने मनकी सारी इच्छाओं और खुशियोंको खत्म कर देना। यह सब कुछ मिलनेसे पहले मैं कितनी ही तरहकी बातें सोचा करता था। हे भगवान, उस दिन शामको पांच बजे फूफीने मुझे पतला गुड़ लाने बाजार क्यों भेज दिया था? अगर फूफी उस दिन मोदीकी दूकानपर नहीं भेजती, तो आज मेरा यह हाल नहीं होता।'

फूफी है ही ऐसी। जब बाजार भेजनेके लिए किसीके पीछे पड़ जाती है, तो फिर भेजकर ही मानती है। ननीगोपालको भी उस दिन जाना पड़ा था। ननी-गोपालने पीछा छुड़ानेकी कोशिश तो बहुत की क्योंकि मैदानमें खेलने जानेका वक्त भी हो गया था, लेकिन उसकी कुछ न चली।

उस दिनकी घटना वह आज भी नहीं भूल पाया है। आजका मशहूर बाल अभिनेता अचिनकुमारका ही पहले-का नाम ननीगोपाल है। इसीकी वजहसे अब उसके पिता हरिगोपालके पास ढेर सारे पैसे आते रहते हैं। सारे पैसे हरिगोपालके ही हाथमें आते हैं, क्योंकि ननीगोपाल तो अभी बच्चा है ना।

हां, तो उस दिनकी घटना सुनो:

खेलनेके लिए ननीगोपाल बाहर जाने वाला था। फूफीने बकना-झकना शुरू कर दिया। फूफीके जोर देनेपर उसे गुड़ लाने जाना पड़ा। गुड़ खरीदकर वह वापस घर आ रहा था। कलईकी कटोरीमें करीब एक पाव पतला गुड़ था। आंखोंमें गुस्सा था—उसे खेलने क्यों नहीं जाने दिया, बच्चा समझकर हर कोई रौब दिखाता है! इसी समय वह घटना हो गई। अगर उस दिन वह घटना नहीं होती, तो बेचारे ननीगोपालको इतना प्रसिद्ध हो जानेका दुःख नहीं उठाना पड़ता।

ननीगोपाल घर जा रहा था कि एकदम उसके पास आकर एक गाड़ी, जोरका ब्रेक लगाते हुए रुकी—बहुत महंगी, बहुत बड़ी गाड़ी।

ननीगोपालने एक तरफ हटकर निकल जानेकी कोशिश की, लेकिन उसे हटने कौन देता। ननीगोपालके लिए ही तो खड़ी की गई थी गाड़ी। गाड़ीके मालिकको उसने बिल्कुल नहीं पहचाना। पहचानता भी कैसे? पहली बार ही देखा था।

गाड़ीके मालिकने जब ननीगोपालसे पूछा—"बेटा,

तुम्हारा घर कहां है?" तो परेशान होते हुए उसने जवाब दिया था— "उधरकी तरफ।"

"तुम्हारा नाम क्या है?" मोटरमें बैठे उस भले आदमीने बड़े प्यारसे पूछा।

तब ननीगोपालके मुंहमें मानो दही जम गया। कुछ जवाब नहीं दे सका। पहला कारण तो यह था कि उसे अपना वह नाम 'ननीगोपाल' बिल्कुल पसंद नहीं था। उससे जब कोई नया आदमी नाम पूछता, तो वह चिढ़ जाता था। दूसरा कारण यह कि मोटरवाला यह आदमी जबर्दस्ती उसके गले पड़ रहा था। कुछ देर चुप रहनेके बाद लापरवाहीसे उसने जवाब दिया, "ननीगोपाल मजुमदार।"

"नाम बदलना पड़ेगा," उन्होंने कहा।

ननीने भौंहें सिकोड़ते हुए कहा, "क्या?"

"मैं कह रहा हूं कि क्या तुम सिनेमामें काम करोगे?"

"सिनेमा!"

फटी हुई कमीज और हाफ पैंट पहने हुए हाथमें गुड़की कटोरी लिये ननीगोपाल हक्काबक्का खड़ा था। उससे पूछा जा रहा था—सिनेमामें काम करोगे? ननीको पता नहीं चला कि उसके हाथमें रखी कटोरी टेढ़ी हो गई थी। पतला गुड़ उसके पेट, पांव और कपड़ोंपर टपक रहा था।

गुड़ टपकता ही रहा, क्योंकि ननीगोपाल तो उस वक्त अपने होश गंवा बैठा था।

मोटरमें बैठे उन सज्जनने मीठी मुस्कानके साथ कहा, "बिल्कुल तुम्हारे जैसे एक लड़केकी तलाशमें था मैं। तुम्हारे पिता हैं?"

ननीगोपालने हां भरनेके लिए बहुत मुश्किलसे अपना सिर हिलाया।

मोटर मालिकने कहा, "तो चलो, तुम्हारे पितासे मिल लूं। आओ, गाड़ीमें बैठ जाओ।"

सुनकर ननीगोपालका सिर चकराने लगा। आंखोंके सामने धुंधलापन छा गया। वह समझ गया कि यह आदमी बच्चोंको उठाकर ले जाने वालोंमेंसे है। गाड़ीमें बैठाकर अभी ले भागेगा! बस, इसके बाद उसने और इंतजार नहीं किया। आव देखा न ताव, हाथमें रखी कटोरी एक तरफ फेंक दी और वह घरकी तरफ तेजीसे दौड़ने लगा। लेकिन कितना दौड़ता? मकान तो पास ही था। ननीगोपालके पहुंचनेके बाद ही वह शानदार गाड़ी भी उसके मकानके सामने आकर खड़ी हो गई।

दरवाजेका कुंडा जोरसे बज उठा।

उसके बाद ननीगोपालकी किस्मतका कुंडा भी जोरसे बज उठा।

हालांकि पहले दिन जब ननीने सुना कि वह आदमी सिनेमाका एक बहुत बड़ा डायरेक्टर है और उसके पिताके साथ पक्की बात करके कांट्रेक्टपर दस्तखत भी कर गया है, तब तो उसके मनमें खुशीके पटाखे छूटने लगे थे।

उसी वक्त अपने जिगरी दोस्तों—सुनील, बाबुन, घंटू और नंदूको खबर सुनानेके लिए वह लपककर जाने वाला था। लेकिन फिर यह सोचकर रुक गया कि अभी उन्हें नहीं बताऊं, क्योंकि अगर आखिरमें यह सब सच नहीं हुआ, तो वे सब उसकी हंसी उड़ाएंगे। हंसी उड़ाते हुए अगर पूछ बैठें— 'क्यों रे, गप मारनेके लिए तुझे हमीं मिले थे? हम भी तो हर वक्त गुड़ लाने, नमक लाने, हल्दी लाने बाजार जाते हैं। हमारे सामने तो कभी इस तरह गाड़ी आकर रुकी नहीं। हमें तो कभी किसीने बुलाकर यह नहीं कहा कि सिनेमामें काम करोगे क्या।'

आशापूर्णादेवी

उसने तय किया कि पिक्चर बन जानेसे पहले वह किसीसे कुछ नहीं कहेगा।

इस बीच ननीगोपालने बस यही सोचा कि अब वह अपनी कौन-कौनसी इच्छाओंको पूरी कर सकेगा। हां, उसने सुना था कि सिनेमावाले उसे बहुत सारे पैसे देंगे। वे रुपये उसके पिताके हाथोंमें पड़ेंगे, यह बात भी ननी अच्छी तरह जानता है। होलीपर मामाके यहांसे जो रुपये मिलते हैं, वे भी तो उसके पिता उससे यह कहकर ले लेते हैं कि मेरे पास ही रख दे, तू कहीं खो देगा।

लेकिन फिर भी क्या इतने सारे रुपयोंमेंसे पिताजी उसके हाथमें दस रुपये भी नहीं देंगे? देंगे— ननीके मनमें आशा बंधी। दस रुपये मिल जाएं, तो बस मजे ही मजे हैं। बेचारेने पहले कभी पूरा एक रुपया भी खर्च नहीं किया था।

उन दस रुपयोंमेंसे (ननी दस रुपयोंका हिसाब लगाकर ही सोचने लगा) सबसे पहले वह पतंगकी डोर लपेटने वाली चकरी खरीदकर लाएगा, उसके साथ ही मांझेवाली डोरी भी बहुत सारी ले आएगा। एक अच्छी चकरी खरीदनेकी उसकी बहुत दिनोंसे इच्छा थी।

उसके बाद? चमकीले कागजोंमें लिपटी बड़ी बड़ी चाकलेट, ढेर सारे आलू-छोले, टोकरियोंमें रखे फूले फूले गोल गप्पे, पैकेटवाले वेफर उसकी आंखोंके सामने नाचने लगे। स्कूलके कंपाउंडमें बैठने वाले रामलालके ठेलेपर मिलने वाली चूरनकी गोलियां और आमके पापड़ भी उसके ध्यानमें आने लगे।

अब तक वह इन चीजोंको कभी भी मन भरके नहीं खरीद सका था। चार या ज्यादासे ज्यादा छह पैसे उसे मिलते थे। एक दिन उसने रामलालके पाससे मुफ्तमें जरा-सा आमका पापड़ मांगा था, तो रामलाल मारनेके लिए उठ खड़ा हुआ था। लेकिन अब दस रुपये मिल जानेके बाद वह नगद एक रुपएका आमका पापड़ खरीद लाएगा, तो रामलालकी नाकके सामने रुपया पटक देगा।

इन चीजोंको खरीदकर दोस्तोंको भी जरूर बांटेगा।

मान लो उसने दो रुपयेके गोल गप्पे खरीदे। सब गोल गप्पे वह अकेला थोड़े ही खा सकेगा। उस दिन ननीगोपाल बेचैनीसे बस यही सोचता रहा—कि रुपये मिलनेपर क्या क्या करेगा।

सोचते सोचते उसका दिल धड़कने लगा, सिर चकराने लगा। उस वक्त खाना-पीना और सोना तक भूल गया। फूफी गुड़के बारेमें पूछेगी, तो क्या कहेगा? कटोरी खो जानेकी सफाई देनेके लिए क्या कहेगा? यह सब कुछ भूल गया था ननी।

वह सिर्फ मनके लड्डू फोड़ने लगा—चकरी खरीद रहा है, चाकलेट खरीद रहा है, गलीके मोड़पर दोस्तोंको साथ लेकर गोल गप्पे खा रहा है, पानकी दूकानपर बैठकर स्ट्रा डुबोकर ऑरेंज स्क्वैश पी रहा है।

दोस्तोंके बिना वह किसी तरहके मजेकी बात सोच भी नहीं सकता था। इसलिए इस समय जो सपने वह देख रहा था उनमें उसके दोस्तोंके चेहरे भी शामिल थे।

ननीका नाम हो गया है। वह पास देकर अपने दोस्तोंको सिनेमा दिखला रहा है, उसने अपने दोस्तोंकी मंडलीको एक अच्छावाला कैरम बोर्ड खरीद दिया है—यही सब कुछ वह सोचता रहा।

●

और कुछ अर्से बाद, जो नहीं हो सकता था, वही हो गया।

एक बार पर्देपर उतरते ही ननीगोपालका काफी नाम हो गया। साथ ही उसको लेकर खींचतान भी मच गई।

उसके पिताके पास हर रोज नए आदमी आते, नए नए चित्रोंके लिए कांट्रैक्ट करनेके लिए। सच मानो, ऐसा ही होता है, हमेशासे ही ऐसा होता आया है। कहते हैं—कलका राजा आज फकीर और आजका फकीर कल राजा। ननीके बारेमें भी यही हुआ।

कुछ दिनोंमें ही फकीर ननी राजा हो गया। लोग आते और ननीके नामके चेक दे जाते। ननीके पिता इन चेकोंको बटोरनेमें लगे रहते। चेक...चेक और चेकके ऊपर चेक!

चेकका मतलब ही रुपये होता है, ननी यह बात नहीं जानता था! बस, वह तो घरकी बदली हुई हालतको ही समझ पाया था। वह यह भी समझने लगा था कि इन चेकोंकी मेहरबानीसे ही अब उसके पिता उसे ननीके बजाय अचिन नामसे बुलाते हैं। उसे यह समझनेमें भी कोई मुश्किल नहीं थी कि चेककी वजहसे ही घरमें उसके बहुत भाव बढ़ गए थे।

दीदी कहती है—'ओ अचिन, सुन, मेरे राजा भैया।'

मां कहती है—'मेरे प्यारे अचुन।'

फूफी कहती है—'ओ रे, मेरे अच्युतानंद।'

बित्ता भरके बच्चेकी वजहसे घरमें इतनी सुख-सुविधाएं मिल रही हैं, क्या यह कोई कम आश्चर्यकी बात है।

फूफी और चाचाने तो यहां तक कहा कि अब ननीको लिखने-पढ़नेकी जरूरत नहीं है। ये लोग ऐसे कहने लगे मानो पैसेकी वजहसे ही इम्तहान पास किए जाते हों, और अब जबकि इतने सारे पैसे घरमें आ रहे हैं, तो फिर... अभी सिनेमामें हीरोका छोटा भाई बनता है, इसके बाद हीरो भी बन जाएगा। तब तो रुपयोंकी बरसात झमाझम होने लगेगी। अभीसे इतना कुछ हो रहा है, तो तबकी बात ही निराली होगी।

देखते ही देखते घरका पुराना नक्शा अब बिल्कुल बदल गया। छींटवाले मोटे सूती कपड़ेकी कमीज और जीनकी हाफ पैंटके बदले अब ननी टैरेलीनकी कमीज और डेक्रोनकी फुल पैंट पहनने लगा। आमकी लकड़ीके तख्ते और फटे हुए गद्देके बदले अब डनलोपिलोका नर्म गद्दा आ गया। दाल-भात नहीं निगलना पड़ता, अब वह मुर्गीका झोल और फ्रायड राइस खाता है। इसी तरहसे और भी सब बातें बदल गईं। सवेरेके दंतमंजनसे लेकर रातको बिस्तरेके पास पड़े रहने वाले पानीके गिलास तकमें फर्क आ गया। सिनेमामें बदलने वाले दृश्योंकी तरह ही ननीके जीवनमें भी ये सब चीजें बदलती रहीं।

इस सिनेमाको देखने वाला है ननी।

ननी देख रहा है कि वे लोग हमेशावाला मोहल्ला छोड़ आए हैं, नए चमकते हुए मोहल्लेमें बड़े लोगोंके पड़ोसमें आ गए हैं। इस नए मकानके फर्शसे लेकर छत तककी हरेक चीज बहुत चमकती है, जैसी कि बड़े आदमियोंके घरोंमें हुआ करती है।

उनके उस नए मकानको बड़े लोगोंके मकानोंकी तरह ही सोफों, कार्पेट वगैरहसे सजा दिया गया है। यह सब कुछ ननीको एक सिनेमाकी तरह ही लग रहा था।

इस सिनेमाका दर्शक ननी अब सिर्फ देख ही नहीं रहा, बल्कि सुन भी रहा है—कि उसकी दीदी सिल्कन साड़ी पहनकर सोफेपर बैठी बैठी कह रही है—'पता नहीं रेफ्रीजरेटरके बिना आदमी जिंदा कैसे रहते हैं!'

ननीकी मां अपने चर्बीवाले बदनको पलंगपर फैलाए हांफती हुई कहती है—'अब मैं तो बिना डनलोपिलोकी गद्दीके सोनेकी बात सोच भी नहीं सकती! एक रोज दीदीके यहां रातको ठहर गई थी, कितनी मुसीबत हुई, मैं ही जानती हूं!'

ननीके चाचा कहते हैं—'दार्जिलिंग अगर जाना है, तो हवाई जहाजमें ही जाना चाहिए!'

ननीके पिता कहते हैं—'न्यू अलीपुरमें एक मकान बिक रहा है, पिच्चासी हजार रुपयेमें। सोचता हूं, देख आऊं,' उन्होंने यह भी कहा, 'गाड़ी खरीद तो ली, लेकिन यह उतनी अच्छी नहीं है। इसे अब बदल देना होगा।'

लेकिन ननी? ननीके बारेमें अब खुद ननी ही नहीं जानता। ननी अब 'अचिनकुमार' का मुखौटा पहनकर इसके-उसके हाथोंमें खिलौना बनता फिर रहा है।

ननीको पतंगकी डोर लपेटने वाली एक अच्छी चकरीका बहुत शौक था, यह बात भी ननी भूल बैठा। उसे याद नहीं रहा कि उसने जीवनमें मन भरके कभी कोई चीज नहीं खरीदी थी। इस दुनियामें गोल गप्पे नामकी कोई चीज है, वह नहीं जानता—भूल गया आलू छोले और चूरनकी बात।

तो क्या हरिगोपाल बाबूने ननीको कुछ भी नहीं दिया? दिया क्यों नहीं, बहुत कुछ देते हैं। हमेशा ही तो उसे एक एक सौ रुपयेवाले दो-तीन चार नोट देते रहते हैं। कहते हैं—तुझे इतना मिल रहा है, रख ले।

लेकिन क्या एक सौ रुपयेके नोटसे चना-कुरमुरा खाया जा सकता है? पतंग खरीदी जा सकती है? इसके अलावा इन चीजोंको खिलाकर और जिनके साथ खेलकर मजा आता है, वे अब कहां हैं? वे उसके जिगरी दोस्त अब कहां हैं? वे तो अपने उसी पुराने मोहल्लेमें हैं, जिनके साथ कभी मुलाकात नहीं होती।

ननी अब इस मोहल्लेसे बाहर भी नहीं निकल पाता।

पुराने मोहल्लेमें जानेकी बात कहते ही दीदी कहती है, 'वे ही कहां आते हैं? उनके मनमें भी तो तुझसे मिलनेकी बेचैनी होनी चाहिए। तुझे ही ऐसी क्या गरज पड़ी है?'

मां लाड़ करते हुए कहती है, 'जाना जाना, एक दिन जरूर जाना। किसी दिन साथ ही चले चलेंगे।'

(कृपया पृष्ठ ३४ देखिए)

छोटी छोटी बातें—

—सिम्स

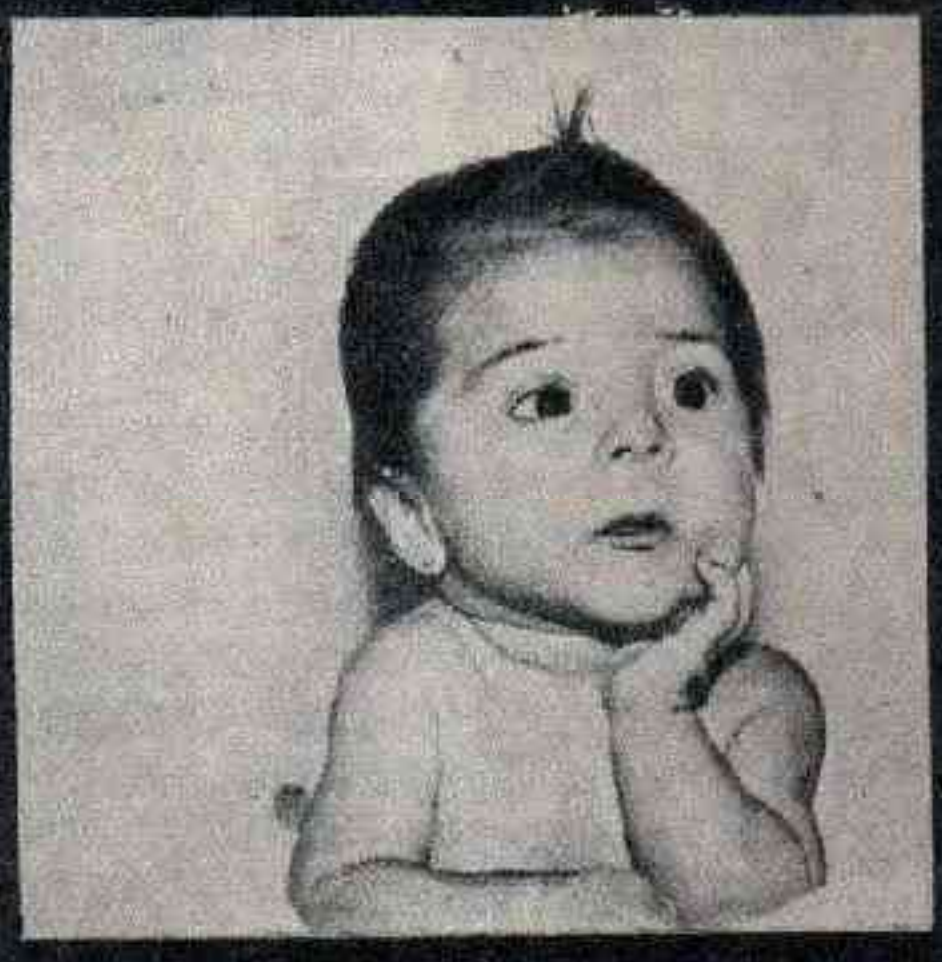

"मेरा जन्म-स्थान तो इलाहाबाद है, और जनाब का?"

"मेरा? यार, अम्मां कहती है कि—मेरा जन्म तो अस्पताल में हुआ था!"

मौजा पर मौज

छाया: विद्याव्रत

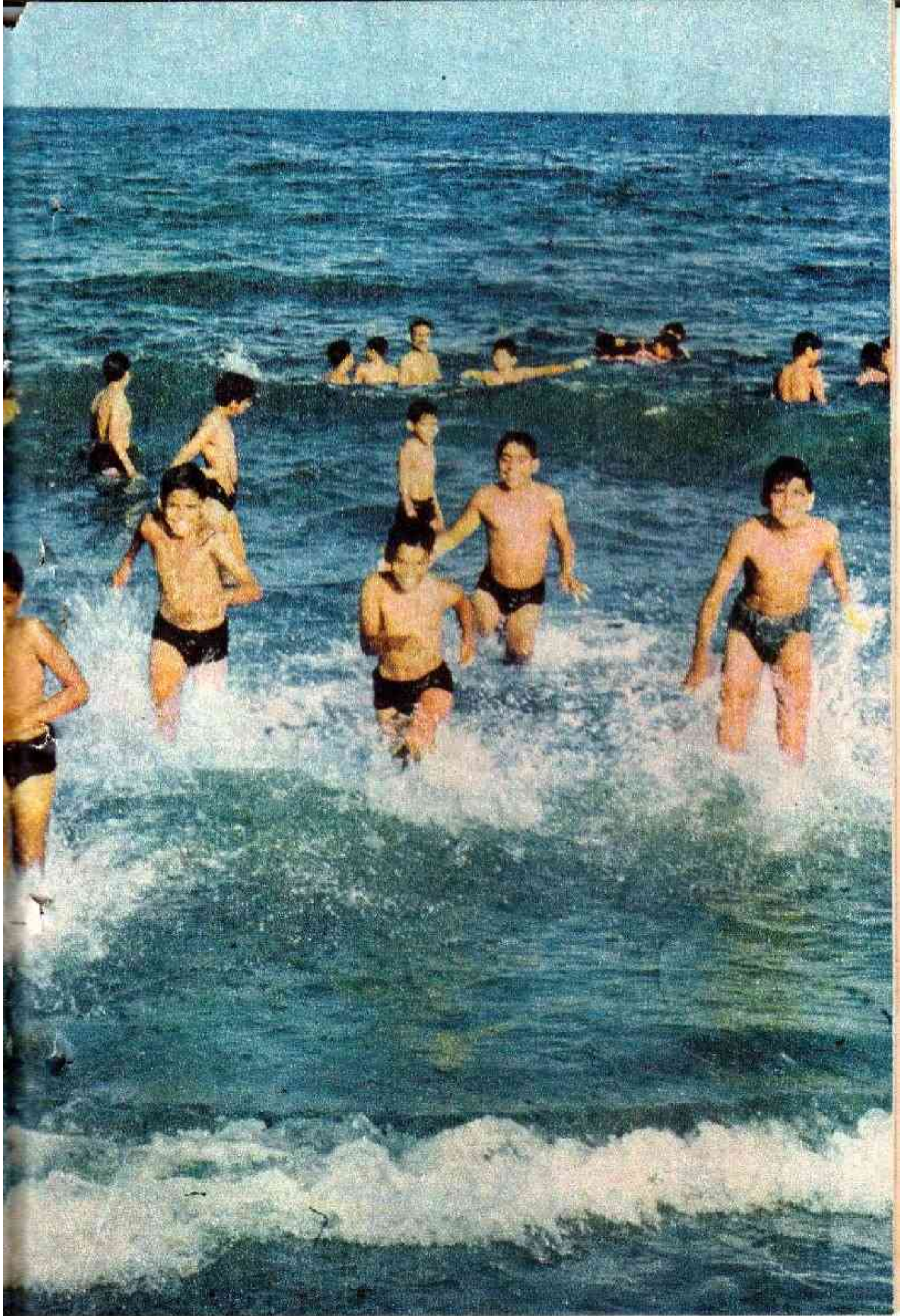

बेचारा ननीगोपाल (पृष्ठ ३१ से आगे)

उसे बहुत लाड-प्यार मिलने लगा। इतने लाड-प्यारसे ननी उकता गया। इससे तो पहले मांका रात-दिन बकना-झकना ही अच्छा था। ज्यादा देर तक सोते हुए देखती थी, तो चिल्लाने लगती थी। पढ़ाई नहीं करता था, तो डांटती थी। कोई काम नहीं करना चाहता था, तो कभी-कभार हाथ तक उठा लेती थी मां।

अब? अब अगर ननी नींदसे जल्दी उठ जाता है, तो मां कहती हैं, 'आहा, अभीसे क्यों उठ रहा है? थोड़ा और सो ले ना। रातको इतनी देर तक तो मेहनत करता रहा था।' पढ़ने बैठता है तो कहती है, 'इतना सिर झुकाकर मत पढ़, बेटा, सिर दुखेगा। इस साल इम्तहान नहीं देगा, तो क्या बिगड़ जाएगा। शरीर पहले है या पढ़ना!' और घरके काम करने वाली बात? उसका तो अब कोई सवाल ही नहीं उठता।

ननी हांफ उठा है।

लाड-प्यारके दबावसे, खाने-पीनेकी जोर-जबर्दस्ती-से, खींचातानीके मारे उसका मन भर उठा है। वह सोच भी नहीं पाता कि प्रसिद्ध हो जानेसे उसे क्या फायदा हुआ है।

फिर भी वह दिन-पर-दिन और भी ज्यादा प्रसिद्ध होता जा रहा है। इस मोहल्लेके लड़के-बच्चे, जिन्हें ननी पहचानता तक नहीं, उसे देखते ही आपसमें कानाफूसी करने लग जाते हैं—'अचिनकुमार... अचिनकुमार!'

'वह भाग जाए, तो कैसा रहे?' सोचता रहता है ननीगोपाल। वहीं अपने पुराने मोहल्लेमें चला जाएगा, फिर उसी मैदानमें उछल-कूद करेगा, खेलेगा। एक सौ रुपयेके कुरमुरे, आलू छोले, आइसक्रीम खरीदकर सब दोस्तोंको खिलाएगा। पुराने दिनोंको फिरसे वापस बुला लेगा। भागना ही पड़ेगा। नहीं भागेगा तो जाने नहीं देगा कोई।

●

आखिर एक दिन सचमुच ही ननीगोपाल शामके वक्त घरसे नौ-दो-ग्यारह हो गया। उस दिन कहीं पर सिनेमाकी शूटिंग नहीं थी, इसी लिए उसके मनमें शांति थी।

बसमें बैठकर वह अपने पुराने मोहल्लेमें आ धमका। धीरे धीरे खेलके उस मैदान तक आ गया।

ताज्जुब है, सभी कुछ वैसा-का-वैसा है। सिर्फ ननीका जीवनही धुंएकी तरह उड़ गया है।

लड़के हुड़दंग मचाते हुए खेल रहे हैं। ननी घेरेके बाहर खड़ा यह सब देख रहा है। धीरे धीरे घेरेके भीतर आया... लेकिन तभी एक घटना हो गई। पता नहीं कहांसे लड़कोंके एक झुंडने आकर ननीको घेर लिया। चारों तरफसे यही आवाज आ रही थी—'अचिनकुमार, अचिनकुमार!' उसके बाद उन लोगोंके हाथमें एक एक टुकड़ा कागज आ गया और वे उसीको आगे बढ़ाकर कहने लगे—'ऑटोग्राफ, आपका ऑटोग्राफ।'

ये कौन हैं?

इन्हें तो नहीं पहचानता ननी! सड़क परसे आ गए हैं।

जिन्हें वह पहचानता है, वे तो वहां दूर हैं। खेल रहे थे, अब खेल छोड़कर एक तरफ खड़े हो गए हैं। लेकिन आगे बढ़कर नहीं आ रहे हैं।

बेचारा ननी भी आगे कैसे जाए? अचिनकुमारके भक्तोंने उसे पकड़ लिया है ना! इसलिए अब ननी सबके कागजोंपर अपने हस्ताक्षर करने लगा। इन लोगोंसे छुटकारा पानेके लिए वह जल्दी जल्दी ऑटोग्राफ देने लगा।... लेकिन यह करते करते शाम ढलती जा रही है। ननीने देखा कि मैदानकी दूसरी तरफसे सुनील, बाबुन, बंटू, नंदू वापस अपने घरकी तरफ चले जा रहे हैं।

ननीने अपनी चारों तरफ खड़े लड़कोंको अलग हटाने-की कोशिश की। इन लोगोंने ननीकी कमीज पकड़ ली—'मेरा कागज... मुझे ऑटोग्राफ नहीं दिए... एक और... इसी मोहल्लेका तो लड़का है।'

इस बार ननीने अपना हाथ छुड़ाया और आगे बढ़ गया। अपने पुराने जिगरी दोस्तोंके पीछे दौड़ने लगा। अचानक उसे अपने पीछे ठी-ठी करके कइयोंकी हंसी सुनाई पड़ी। अब तक जो उसके ऑटोग्राफ ले रहे थे वे ही हंस रहे थे। सुना-सुनाकर कह रहे थे—'देखा, घमंड देखा इसका? अभी उस दिन तक तो यहां राशनकी दूकानपर थैला लिये खड़ा रहता था, फटी कमीज पहनता था। किसने नहीं देखा है! अब पैसेकी गर्मी-के मारे आंखोंसे दिखना और कानोंसे सुनना भी बंद हो गया। ऑटोग्राफ ऐसे दे रहा था, मानो भीख दे रहा हो। फूलकर कुप्पा हो गया है। मैं तो सोच रहा था कि कहूंगा, सिनेमामें मुझे भी एक चांस दिलवा दे। लेकिन वह लाटसाहबका बच्चा चल ही दिया।'

ननी खड़ा हो गया।

ननीके पांव आगे नहीं बढ़ पा रहे थे।

ननीकी आंखोंमें आंसू भर आए। फिर भी वह धीरे धीरे अपने पुराने दोस्तोंकी तरफ बढ़ता गया। वे गुस्सा करके चले गए हैं। वे भला यह कैसे समझ पाते कि इन बकवासी छोकरोंसे पीछा नहीं छुड़ा सकनेकी वजहसे ही अब तक वह उनके पास नहीं आ सका था।

ननी उनका गुस्सा मिटानेके लिए आगे बढ़ता गया।

पैंटकी जेबमें एक सौ रुपयेका नोट रखा हुआ है।

अपने दोस्तोंको पकड़नेके लिए आखिर उसे बहुत तेज दौड़ लगानी पड़ी।

हांफते हांफते ननी उनके पास पहुंचा और बोला, "भई, तुम लोग चले क्यों जा रहे हो?"

वे भी खड़े हो गए। मानो अभी अभी ननीको देख पाए हों। कहने लगे—"अरे... अचिनकुमार? अचा-नक इस तरफ? गंदी गलीका कोई शूटिंग था क्या?"

ननी सकपका गया।

घबड़ाकर थोड़ा हंसते हुए ननीने कहा, "क्यों, शूटिंगके बिना मुझे इधर नहीं आना चाहिए?"

"वाह! आओगे क्यों? तुम्हारे पास फालतू समय थोड़े ही है!"

"कैसी बातें करते हो?" ननीने जोरसे कहा। "हर वक्त क्या मैं सिनेमामें ही काम करता रहता हूं। चलो ना, कहीं चलकर बैठें! . . क्यों रे, क्या आजकल गोल गप्पे और चने-कुरमुरेवाला नहीं आता?"

उन्होंने गंभीर आवाजमें कहा, "आता क्यों नहीं है? गरीबोंके मोहल्लेमें उनके अलावा और कौन आएगा!"

"आहा, ऐसे क्यों बात कर रहा है? मैं सोच रहा था कि पहलेकी तरह ही सब मिलकर एक दिन, यानी मैं और तुम सब लोग. . ."

बाबुन झटसे बीचमें बोल पड़ा, "खिलाना है, तो फिर चना-कुरमुरा ही क्यों, भाई? अब तो तुम्हारे पास ढेर सारे पैसे हो गए हैं, किसी रेस्टोरेंटमें खिला दो ना!"

"रेस्टोरेंटमें? हां ठीक है, वहीं चलो," ननीने कहा।

हालांकि उसकी अपनी इच्छा कुछ और ही थी। जिन सब खोमचेवालोंके सामने मुंह लटकाए खड़ा रहता था ननी, चार-छह पैसोंको जेबमें टटोलता रहता और मुफ्तमें चीज पानेकी उम्मीदमें आंखें लटकाए खड़ा रहता, उन्हींमेंसे किसी एक खोमचेपर अब वह अपना वह सौ रुपयेका नोट तुड़वाना चाहता था। लेकिन वैसा नहीं हो सका।

इसलिए अभी भी चना-कुरमुरेकी पार्टी नहीं हो सकी। सब रेस्टोरेंटकी तरफ चल दिए।

लेकिन जो साथ चल रहे थे, क्या वे ननीके वही पुराने जिगरी दोस्त थे? ऐसा लग रहा था, मानो वे कोई और ही थे। मानो ननी उनका वह हमेशावाला जिगरी दोस्त नहीं है, बल्कि अजीब-सी कोई चीज है।

ननीने पुरानी बातें उठानेकी जितनी बार कोशिश की, उतनी ही बार उन लोगोंने ननीसे नई बातें सुनने की उत्सुकता दिखलाई।

ननी कहना चाहता—'भाई, मैं बीच बीचमें यहां भाग आया करूंगा, खेल-कूदके बिना बहुत बुरा लगता है।' पर वे उसकी इस बातको अनसुनी करते हुए कहते—"हमें भी एकाध चांस दिला देना, बाबा। तेरा अब इतना नाम हो चुका है, क्या हमारे लिए यह भी नहीं कर सकेगा? तेरी तरह राजकुमार नहीं बन सकेंगे, तो पैदल चलने वाले सैनिक ही बनवा देना।"

ननीने कहा, "धत्, इसमें कोई सुख नहीं है।"

उन्होंने कहा, "हूं, भाई, हम सब समझते हैं। थैलियां भर भरकर रुपये आते हैं, इसमें बहुत दुःख मिलता है ना?"

"हिष्ट, इतने रुपयोंका क्या होगा?" ननीने कहा।

घंटूने हंसते हुए कहा, "ओहो रामकृष्ण परमहंस पधार गए हैं, लगता है!"

इसके बाद वे लोग कमला रेस्टोरेंटके सामने पहुंच गए। ननी यह पूछ रहा था कि—बोलो क्या खाओगे?

लेकिन उसके मुंहकी बात मुंहमें ही रह गई। अचानक ननीके पास एक बहुत बड़ी आलीशान गाड़ी ब्रेककी आवाज करती हुई रुकी और उस गाड़ीमेंसे बाहर निकलकर आए ननीके पिता।

गाड़ीसे बाहर निकलते ही लपककर ननीके पास आए और जोर जोरसे बोलने लगे, "जो सोचा था, वही हुआ। यहां आ गए ना तुम? यहां क्या करने आए? चलो, चलो! . . . देखो उधर गाड़ीमें रामवल्लभ बाबू बैठे हैं, बड़े बिजनेसमैन हैं। वह अपनी नई फिल्ममें तुझे लेना चाहते हैं। आज ही कांट्रैक्ट करेंगे। चलो, अब चलें। ताज्जुब है, अचानक यहां कैसे आ गए . . ."

हरिगोपाल बाबूने अपने लड़केको करीब करीब खींचते हुए गाड़ीकी तरफ ले जाना चाहा।

"पिताजी, मैंने इन्हें खाना खिलानेके लिए. . ."

बेचारा दुखी और परवश ननी बड़ी मुश्किलसे इतनी-सी बात कह पाया।

हरिगोपाल बाबूने कहा, "अच्छा, यह बात है! इन छोकरोंने तुझे पकड़ लिया होगा। अच्छा मैं दे देता हूं," हरिगोपालने उन चारों बच्चोंके सामने दस रुपयेका एक नोट फेंक दिया। कहने लगे, "अचिनके पास एक मिनिटका भी समय नहीं है, तुम लोग बुरा मत मानना। चाय. . . पी लेना. . ."

●

धूल उड़ाती गाड़ी सर्राटेसे चली गई। और ननी?

ननी पूरी ताकत लगाकर अपने आंसुओंको रोकनेकी कोशिश कर रहा था। अब वह इस जीवनमें फिर कभी भी अपने दोस्तोंको मुंह नहीं दिखा सकेगा, ननी क्या यह बात नहीं समझा था।

क्या वह इतना-सा भी नहीं समझा होगा कि उस मोहल्लेमें जहां चले जानेके लिए वह हमेशा तड़पा करता था, हंसमुख रहने वाला लड़का ननीगोपाल आज हमेशाके लिए मिट गया है। . . . अब कोई कभी उसे 'आ जा ननी' कहकर नहीं बुलाएगा। अब उसे जिंदगी भर वही अचिन-कुमारका मुखौटा पहने घूमना पड़ेगा।

हाय, पहले दिन ही उसने बहुत खराब अभिनय क्यों नहीं किया था? क्यों प्रसिद्ध हो गया? क्यों इतना महंगा हो गया?

इस हालतमें तो कटोरीमें पतला गुड़ लाना ही बहुत अच्छा था, फटी थैलीमें राशन लाने और बाजारसे कुछ भी खरीद न पाने वाले दिन बहुत अच्छे थे। तब उसे सड़कपर ईंटें खड़ी करके क्रिकेट खेलने वालोंसे कोई अलग नहीं कर सकता था। ननीको छीनकर कोई नहीं ले जा सकता था।

आश्चर्य है! जिस चीजसे जीवनकी सारी इच्छाएं और खुशी मिट जाती है, सारा सुख और शांति नष्ट हो जाती है, उसीको पानेके लिए आदमी इतनी दौड़धूप करता रहता है! बड़ा आदमी बनना, प्रसिद्ध होना क्यों चाहता है?

सभीको यह क्या हो गया है?

(अनुवाद : शेफाली चौधरी)

बाजारसे लौटते हुए वशेशरनाथ सोच रहे थे कि वह कोई चीज लाना भूल गए हैं। सारे रास्ते वह सिर खुजाते रहे कि चीज याद आ जाए, तो वहींसे लौट जाएं और भूली हुई चीज लेकर ही लौटें। परंतु उन्हें कोई चीज याद ही नहीं आई।

जैसे ही वह अपने घरके अंदर घुसे, पप्पूने दूरसे ही आवाज लगाते हुए पूछा, "पापा, आप मम्मीको कहां छोड़ आए हैं?"

•

युद्ध और शांतिपर अपने विद्वतापूर्ण भाषण के पश्चात् अध्यापिकाने पूछा, "जो युद्ध पसंद नहीं करते, वह अपने हाथ ऊपर उठाएं।" सब विद्यार्थियोंके हाथ ऊपर उठ गए, तो अध्यापिका प्रसन्न हुई कि उसका भाषण सबने समझ लिया है।

अध्यापिकाने गर्वसे पप्पूसे पूछा, "पप्पू, तुम बताओ कि युद्ध तुम्हें क्यों अच्छा नहीं लगता?"

पप्पूने उठकर उत्तर दिया : "क्योंकि युद्धोंसे इतिहास बनता है!"

•

पप्पू बड़ी धीमी चालसे चलता हुआ अपनी कक्षामें पहुंचा। कक्षा आरंभ हो चुकी थी। अध्यापिकाने क्रोधमें भरकर पूछा, "इतनी देरमें आ रहे हो और वह भी इतने धीरे धीरे!"

पप्पू बोला, "नहीं जी, मैं तो तेज आ रहा था, लेकिन स्कूलसे बाहर एक नया साइनबोर्ड लगा है, उसपर लिखा है—स्कूल है, धीरे चलो; इसलिए धीरे धीरे चलकर आना पड़ा!"

•

पप्पू दूकानदारसे : "मुझे एक पेंसिल चाहिए।"

दूकानदार : "नरम सुरमेवाली चाहिए या सख्त सुरमेवाली?"

पप्पू : "सख्त सुरमेवाली, परीक्षा जो सख्त होगी!"

•

पप्पू घरसे लाई मिठाई खा रहा था। पास खड़े दब्बूके मुंहमें पानी आ गया। वह पप्पूसे बोला, "मिठाई बहुत स्वाद लग रही है?"

पप्पू बोला, "हां हां, बहुत स्वाद है।"

"मेरे मुंहमें पानी आ रहा है," दब्बूने ललचाई नजरोंसे मिठाईकी तरफ देखते हुए कहा।

पप्पूने अपने झोलेसे एक कागजका टुकड़ा निकालते हुए उसकी ओर बढ़ा दिया और बोला, "लो, यह रहा ब्लाटिंग पेपर, इससे अपने मुंहका पानी सुखा लो!"

—आशारानी

पप्पूको एक बड़े लड़केने गाली दी। उसको गुस्सा चढ़ आया, बोला, "मैं तुम्हें पांच मिनिट देता हूं, तुम यह गाली वापस ले लो।

बड़ा लड़का बोला, "अगर पांच मिनिटमें वापस न लूं, तो मेरा क्या करोगे?"

पप्पू उतने ही गुस्सेमें बोला, "तब तुम्हें और समय देना पड़ेगा!"

•

पप्पूने अपने कोटपर दो पदक लगा रखे थे। उसके मित्रने पूछा, "यह छोटा पदक तुम्हें किस लिए मिला था?"

पप्पू : "गाने के लिए।"

दूसरा प्रश्न था : "और यह बड़ा पदक?"

पप्पू : "गाना बंद करने के लिए!"

•

नन्ही टहनी : मोटी डाली

नन्ही टहनी दुबली-पतली चार पत्तियोंवाली,
एक बार डाली से उसने मन की कह ही डाली,
"क्या कारण जो तुम्हें पेड़ ने चढ़ा लिया है सिर पर?
आज तुम्हें देना होगा इस कठिन प्रश्न का उत्तर।"

भोली टहनी की बातें सुनकर डाली मुसकाई,
उसने इन शब्दों में कह दी, जो कुछ थी सच्चाई—
"तुम पर केवल चार और मुझपर पत्तियां हजार,
कई गुना ज्यादा है तुमसे मेरे ऊपर भार,

"हर पत्ती का जिम्मा मुझपर, सुनो खोलकर कान,
रखना पड़ता मुझको इनमें से हरेक का ध्यान।
कर्त्तव्यों से चुकता है जिम्मेदारी का कर्जा,
जो जैसा कर्त्तव्य करे पाता वैसा ही दर्जा;

"जिस दिन लोगी उठा शीश पर ये पत्तियां समूची,
इस कुटुंबमें हो जाओगी मुझसे भी तुम ऊंची!"

—शंभूप्रसाद श्रीवास्तव

घरमें सुनहरी मछलियां लाई गईं और पानी बदलनेका कार्य पप्पूके जिम्मे डाल दिया गया। तीन-चार दिन बाद पप्पूके पिता बशेशरनाथने पूछा, "पप्पू, पानी गंदा हो रहा है। तुमने बदला क्यों नहीं?"

पप्पू : "अभी पहले का पानी ही वे पूरा नहीं पी सकीं, और डालकर क्या करता!"

•

पप्पू अपनी मुर्गियोंको पानीपर तैरा रहा था। पड़ोसीने देखा, तो पूछा, "मुर्गियोंके नीचे तुम गरम पानी क्यों डाल रहे हो?"

पप्पूने उत्तर दिया, "ताकि मुर्गियां उबले अंडे दें; अभी मम्मीको अंडे उबालने जो पड़ते हैं!"

•

पप्पू दरवाजेके सामने बैठा था। एक व्यक्ति आया, उसने पूछा, "बच्चे, तुम्हारी मां घरपर हैं?"

पप्पूने उत्तर दिया, "हां, हैं।"

वह व्यक्ति काफी देर तक दरवाजा खटखटाता रहा, फिर झुंझलाकर पप्पूसे बोला, "तुम तो कह रहे थे मां घरपर हैं, यहां तो कोई जवाब ही नहीं दे रहा है।"

पप्पू, "लेकिन मैंने यह कब कहा कि मैं यहां रहता हूं, मेरा घर तो साथवाला है!"

•

पप्पूकी अपने पड़ोसी नटखटसे कहा-सुनी हो गई थी और दोनोंमें अर्सेसे बोलचाल बंद थी। पप्पूके जन्म-दिन पर उसके पिताने कहा था कि उस पड़ोसी लड़केको भी वह अवश्य निमंत्रण दे और पुनः दोस्ती कर ले।

जन्म-दिन पर वह पड़ोसी लड़का जब नहीं आया, तो बशेशरनाथने पप्पूसे पूछा, "मैंने तुम्हें कहा था कि पड़ोसीको भी बुला लेना, सो लगता है तुमने उसको निमंत्रण दिया ही नहीं।"

पप्पू : "नहीं पापा, मैंने तो उससे कहा था—हिम्मत हो, तो मेरे घर आना!"

•

('पराग' के पिछले अंकोंमें तुम्हें क्रिकेट, हाकी और फुटबालके खेलोंकी कहानी पढ़नेको मिली थी। लो, अब लान टेनिसकी पहली कहानी पढ़ो। –सम्पादक)

(१)

बच्चो, लान टेनिसका नाम सुनते ही तुम्हारे मनमें एक आधुनिक खेलकी तस्वीर आ जाती होगी, मगर तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि लान टेनिस आधुनिक खेल नहीं, बहुत पुराना खेल है।

इतिहास गवाह है कि तेरहवीं सदीमें ईरान और मिस्रके लोग टेनिससे मिलता-जुलता एक खेल खेला करते थे। फ्रांसमें भी "ज्यू द पाम" नामका एक खेल खेला जाता था, जिसमें खिलाड़ी हाथोंसे गेंदको मारकर नेटके ऊपरसे उछालते थे। इंग्लैण्डमें यह खेल फ्रांससे ही आया। धीरे धीरे, हाथोंके स्थानपर दस्तानोंका प्रयोग होने लगा। बादमें, गेंदको हिट करनेका काम हथेलियोंके स्थानपर पुराने ढंगके रैकटोंसे किया जाने लगा। इस तरह टेनिस कमसे कम सात सौ साल पुराना खेल तो है ही।

१४०० में इस खेलका नाम टेनिस पड़ा, जो अब तक कायम है।

हरिमोहन

१६०० तक इस खेलने फ्रांसमें इतनी अधिक लोकप्रियता प्राप्त कर ली थी कि अकेले पेरिसमें ही १८०० से ज्यादा टेनिस कोर्ट बन चुके थे। १८ वीं सदी तक टेनिसका खेल इंग्लैण्डमें भी इतनी लोकप्रियता प्राप्त कर चुका था कि वहांके खेल संबंधी एक पत्रको लिखना पड़ा था कि "जल्दी ही टेनिसकी वजहसे लोग क्रिकेटको भूल जाएंगे।" उन्नीसवीं सदीमें लान टेनिसने और ज्यादा प्रगति की और बैडमिन्टन, रैकेट्स आदि खेलोंकी

लान टेनिस संबंधी सामान्य ज्ञान

सवाल : लान टेनिसकी सबसे बड़ी प्रतियोगिताएं कौनसी हैं?

जवाब : हर साल विम्बलडन (इंग्लैण्ड) में होने वाली विम्बलडन लान टेनिस प्रतियोगिताएं। इन प्रतियोगिताओंमें विश्वके सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी (पुरुष और महिला) भाग लेते हैं और विश्वके प्रत्येक कोनेसे प्रायः ३०, ००० से अधिक दर्शक उन्हें देखने आते हैं। इनमें विजयी खिलाड़ियोंको अपने वर्गका वर्षका सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी मान लिया जाता है। करीब ३० देशोंके प्रतियोगी इन प्रतियोगिताओंमें भाग लेते हैं।

सवाल : डेविस कप प्रतियोगिता कब आरंभ हुई थी?

जवाब : यह प्रतियोगिता १९०० में ब्रिटेन और अमरीकाके बीच आरंभ हुई थी। १९१२ में इसे सब देशोंके लिए खोल दिया गया। पिछले कई वर्षोंसे इस प्रतियोगिताका फाइनल अमरीका और आस्ट्रेलियाके बीच होता चला आ रहा है।

सवाल : क्या रूसी खिलाड़ी भी लान टेनिसमें भाग लेते हैं?

जवाब : रूसने पिछले कई सालोंमें लान टेनिसमें बहुत उन्नति की है और विशेषज्ञोंका कहना है कि १९७० तक शायद इस खेलमें रूस सब देशोंसे आगे निकल जाएगा।

सवाल : लान टेनिसके पेशेवर और गैर-पेशेवर खिलाड़ियोंमें क्या अंतर है?

जवाब : विम्बलडन और डेविस कप जैसी प्रतियोगिताओंमें वही खिलाड़ी भाग ले सकते हैं, जो इस खेलसे किसी प्रकारका कोई आर्थिक लाभ न प्राप्त करते हों। जो खिलाड़ी इस खेलसे पैसा कमाते हैं या जिनका धंधा ही यह खेल हो, ऐसे खिलाड़ियोंको "पेशेवर" खिलाड़ी कहा जाता है। सैडमैन, कूपर, होड, रोजवैल जैसे खिलाड़ी अपनी टेनिस योग्यताका प्रदर्शन करके लाखों कमाते हैं।

सवाल : किस खिलाड़ीको भारतका सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी कहा जा सकता है?

जवाब : यूं तो भारत दुनियाके अन्य देशोंके मुकाबलेमें इस खेलमें बहुत पीछे है, फिर भी हमारे रामनाथन कृष्णनने कई मौकोंपर विश्वके श्रेष्ठतम खिलाड़ियोंसे अच्छी टक्कर ली है। उनके बारेमें तुम आगे पढ़ोगे।

बढ़ती हुई लोकप्रियताके बावजूद, टेनिसको अमरीकाने भी अपना लिया।

१८७४ में किसी मेजर विंगफील्डने टेनिसके प्राचीन खेलको खेलनेके लिए एक सुधरे हुए 'पोर्टेबिल कोर्ट' का आविष्कार किया। यह कोर्ट आजकलके टेनिस को से बिल्कुल भिन्न था, पर इससे टेनिसके विषयमें लोगोंकी उत्सुकता और बढ़ी।

टेनिसके नियमोंका निर्धारण पहली बार १८७५ में हुआ। इससे पहले, इस खेलके नियम निश्चित न थे और यह अलग अलग देशोंमें अलग अलग नियमोंके अनुसार खेला जाता था। एक मजेकी बात यह थी कि क्रिकेटके नियम बनाने वाली एम. सी. सी. संस्थाने टेनिसके नियम भी बनाए। यह काम एम. सी. सी. ने एक उपसमितिको सौंपा था।

१८७७ में पहली बार लान टेनिसकी प्रतियोगिताओंका आयोजन किया गया। यह प्रतियोगिताएं तबसे आज तक विम्बलडन (इंग्लैण्ड) में आयोजित होती हैं।

पहले टेनिसके खिलाड़ी बचावका खेल ही खेलते थे। पर, धीरे धीरे बचावकी टेनिसका स्थान आक्रामक टेनिसने ले लिया। आज टेनिसके क्षेत्रमें मांसलता, सशक्त सर्विस तथा बौछार-शक्तिका प्राधान्य है। लान टेनिसके खेलमें आई इसी तेजीके कारण, आज आस्ट्रेलिया और अमरीकाने अन्य देशोंको टेनिसमें पछाड़ दिया है। टेनिसकी प्रमुख प्रतियोगिताओं (विम्बलडन और डेविस कप) में इन्हीं दोनों देशोंके खिलाड़ी प्रजेता होते चले आ रहे हैं।

पहले लान टेनिसको शाही खेल समझा जाता था, क्योंकि यह बहुत खर्चीला था और साधारण जनको इसे खेलनेकी सुविधाएं भी आसानीसे नहीं मिल पाती थीं। यह खुशीकी बात है कि अच्छे टेनिस खिलाड़ियोंकी पंक्तिमें आनेके लिए पहले खिलाड़ियोंको जिन जिन बाधाओंका सामना अकेले ही करना पड़ता था, वे अब अधिकाधिक सुविधाओंके उपलब्ध हो जानेके कारण, कम होती जा रही हैं। पहले जो खेल कुछ सम्पन्न व्यक्तियों तक ही सीमित था, वह अब दुनिया भरमें जन साधारणका खेल बनता जा रहा है।

सारे संसारके और खास तौरपर जर्मनी, आस्ट्रिया, इटली, मोनाको, स्वीडन, द. अफ्रीका, यूनान, बेल्जियम, हंगरी, स्विट्जरलैण्ड, आयरलैण्ड, नीदरलैण्ड्स, चीन, जापान, नार्वे, न्यूजीलैण्ड, जेकोस्लोवाकिया, यूगोस्लाविया, भारत, ब्रिटेन, फ्रांस, मैक्सिको, आस्ट्रेलिया, अमरीका, स्पेन, कनाडा, डेनमार्क, पोर्तुगाल, क्यूबा, फिलीपाइंस, फिनलैण्ड, मिस्र, रूमानिया, पोलैण्ड, टर्की आदि देशोंके हर वर्ग तथा जातिके पुरुष और महिला खिलाड़ियोंने कभी न कभी टेनिसमें अवश्य भाग लिया है। आज यह खेल सारे विश्वमें प्रायः हर मौसममें खेला जाता है।

अगले अंकमें हम तुम्हें बताएंगे कि लान टेनिसका खेल किस प्रकार खेला जाता है और उसके मुख्य मुख्य नियम क्या हैं? (क्रमशः)

मोटापे का इलाज

प्राचीन कालमें करीम नामका एक बेहद मोटा व्यक्ति था। अपने मोटापेसे तंग आकर एक दिन वह अपना इलाज करवाने हकीम लुकमानके पास गया।

करीमकी शारीरिक परीक्षा करनेके बाद हकीम लुकमान गंभीर हो गए। अपनी दाढ़ीपर हाथ फेरते हुए वह बोले, "मुझे अफसोस है, करीम, कि मेरे पास तुम्हारा कोई इलाज नहीं। ठीक छह मास बाद तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी।" करीम निराश होकर अपने घर लौट गया।

उस दिनसे अपनी मृत्युकी चिंतासे घुल घुलकर करीमका शरीर सूखता चला गया। मृत्युका दिन करीब आता गया। अंतिम दिन वह अपने निकटके संबंधियोंसे लिपटकर बिलख बिलखकर रोने लगा, किंतु जाने क्यों मृत्युकी घड़ी टलती चली गई और नियत दिन बीत गया। फिर देखते देखते सातवां महीना भी बीत गया और तब उसे विश्वास हो गया कि हकीम लुकमानकी भविष्यवाणी एकदम गलत थी। क्रुद्ध होकर वह फिर उनके पास पहुंचा और चिढ़कर बोला, "क्या आपने मुझे पहचाना? मैं वही हूं, जो सात महीने पूर्व आपके पास अपने मोटापेके इलाज लिए आया था। आप तो कहते थे कि छह महीनेमें मैं मर जाऊंगा!"

हकीम लुकमानने एक बार गौरसे करीमको सिरसे पैर तक देखा और उनके होंठोंपर एक रहस्यमय मुस्कान खेल गई—"तो तुम करीम हो! भई, वाह, अब तो तुम बिल्कुल ठीक हो गए! मियां, मृत्युके खौफसे बढ़कर मेरे पास तुम्हारे मोटापेको कम करनेका कोई इलाज नहीं था। अब तुम्हें क्या शिकायत है?"

और करीम मियां मुंह बाए हकीम लुकमानकी शक्ल देखते रह गए।

—नेत्रसिंह रावत

एक थी तितली—सुंदर रंग-बिरंगी मोहक तितली। एक दिन घूमती - फिरती, उड़ती-उड़ती आई एक बागमें।

बागमें जगह जगह फूलोंकी क्यारियां थीं—रंग-बिरंगे सुंदर फूलोंकी क्यारियां। इधर-उधर थे लंबे हरियाले पेड़ और किनारोंपर थीं सुंदर सुंदर हरीभरी झाड़ियां।

नन्ही तितली डाल डाल घूमी, अच्छे अच्छे गुच्छोंपर बैठकर उसने तरह तरहके फूलोंका रस चूसा। फिर घूमते घूमते एक पत्तेपर जा बैठी, कुछ देर बाद दूसरे पत्तेपर जा बैठी, फिर तीसरे-चौथे कई पत्तोंपर बैठकर और हर पत्तेपर अंडे देकर, हवाकी धारामें पंख फैलाए न जाने कहां जा निकली।

तितलीके अंडे थे बेहद छोटे। इतने छोटे कि गौरसे देखो तब भी नन्हे छींटे जैसे दिखते।

पत्तेके ऊपर धूप और हवा लगती रही। हवासे पत्ता लहराता रहा, हिलता-डोलता रहा, पर अंडे नीचे नहीं गिरे। वे पत्तेके तलपर चिपके थे किसी रससे, लसदार लेपसे।

फिर एक दिन बीता, दूसरा दिन बीता, तीसरा दिन बीता और इस तरह पांचवें या शायद छठे दिन अंडोंसे तितलीके बच्चे निकले—नन्हे नन्हे, बेहद छोटे बच्चे।

पर यह कैसा अंधेर हुआ; ऐसी सुंदर तितलीके इतने बदसूरत बच्चे! लिपलिप करते कीड़ों जैसे, हरा हरा-सा रंग, घिनौना चमकीला सिर और बदनपर अजब अनोखी धारियां।

तितलीके इन बच्चोंका नाम है 'कैटरपिलर।

'कैटरपिलर' बेहद पेटू थे। अंडेसे बाहर आते ही खानेपर जुट गए। जिस पत्तीपर चिपके थे, उसी पत्तीको खा डाला, जिस अंडेसे निकले थे उसका खोल चबा डाला। एक पत्तीको खाकर दूसरीपर पहुंचे, उसे भी कुतर कुतर खाया। इतना खाया कि खा-खाकर पेट फूल गया, और फूलकर कुप्पा हो गया। कुप्पा होते ही बदनकी बाहरी केंचुल फट गई।

फटी केंचुलके अंदरसे 'कैटरपिलर' बाहर आया। उसकी दूसरी केंचुल बेहद मुलायम, चमकीली और नई थी।

फूलोंकी परी—तितली

तितलीके अंडेसे निकला हुआ कीड़े जैसा बच्चा 'कैटरपिलर'

'कैटरपिलर' अनेक चोले बदलनेके बाद अंतमें पंखधारीके रूपमें

-सईद

छाया : एन. एस. नारंग

पहली केंचुल छोड़कर भी पेटू 'कैटरपिलर' खानेपर जुटा रहा। पत्तीपर पत्ती खाता रहा। खा-खाकर कदमें बढ़ता रहा—लंबाईमें भी बढ़ता रहा।

खाते खाते, बढ़ते बढ़ते फिर पहलेकी तरह फूला। फिर फूलकर कुप्पा हुआ। कुप्पा होनेपर फिर केंचुल फट गई। फिर दूसरी केंचुल छोड़ 'कैटरपिलर' बाहर निकला। फिर अंदरसे नई केंचुल निकली—पहले जैसी ही मुलायम, वैसी ही चटक

वही पंखधारी आगे चलकर रंग-बिरंगी तितली हो जाता है

सीखने में देर क्या सबेर क्या!

एक नन्हे बालक का कपड़े पहनना सीखना उसके युवा होने का प्रमाण है। आप उसे स्वावलम्बी बनना सिखाकर शक्तिशाली बनाते हैं।

आप अपने बच्चों को अब दूसरा सबक सिखाइये कि दांतो व मसूढ़ों की रक्षा कैसे करनी चाहिये जिससे वे बड़े होकर आपका आभार मानेंगे कि सड़े गले दांत व मसूढ़ों की बीमारियों से आपने उन्हे बचा लिया।

आज ही अपने बच्चों में सबसे अच्छी आदत डालें—उन्हे दांतो व मसूढ़ों की सेहत के लिये फोरहन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल करना सिखायें। एक दांत के डाक्टर द्वारा निकाला गया फोरहन्स टूथपेस्ट संसार में एक ही है जिसमें मसूढ़ों की रक्षा के लिये डा. फोरहन्स द्वारा निकाली गई विशेष चीजे है। इसके हमेशा इस्तेमाल से दांत सफेद चमकने लगते हैं और मसूढ़े मजबूत होते है। "CARE OF THE TEETH AND GUMS", नामक रंगीन पुस्तिका (अंग्रेजी) की मुफ्त प्रति के लिये डाक-खर्च के १० पैसे के टिकट इस पते पर भेजें: मैनर्स डेन्टल एडवायजरी ब्यूरो, पोस्ट बैग नं. १००३१, बम्बई १.

P. 10

मुफ्त! "दांतों और मसूढ़ों की रक्षा" संबंधी रंगीन पुस्तिका

यह पुस्तिका हिंदी और अंग्रेजी में मिलती है। इसे मँगवाने के लिए १० पैसा के टिकट (डाक खर्च के वास्ते) इस पते पर भेजिए: मैनर्स डेन्टल एडवाइज़री ब्यूरो, पोस्ट बेग नं. १००३१, बम्बई-१

नाम : _____

पता : _____

भाषा : _____

चमकीली।

इस तरह 'कैटरपिलर' खा खाकर पांच बार फूला। पांच बार फूलकर कुप्पा हुआ। पांच बार उसकी केंचुल फटी और पांच बार नई चमकीली केंचुल बाहर आई।

जब जब उसने केंचुल बदली, तब तब उसका कद बढ़ता गया। बढ़ते बढ़ते एक बड़ा-सा 'कैटर-पिलर' बन गया। इस अजीब जंतुको देख कौन कहेगा कि यही तितलीका बच्चा है! रंग-बिरंगी परी जैसी तितलीका बच्चा!

ढेर सारा खाना खाकर जब 'कैटरपिलर' खूब मोटा-ताजा हो गया, तब उसने यकायक खाना बंद कर दिया। फिर इधर-उधर टहलने लगा। कभी इस डालपर गया, कभी उस डालपर। कभी इस पत्तीपर गया, कभी उस पत्तीपर। अंत-में एक बड़ी पत्तीके नीचे गुपचुप बैठ गया। अपने पिछले भागसे पत्तीके नीचे चिपककर लटक गया। कुछ घंटों बाद उसका शरीर सिकुड़ने लगा। सिकुड़ता सिकुड़ता ऊपर उठने लगा और अजीब तरहसे मोटा हो गया।

फिर हुआ एक जादू! 'कैटरपिलर' गायब हो गया।

अब उसकी जगह था एक हरा हरा खोल। इस खोलको 'क्रिसेलिस' कहते हैं। कभी कभी 'ककून' भी कहते हैं।

क्रिसेलिसके अंदर तितलीका बच्चा सो गया। परी लोककी सोई हुई राजकुमारीकी तरह। मंत्रसे खोई हुई अप्सराकी तरह।

क्रिसेलिस पारदर्शी था।

कुछ समय बाद, पारदर्शी खोलके अंदर हलके हलके रंग दिखाई देने लगे। रंगीन फूलों जैसे रंग। नीले-पीले-हरे रंग।

फिर एक और जादू हुआ। एक दिन ओस भरी रात थी। यकायक 'क्रिसेलिस' को तोड़कर कोई बाहर आया। क्या वह 'कैटरपिलर' था?

नहीं।

वह कैटरपिलर नहीं था। वह थी सुंदर रंग-बिरंगी तितली।

नन्ही तितली बाहर आई। अभी उसे उड़ना नहीं आता था। अभी उसके पंख गीले गीले थे, तुड़े-मुड़े थे, नलीकी तरह लिपटे लिपटे थे। उसके सिरपर चमकीली आंखें थीं। एक धड़ था। एक पेट था। मुंहकी जगह लंबी, पतली सूंड थी और थीं लंबी लंबी छह टांगें। यानी वह पूरी तितली थी—असली तितली।

धीरे धीरे उसके पंख खुलने लगे। खुलकर हिलने लगे। फिर सवेरा हुआ, सूरज निकला; उसकी किरणें तितलीके पंखोंपर पड़ीं। किरणोंकी गर्मीसे पंख सूख गए। उनके रंग चमकने लगे। तितलीने अपने सूखे सुंदर पंखोंको फड़फड़ाया और हवामें लहराती हुई पंख फैलाकर उड़ गई।

अब यह बाग बागकी सैर करेगी, डाल डाल जाकर बैठेगी, फूल फूल रस चूसेगी और अपने रंग-बिरंगे पंखोंसे बच्चोंका मन बहलाएगी। ●

यह तितली है!

धूप खिली है,
हवा चली है,
डाल हिली है,
अभी उड़ी जो फूल फूल पर,
वह तितली है!
रंग-बिरंगे कोमल पर हैं,
फूलों ही जैसे सुंदर हैं!
हरी घास पर,
दौड़ लगा कर,
पकड़ा तुमने—
नहीं मिली है!
उड़ने दो, मत पकड़ो
उसको,
झर जाएंगे पंख सुनहरे!
कौन उड़ेगा फिर फूलोंपर
एक फूल बन?
फूल सरीखी सुंदर तितली
उड़ निकली है!
हवा चली है,
धूप खिली है,
डाल हिली है,
अभी उड़ी जो फूल फूल पर,
वह तितली है!

—प्रयाग शुक्ल

दुनिया का सबसे धनी देश

जरा अनुमान तो लगाओ कि दुनियाका सबसे धनी देश कौनसा है। तुम झटसे कहोगे—अमरीका। गलत—जरा और सोचो। अब शायद तुम कहोगे कि यह खुशकिस्मत देश या तो इंग्लैंड होगा या जर्मनी या फ्रांस।

नहीं, भई, तुम्हारे सब अनुमान गलत हैं। दुनियाका सबसे धनी देश वह है जिसका नाम भी शायद तुमने दो-चार साल पहले ही सुना होगा। इसलिए कि इससे पहले वह देश था ही नहीं। इस देशका नाम है कुवैत। यह दुनियाका सबसे धनी देश भी है और मजेकी बात यह कि सबसे छोटा भी। इसकी कुल आबादी केवल चार लाख है—कानपुर शहरकी आधी आबादीसे भी कुछ कम। क्षेत्रफल है केवल छह हजार वर्ग मील—हमारे देशके किसी भी जिलेके बराबर। फारसकी खाड़ीके तिकोनेपर स्थित यह राज्य इराककी राजधानी बगदादसे लगभग उतना ही दूर है जितना दिल्लीसे कानपुर।

इस नन्हे-मुन्नेसे देशमें न कोई नदी है न नहर। कहीं कहीं खजूरोंके कुछ पेड़ोंके सिवाय हरियालीका कहीं नाम नहीं। चारों तरफ बस रेत ही रेत है। तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि इस धनी देशमें पीनेका पानी तक नहीं मिलता! पीनेका पानी मिले या न मिले, पर यह दुनियाका सबसे धनी देश जरूर है। यहांके हर निवासीकी वार्षिक औसत आय लगभग बीस हजार रुपये है। औसत आमदनीका मतलब यह होता है कि अगर एक घरमें एक पिता है, एक मां है, एक दादा है और तीन बच्चे हैं, तो कुल आदमी हुए छह, और घरकी कुल आय एक लाख बीस हजार रुपये हो, तो हर व्यक्तिकी आय बीस हजार रुपये होगी। इस तरह कुवैतका हर परिवार लखपति है। जरा सोचो तो कि अमरीकाकी औसत आमदनी केवल बारह हजार रुपये वार्षिक ही है।

अब तुम सचमच पूछोगे कि अगर वहांपर कोई पैदावार भी नहीं होती, कोई उद्योग भी नहीं है, तो फिर क्या वहां 'अलीबाबा चालीस चोर'के किस्सेका कोई खजाना है कि लोगोंके पास पैसा ही पैसा है और यह पता नहीं चलता कि यह पैसा कहांसे आया।

कुवैत

मज़हर शम्सी

हां, भई, बात ही कुछ ऐसी है। कुवैतके पास एक ऐसी दौलत है जिसके सामने एक छोड़ हजार कुबेरोंके खजाने भी फीके पड़ जाएं। कुवैतकी इस दौलतका राज है तेल, जिसे आजकल काला सोना भी कहते हैं। कहते हैं कि आजके समयमें तेलका महत्व उतना ही है जितना कि इनसानके जिस्ममें खूनका। जानते हो दुनिया भरमें जितना तेल निकलता है, उसका दसवां भाग कुवैतके पास है। अगर दुनिया भरमें तेल निकलना बंद हो जाए, तो भी कुवैतके रेगिस्तानमें इतना तेल है कि पच्चीस साल तक सारी दुनियाका काम चलता रहे।

दुनियामें कहीं भी कभी ऐसा नहीं हुआ कि तेलके लिए अगर सौ कुएं खोदे गए हों, तो उनमेंसे दससे अधिकमें तेल निकल आए। लेकिन कुवैतमें नब्बे कुओंसे तो अवश्य ही तेल निकल आता है और कई बार तो सौमेंसे हर कुएंमेंसे निकलता है।

आजसे सत्रह साल पहले कुवैतमें तेल निकलना शुरू हुआ था, तभीसे उसकी किस्मत पलट गई। उन दिनों वहां अंग्रेजोंका राज्य था। वहांके लोग मछलियां पकड़ते और समुद्रमें गोता लगाकर मोती निकालनेका काम करते थे। जनता बहुत गरीब थी।

लेकिन तेल निकलनेपर वहांके शासककी किस्मत खुल गई। अंग्रेज उसे तेलकी आयमेंसे कुछ हिस्सा देते थे। धीरे धीरे यह हिस्सा बढ़कर इतना हो गया कि अगर कुवैतके अमीर चाहें, तो इंग्लैंडके चौथे भागको खरीद लें। धनके साथ कुवैतके लोगोंमें आजाद होनेकी इच्छा भी बढ़ी और दो साल पहले कुवैत भी एक आजाद देश हो गया।

तुम्हें यह जानकर शायद ताज्जुब हो कि इस छोटेसे देश कुवैतमें जितने मकान हैं, लगभग उतनी ही कारें हैं। यहां हर चीज बाहरसे आती है, यहां तक कि तरकारियां भी बाहरसे ही मंगवानी पड़ती हैं। जब पानी ही नहीं, तो तरकारियां कैसे उगेंगी। एक मजेदार बात यह है कि जमीन जितनी महंगी कुवैतके बड़े बाजारमें है, उतनी दुनियाके किसी भी हिस्सेमें नहीं। वहां एक वर्ग गज धरतीकी कीमत है चालीस हजार रुपये। यही कारण है कि वहांकी इमारतें बहुत मंजिलोंकी होती हैं।

अब तो यहांकी सरकार अपने देशवासियोंके उपयोगके लिए स्वयं पानी तैयार करती है। तुम कहोगे— भला वह कैसे? हां तो, ऐसे बड़े बड़े टैंक तैयार किए गए हैं जिनमें हजारों मन समुद्री पानी एक साथ खौलाया जाता है। इस पानीमेंसे जो भाप निकलती है, उसे इकट्ठा करके पानी बनाया जाता है। इस तरह अब यह पानी नमकीन नहीं रहता।

चूंकि यहां पानीकी कमी है, इसलिए यहांपर एक नई किस्मकी खेती होनी आरंभ हो गई है। इसमें धरतीको खोदा नहीं जाता। कंकरों और पत्थरोंके ढेरोंमें बीज डाल देते हैं, फिर उनमें विशेष प्रकारकी खाद और पानी दिया जाता है। तरकारियां पत्थरों ही में जड़ें निकाल लेती हैं।

कुवैतके अधिकांश लोगोंकी पोशाक तो अंग्रेजी कोट-पैंट ही है, लेकिन पुराने विचारोंके लोग अब भी एक लंबा-सा तहमद पहनते हैं जिसपर एक पट्टी कसकर बांध दी जाती है। उसके ऊपर कोट होता है और कोटके ऊपर लंबा-सा चोगा।

यहांके लोगोंका खाना दूसरे अरब देशोंकी तरह ही होता है। यहां लोग मांस खाते हैं लेकिन बिना मिर्च-मसालेके भुना हुआ। साथमें खाते हैं खमीरी रोटी, उबले हुए चावल, तरकारियां और फल। फलोंके यहांके लोग बहुत शौकीन होते हैं, हालांकि फल यहांसे कई सौ मील दूरसे मंगवाए जाते हैं।

अब कुवैतमें हुई एक दावतका हाल सुनो, जिसमें मैं भी था। खानेपर कोई सौ आदमी आमंत्रित थे। मगर जब खाना लगाया गया, तो मालूम होता था कि पांच सौ आदमियोंके लिए भी ज्यादा होगा। यह खाना चादरें बिछाकर जमीनपर ही सजाया गया और मेहमान, जिनमें अंग्रेज, अमरीकन और फ्रांसीसी भी थे, आस पास बैठ गए।

(शेष पृष्ठ ५१ पर)

बेहतर स्वाद और सर्वदा बढ़ती हुई मांग मॉर्टन की लेक्टोबनबन्स की ऊँची क्वालिटी के प्रमाण हैं !

मॉर्टन ने ही इस प्रकार के निर्माण का काफी अनुसन्धान के पश्चात् श्री गणेश किया था और

अभी भी इसके समिश्रणों की शुद्धता व पौष्टिक संपूर्णता का ऊँची स्तर कायम रखते आ रहे हैं ।

जब आप खरीदें तो

MORTON'S

लेक्टोबनबन्स

सी० एण्ड ई० मॉर्टन (इंडिया) लि०

उच्च श्रेणी की मिठाइयों और दुग्ध पदार्थों के निर्माता

ASP/M-8/63

(इस स्तंभमें बच्चोंके लिए नव प्रकाशित पुस्तकोंका परिचय दिया जाता है, जिससे बच्चे उन्हें पढ़ें और अपनी ज्ञानकी प्यास बुझाएं। परिचयके लिए पुस्तकोंकी दो दो प्रतियां भेजी जानी चाहिएं। —संपादक)

● साहसकी यात्राएं (पृष्ठ संख्या ९४); मूल्य : डेढ़ रुपया ● मेल की महिमा (पृष्ठ संख्या १००); मूल्य : डेढ़ रुपया ● चार नाटक (पृष्ठ संख्या १३६); मूल्य : दो रुपय ● बोध कथाएं (पृष्ठ संख्या १३४); मूल्य दो रुपये; चारों पुस्तकों के संपादक : यशपाल जैन; प्रकाशक : सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली ● अहिंसा की कहानी (पृष्ठ संख्या ४०); लेखक : यशपाल जैन; चित्रकार : प्रद्युम्न ताना ; मूल्य : पौने दो रुपये; प्रकाशक : गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली तथा सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली।

पहली पुस्तक है **'साहसकी यात्राएं'**। इसमें तीन रोमांचकारी यात्राओंके रोचक वृत्तांत संग्रहीत हैं। पहला वृत्तांत है चीनी यात्री फाहियानकी भारत-यात्राका, जिसे कमलेश्वरने लिखा है। दूसरा वृत्तांत हिमालयकी सबसे ऊंची चोटी एवरेस्टकी चढ़ाइयोंका विवरण है। इसे गोविन्द 'चातक' ने लिखा है। तीसरे वृत्तांतमें गंगा नदीके उद्गम-स्थल गोमुखकी यात्राका वर्णन है। इसके लेखक हैं यशपाल जैन।

किशोरोंमें साहसिक यात्राएं करनेका बड़ा चाव होता है। इस पुस्तकका उद्देश्य इसी चावको बढ़ावा देना है, ताकि उनके मनमें जीवनमें आगे बढ़नेका हौसला पैदा हो और वे ज्ञान-प्राप्तिके मार्गमें आने वाली कठिनाइयोंको हंसते हंसते झेल सकें।

तीनों यात्रा-वृत्तांत रोचक और सरल भाषामें लिखे गए हैं। दूसरी पुस्तक **'मेल की महिमा'** है। इसमें मेलकी महिमा-संबंधी 'मिल-जुलकर काम करो' शीर्षकसे हरिश्चन्द्र विद्यालंकारकी कुछ कहानियां, 'पढ़ेंगे-लिखेंगे' सुशीलाका एक एकांकी नाटक तथा 'मंगू भैया' शीर्षकसे लीला अवस्थीकी कुछ कहानियां संग्रहीत हैं।

ऐसा कौन है जो जीवन और समाजमें मेलकी महिमा को नहीं जानता-मानता है? जिस प्रकारका शासन आज हमारे देशमें चलता है उसकी बुनियाद ही मिल-जुलकर काम करनेकी भावनापर है। समाजवाद और जनतंत्र इसके बिना चल नहीं सकते। इसी लिए यह जरूरी हो जाता है कि हमारे देशके बच्चोंमें शुरूसे मिल-जुलकर काम करनेकी आदत डाली जाए। इसी विचारको ध्यानमें रखकर इस पुस्तकको तैयार किया गया है। पुस्तकमें संग्रहीत सभी कहानियां मनोरंजक हैं। इसलिए पुस्तक पढ़नेसे जहां बच्चोंका मन बहलेगा, वहां उन्हें कुछ सीखनेको भी मिलेगा।

सभी कहानियोंकी भाषा मुहावरेदार और सुबोध है।

तीसरी पुस्तक **'चार नाटक'** में चार नाटक संग्रहीत हैं। दो विष्णु प्रभाकरके हैं—'मुरब्बी' और 'मनके जीते जीत'। 'वसीयत' बर्नार्ड गिल्बर्टका है—और 'ईश्वरका मंदिर' नार्मन निनेलका है। दोनोंका अनुवाद किया है श्रीकृष्णने।

'मुरब्बी' में बताया गया है कि ऊंचा वह है जिसके दिलमें दूसरोंके लिए दर्द है। 'मनके जीते जीत' में लेखकने बताया है कि दुनियामें असली जीत मनकी है। 'वसीयत' में एक ऐसे बूढ़े बैलकी कथाको नाटकका रूप दिया गया कि जिसकी मृत्युसे घरके सब झगड़े खत्म हो जाते हैं। 'ईश्वरका मंदिर' में सीख दी गई है कि बुराईका बदला भी भलाई से दो।

चारों नाटक अच्छे हैं। पढ़नेपर आनंद भी मिलता है और शिक्षा भी। इन्हें रंगमंचपर सरलतासे खेला जा सकता है।

भाषा किशोरोंके लिए उपयुक्त है। शैली सुबोध और रोचक है।

चौथी पुस्तक **'बोध कथाएं'** में श्रीकृष्ण, अशोक और वियोगी हरिकी छोटी छोटी कहानियां संग्रहीत हैं। 'ये कोरी कहानियां नहीं हैं। इनके पढ़नेमें आनंद आता है और साथ ही गहरी शिक्षा भी मिलती है। ये कहानियां जीवनको ऊपर उठाने वाली हैं। इन्हें पढ़कर पता चलता है कि असली सुख क्या है और उसे कैसे पाया जा सकता है।'—प्रकाशकका यह दावा सही है। बच्चोंके साथ साथ प्रौढ़ोंके लिए भी ये कथाएं उपयोगी सिद्ध होंगी।

सभी कहानियोंकी भाषा किशोर आयुके बच्चोंको ध्यानमें रखकर सरल, सुबोध और रोचक रखी गई है।

पांचवी पुस्तकका नाम है **'अहिंसा की कहानी'**।

जिसने महात्मा गांधीका नाम सुना होगा, उसने 'अहिंसा' शब्द भी सुना होगा। लेकिन ऐसे लोग बहुत कम हैं जो अहिंसा शब्दका सही अर्थ समझते हों। इस पुस्तकमें वही समझानेकी कोशिश की गई है। अहिंसा क्या है, पुराने जमानेसे लेकर अब तक उसके विकासके लिए क्या क्या प्रयोग किए गए, अहिंसाको महात्मा गांधीने किस रूपमें देखा और उसे एक अमोघ अस्त्रका रूप देनेके लिए क्या क्या नए प्रयोग किए — इन सब बातोंके बारेमें लेखकने बड़े ही रोचक ढंगसे लिखा है और पुस्तककी भाषा तथा शैली ऐसी सरल और सुबोध रखी है कि एक बार पुस्तक हाथमें लेकर खत्म किए बिना जी नहीं मानता।

पुस्तकको विशेष रूपसे सजीव, आकर्षक तथा उपयोगी बनानेके लिए उसमें काली घाट मुद्रण-शैलीके बहुतसे चित्र दिए गए हैं, जिन्हें श्री प्रद्युम्न तानाने तैयार किया है।

पांचों पुस्तकोंकी साज-सज्जा और छपाई-सफाई सन्तोषजनक है और मूल्य भी उचित है।

—लक्ष्मीचंद्र गुप्त

लोक कथा

पहले सोचो

www.kissekahani.com

एक जंगलमें एक चूहा रहता था। वह बहुत बातूनी और घमंडी था। एक दिन उसने अपनी पत्नीसे कहा, "तुम्हें पता नहीं, मैं इस जंगल का राजा हूं?"

चुहियाने कहा, "कौन कहता है तुम राजा हो?"

चूहा बोला, "मैं कहता हूं। तुम जानती हो इस जंगलका हर जानवर दूसरे जानवरसे डरता है? बंदर लकड़बग्घेसे डरता है और लकड़बग्घा चीतेसे डरता है; चीता शेरसे डरता है और शेर हाथीसे डरता है। और क्या तुम्हें पता है हाथी किससे डरता है?"

चुहियाने कहा, "नहीं, मुझे तो नहीं पता।"

इसपर चूहा बोला, "हाथी मुझसे डरता है! और इसलिए मैं ही जंगलका राजा हूं।"

चुहियाने कहा, "अगर ऐसी बात है, तो फिर मैं जंगलकी रानी हुई।"

"इसमें क्या शक है। अगर तुम्हें यकीन न हो, तो मेरे साथ आओ, मैं इसे सिद्ध करूंगा," यह कहकर चूहा चुहियाके आगे आगे जंगलकी ओर चल पड़ा।

रास्तेमें उन दोनोंने एक बंदरको एक वृक्षकी चोटीपर बैठे देखा। चूहे और चुहियाको देखकर बंदरने उनपर एक सड़ा हुआ फल दे मारा।

चूहेने चिल्लाकर कहा, "यह सब बंद करो। तुम जानते नहीं कि मैं जंगलका राजा हूं?"

बंदरने हंसते हुए कहा, "वाह रे काठके उल्लू! तुम भला जंगलके राजा कैसे बने?"

चूहेने कहा, "मैं तुम्हें समझाता हूं। तुम लकड़बग्घेसे डरते हो और लकड़बग्घा चीतेसे डरता है, चीता शेरसे डरता है, शेर हाथीसे डरता है और हाथी मुझसे डरता है...."

"ऐसा कौन कहता है?" बंदरने घुड़ककर पूछा।

चूहेने अभिमान-मिश्रित स्वरमें कहा, "सभी ऐसा कहते हैं।"

"शायद तुम्हारी बात ठीक हो, परंतु मुझे इसमें संदेह है। कुछ कहनेसे पहले तुम्हें अच्छी तरह सोच लेना चाहिए," बंदर बोला। इसपर चूहेने चिल्लाकर कहा, "वह देखो लकड़बग्घा आया।" यह सुनते ही बंदर लपककर वृक्षकी एक ऊंची शाखापर चढ़ गया।

तब तो चूहेने चुहियासे बड़े अभिमानसे कहा, "देखा, बंदर लकड़बग्घेसे कितना डरता है!"

वे दोनों फिर आगे चल पड़े। रास्तेमें उन्होंने एक लकड़बग्घेको झाड़ीमेंसे निकलते हुए देखा। लकड़बग्घेने कहा, "आज तो मैं चूहे और चुहिया-का नाश्ता करूंगा।"

"तुम मुझे नहीं खा सकते। बेकारकी बातें न बनाओ। क्या तुम्हें पता नहीं कि मैं जंगलका राजा हूं?" चूहेने अकड़कर जवाब दिया।

लकड़बग्घेने हंसते हुए कहा, "चूहे महाशय, तुम जंगलके राजा कैसे बने?"

"मैं तुम्हें समझाता हूं। तुम चीतेसे डरते हो,

चीता शेरसे डरता है, शेर हाथीसे डरता है और हाथी मुझसे डरता है," चूहेने समझाया।

लकड़बग्घेने पूछा, "ऐसा कौन कहता है?"

"सभी ऐसा कहते हैं," चूहेने बड़े गर्वसे कहा।

"तुम भले ही ऐसा सोचो, परंतु मुझे इसमें संदेह है। कुछ बोलनेसे पहले तुम्हें खूब अच्छी तरह . . ." अभी लकड़बग्घेकी बात पूरी भी न हो पाई थी कि चूहेने एकदम चिल्लाते हुए कहा, "वह देखो चीता आया!" यह सुनते ही लकड़-बग्घा नौ-दो ग्यारह हो गया।

फिर करो

चूहेने एक बार फिर अभिमानसे चुहियाकी तरफ देखा और कहा, "देखा, मैंने कैसे लकड़बग्घे-को बेवकूफ बनाया। क्या तुमने नहीं देखा कि चीतेका नाम सुनते ही लकड़बग्घा कैसे दुम दबा-कर भाग खड़ा हुआ?" इस प्रकार बातें करते चूहा और चुहिया आगे जंगलकी ओर बढ़ रहे थे कि उन्हें एक चीता आता हुआ दिखाई दिया।

चूहेने चीतेसे कहा, "रुक जाइए।"

"मैं लकड़बग्घेका पीछा कर रहा हूं, तुम मुझे रोकने-

शम्सुद्दीन

वाले कौन होते हो?" चीतेने क्रुद्ध होकर कहा।

"मैं जंगलका राजा हूं," चूहा जरा अकड़कर बोला।

इसपर चीतेने गुर्राते हुए कहा, "तुझ नाचीज की यह हिम्मत कि मुझे रोकनेका साहस करे!"

"मुझे तुमको रोकनेका पूरा हक है; तुम शेरसे डरते हो, शेर हाथीसे डरता है और हाथी मुझसे डरता है," चूहेने अपनी वही पुरानी बात दुहराई।

"ऐसा कौन कहता है?" चीतेने पूछा।

"सभी ऐसा कहते हैं।"

"ओह! तुम्हें सबक सिखाना ही होगा। फिलहाल मैं तुम्हें यही सलाह दूंगा कि बोलनेसे पहले अच्छी तरह सोच-विचार लिया करो।" यह कहकर चीता तेजीसे झाड़ीकी ओटमें चला गया।

इसपर चूहा चुहियासे कुछ कहना ही चाहता था कि एकाएक एक शेरकी दहाड़ सुनाई दी। जैसे ही उन्होंने पीछे मुड़कर देखा, उन्हें अपनी तरफ एक क्रुद्ध शेर आता हुआ दिखाई दिया।

M. SHAHID
H. No.813, Chotta Bazar,
Kashmere Gate, Delhi-110006
Mob. No.9250627395
msh[illegible]d.shahid786@gmail.com

सर्दी ?
पॅप्स
लीजिये !

SHBI-FP-I HIN

पेप्स की टिकियाँ धीरे धीरे चूसिये,
आप शीघ्र ही महसूस करने लगेंगे कि इनकी आरोग्यकारी भाप अपना प्रभाव दिखाने लगी है... ये गले की तकलीफ और सीने की जकड़न में आराम पहुँचाती है...खाँसी और सर्दी पैदा करने वाले कीटाणुओं का नाश करने में सहायता देती हैं। आपको शीघ्र आराम मिलता है!

- ★ गले की तकलीफ और ब्रॉंकाइटिस में लाभदायक
- ★ बच्चों को बखटके दी जा सकती है
- ★ सभी जनरल स्टोर्स में और केमिस्टों के यहाँ मिलती है

पॅप्स
शीघ्र आराम पहुँचाती है

महाराष्ट्र, गुजरात तथा मध्य प्रदेश के वितरक : **मेसर्स केम्प एण्ड कं. लि.**
एल्फिन हाउस, ८८ सी ओल्ड प्रभादेवी रोड, पोस्ट बाक्स नं. ७०३३, बम्बई–२८

शेरने चूहेसे पूछा, "चीता कहां चला गया?"

चूहेने कहा, "मैं तुम्हें नहीं बताऊंगा, जंगलका राजा होनेके नाते मेरा यह कर्त्तव्य है कि मैं अपनी सारी प्रजाकी रक्षा करूं।"

"कौन राजा है और कौन प्रजा है?" शेरने दहाड़ते हुए पूछा।

"मैं राजा हूं। तुम हाथीसे डरते हो और हाथी मुझसे। इसलिए मैं इस जंगलका राजा हूं।"

"ऐसा कौन कहता है?" शेरने क्रोधसे कहा।

"सभी ऐसा कहते हैं," चूहेने उत्तर दिया।

शेरने कहा, "जरा संभलकर बोलो; कुछ कहनेसे पहले अच्छी तरह सोच लेना चाहिए।"

उसी समय एक हाथी उनकी ओर आता दिखाई दिया। हाथीको देखते ही शेर जंगलकी ओर भाग गया। अब चूहा और चुहिया उस विशालकाय हाथीके आगे खड़े थे।

चूहेने हाथीसे कहा, "मैं तुम्हारा राजा हूं। मुझे तुमसे कुछ बातें करनी हैं।"

हाथीने चिंघाड़ते हुए कहा, "क्या कहा? तुम हमारे क्या हो?"

चूहेने फिर अपना वाक्य दोहराते हुए कहा, "हां, मैं तुम्हारा राजा हूं, यह बहुत सीधी-सी बात है। तुम जानते हो बंदर लकड़बग्घेसे डरता है, लकड़बग्घा चीतेसे डरता है, चीता शेरसे डरता है, शेर तुमसे डरता है और तुम मुझसे डरते हो! अब हुआ न मैं तुम्हारा राजा?"

"मैं तुमसे डरता हूं? ऐसा कौन कहता है?" हाथीने गुस्सेमें भरकर पूछा।

चूहेने उत्तर दिया, "मैं!"

"बहुत अच्छा, अब मैं तुम्हें बताऊंगा कि मैं तुमसे डरता हूं या तुम मुझसे डरते हो," यह कहते हुए हाथीने अपना एक पैर जरा आगे रखा और चूहेको अपने निकट ले आया, फिर अपनी सूंडमें उठाकर आकाशमें कई चक्कर खिला दिए।

"कृपा करके मुझे नीचे जमीनपर उतार दीजिए," चूहेने रोते हुए कहा।

हाथीने कहा, "एक शर्त है, पहले तुम मुझे वचन दो कि तुम कभी बेहूदा बातें नहीं करोगे।"

"मैं आपको वचन देता हूं, मैं आगे फिर कभी ऐसा नहीं करूंगा। मुझे जमीनपर उतार दीजिए।"

हाथीने आदेशके स्वरमें कहा, "अब घरको जाओ और अपना सुधार करो। इस बातका ध्यान रखो कि अगर भविष्यमें कोई गलत विचार तुम्हारे मनमें आए, तो पहले उसकी जांच-पड़ताल कर लो और बोलनेसे पहले अच्छी तरह सोच-विचार लो।"

चूहेने हाथ जोड़कर सिर झुकाया और फिर चुहियाको साथ लेकर भाग निकला। ●

दुनियां का सब से धनी देश (पृष्ठ ४५ से आगे)

खानेमें अधिक नहीं तो तीस प्रकारके गोश्तके पकवान तो जरूर होंगे। सभी प्रकारके पक्षी थे। चार-पांच किस्मके चावल थे। लेकिन इस खानेकी सबसे मजेदार चीज थी 'ऊजी'।

यह एक विचित्र खाना है। कहते हैं कि मुर्गीके एक अंडेको उबालकर और छीलकर एक साफ किए कबूतरके पेटमें मसाले समेत रख देते हैं। फिर ऐसे कई कबूतरोंको मुर्गीके पेटमें रखा जाता है। इसके बाद ऐसी कई मुर्गियोंको एक दुंबेके पेटमें डाला जाता है। फिर ऐसे चार दुंबे एक ऊंटके पेटमें पकाए जाते हैं। ऊंटका गोश्त तो गरीबोंको बांट दिया जाता है। लेकिन खानेपर दुंबे मौजूद थे, उनका पेट काटा तो मुर्गियां निकल पड़ीं, फिर कबूतर और अंडे।

खानेमें मीठी चीजें भी कई थीं।

जब हम खाना खाकर उठे, तो खाना वैसे ही पड़ा था, मालूम होता था—कहीं कहींसे किसीने छेड़ा है। वहांके रिवाजके मुताबिक फिर शाही महलके उच्च कर्मचारी उसी खानेपर बैठे। उनके खानेके बाद घरेलू कर्मचारियोंकी बारी आई। उनसे भी जो खाना बचा, वह बाहर खड़े फकीरोंमें बांट दिया गया। सबसे दिलचस्प बात यह है कि कुवैतमें फकीर हैं ही नहीं। चूंकि रमजानके महीनेमें खैरात देना जरूरी है, इसलिए इन लोगोंको ट्रकोंमें भरकर और साथमें फीस देकर कुवैतके बाहरसे लाया जाता है कि वे खैरात वसूल करें।

अब शायद तुम लोग भी ऐसे देशकी सैर जरूर करना चाहोगे, जहां फकीर भी फीस देकर बुलाए जाते हैं! ●

खिलौनों का डिब्बा

अब्दुलकरीम का जूता

— अरुणकुमार

बच्चो, तुमने शायद कभी एक बहुत पुरानी कहानी पढ़ी-सुनी हो। लो, आज हम तुम्हें वह मजेदार कहानी सुनाते हैं:

एक थे मियां अब्दुलकरीम।

बड़े कंजूस, मक्खीचूस। उन्होंने मिलिटरीके नीलामी मालमेंसे कभी एक जूता खरीदा था सन् '४६ में। पूरा जोड़ा नहीं था, सिर्फ एक ही जूता था। उनका खयाल था कि कभी न कभी उन्हें उसका जोड़ा भी मिल ही जाएगा। जोड़े तो मिले अनेक, लेकिन इतना सस्ता कोई नहीं मिला और अकेला भी नहीं मिला। इसलिए मियां अब्दुलकरीम उस एक ही जूतेको बराबर पहनते आ रहे थे।

बाजारमें उन्हें जो भी देखता, वही उनकी हंसी उड़ाता। लेकिन उन्हें इसकी परवाह नहीं थी। भले ही दूसरे पैरमें बिवाइयां फट गई हों। उन्होंने उस जूतेको इतना पहना, और पहन पहन कर इतना तोड़ा कि अंतमें मोचीने भी उसपर पेबंद लगानेसे इनकार कर दिया। उसका वजन भी इतना हो गया कि उसके बराबर ठोस लोहेके जूतेका भी न होता। जब उनके पैरने भी उसे पहननेसे इनकार कर दिया, तो उन्होंने उसे एक कुएंमें डाल दिया। वहांसे वह सक्केके डोलमें निकला और वह मियांका जूता मियांको वापस कर गया।

उन्होंने उसे कहीं दूर जंगलमें फेंका, तो वहांसे एक चील उसे ले उड़ी और शहरमें आकर उसकी चोंचसे वह छूट पड़ा। एक भले आदमीका सिर फूटा। जूता पहचाना गया और मियां अब्दुलकरीमको छह महीनेकी कैद काटनी पड़ गई। कैदसे छूटनेपर जूता उन्हें वापस कर दिया गया।

इस बार उन्होंने उसे समुद्रके हवाले किया। लेकिन—

अब यहांसे हमारे खिलौनोंका डिब्बा कहेगा इसकी कहानी।

सामनेके पृष्ठपर जो चित्र है, उसमें मियां अब्दुलकरीम अपना जूता समुद्रके हवाले कर वापस लपके चले जा रहे हैं। लेकिन आश्चर्य है कि जूता अब भी उनके पैरमें नजर आ रहा है, कपड़े फटे हुए हैं, बाल बिखरे हुए हैं, हाल बेहाल हैं। लगता है किसीने इन्हें पीटा है, इनकी जमकर मरम्मत की है। किसने? यदि इस प्रश्नका उत्तर चाहते हो, तो सामनेके पृष्ठकी काली रेखा 'अ' को आधार मानकर पृष्ठको पीठकी ओर मोड़ो। फिर काली रेखा 'ब' पर पृष्ठको ऊपरकी ओर मोड़ो और पहले मुड़े हुए भागको इस दोहरे मोड़पर लाकर पृष्ठके ऊपर ले आओ। पृष्ठकी दोनों तहें अच्छी तरहसे अंगूठेसे दबा दो। तुम्हें जूता कहां दिखाई दे रहा है?

क्या अब तुम कारण बता सकते हो कि जूता पहनकर वापस जानेकी सजा मियांको क्यों मिली? उन्हें किसने पीटा और इनका हाल बेहाल क्यों है?

कारण बता सकनेमें यदि तुम अपनेको असमर्थ पाते हो, तो चित्रको जरा गौर से देखो। तुम्हें एक गुण्डा जैसा तगड़ा मछेरा पानीमें मछली पकड़नेकी बंसी डाले हुए दिखाई देता है और मछलीके बजाय उसकी बंसीमें अब्दुलकरीमका नामी जूता फंस जानेपर क्रोधवश उसने अब्दुलकरीमके साथ कैसा सलूक किया होगा, यह आसानीसे तुम समझ सकते हो।

इस खेलको अपने डिब्बेमें सुरक्षित रखो और मित्रोंको कहानी सुनाते हुए दिखाओ। ●

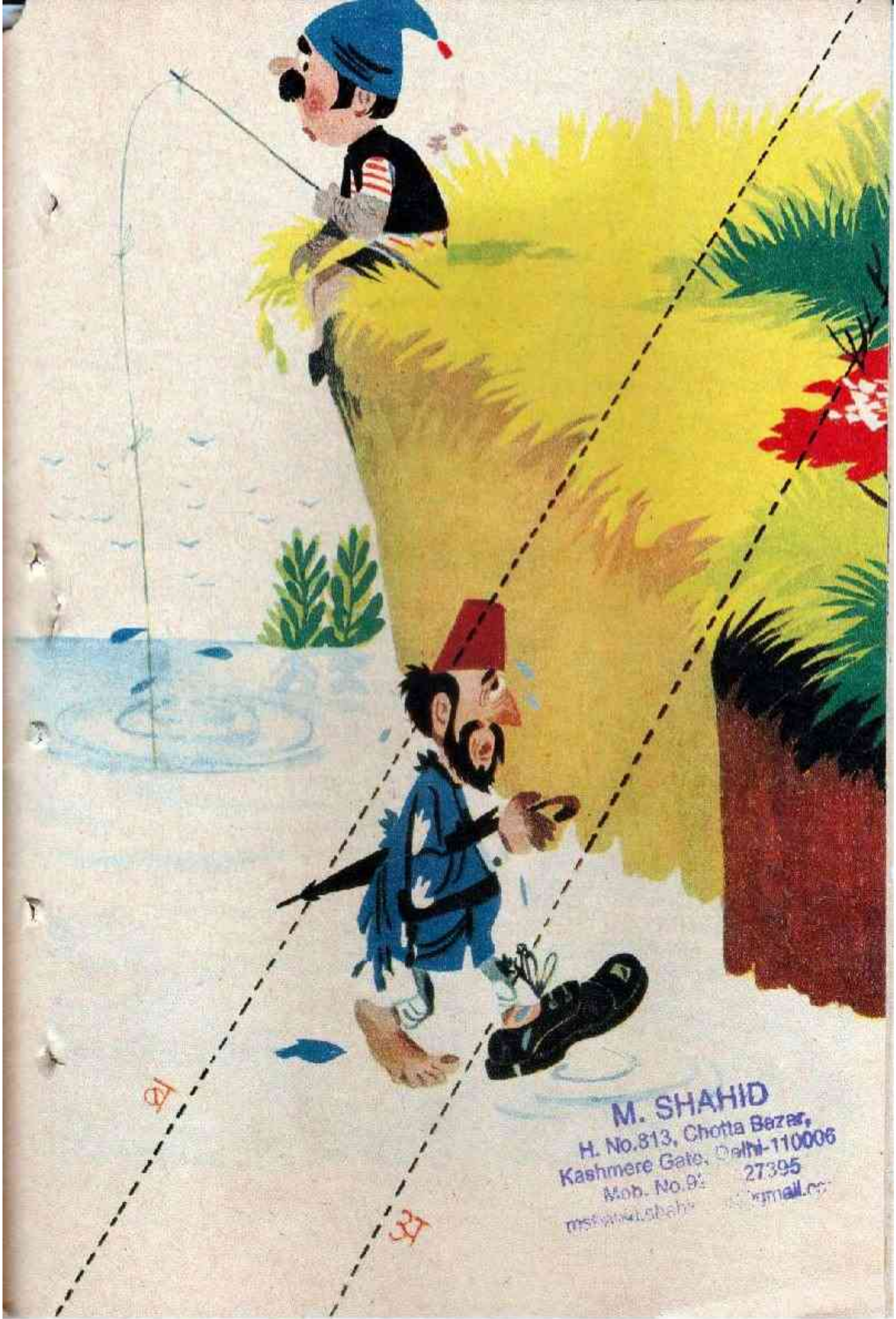

M. SHAHID
H. No.813, Chotta Bazar,
Kashmere Gate, Delhi-110006
Mob. No.9 27395
mshahid.shah gmail.com

यदि ग्रीष्म ऋतु की तपन में बार बार
'पसीना पोंछ कर' आप
थक गये हैं तो किसी सुरम्य पहाड़ी स्थान
पर छुट्टी बिता कर
तरोताजा बनिये।

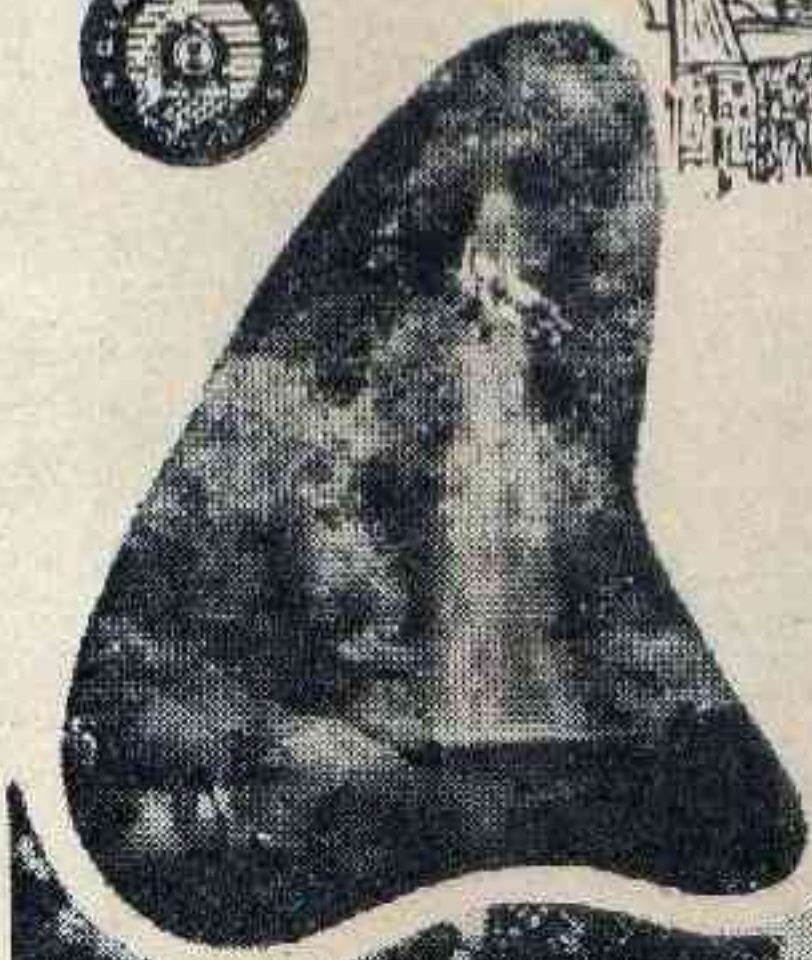

गर्मी की तपन से
बचने के लिए आप किसी
भी शीतल पहाड़ी स्थान को चुन कर आनन्ददायक
छुट्टियां बिताइये। पहाड़ी स्थानों की रेल यात्रा के लिए
आप पहले, दूसरे और तीसरे वर्ग के लिए एक तरफा किराये
के ड्योढ़े पर वापसी यात्रा की रियायत के हकदार हैं—
बशर्ते कि यात्रा-स्थल की दूरी २४० किलोमीटर से
अधिक हो। यह रियायत ता. १ अप्रैल १९६६ से
लागू है। विशेष विवरण किसी भी स्टेशन मास्टर से प्राप्य है।

मध्य रेलवे
द्वारा प्रकाशित

बुच्चूमलके कारनामे (पृष्ठ २३ से आगे)

एक बौना लड़का अपना सिर हिलाता हुआ बोला, "कितना अज्ञानी जीव है यह! अरे, तो फिर खरखरे भाईको किसने खा लिया? जबसे वह मोड़ूमल और मेठूमलको लेकर गए, तबसे कितने दिन गुजर गए हैं। अगर उन्हें राक्षसने न पचा लिया होता, तो क्या वह वापस न आते?"

"और नलकू भाईको किसने अपने पापी पेटके हवाले किया?" एक दूसरेने पूछा। "वह खरखरे भाईकी खोजमें गए और अब तक वापस नहीं आए।"

"और चंचलको किसने गड़प कर लिया? सिर्फ सौ सिरवाले राक्षसने। हालांकि उसके लिए किसीको इतना अफसोस नहीं है, क्योंकि वह एक तरहसे शैतानकी दुम था। फिर भी किसीका भोजन बननेमें कष्ट तो होता ही है।"

कुछ देर विचार करके सुबोधने कहा, "विज्ञान किसी ऐसे सौ सिरोंवाले राक्षसके बारेमें नहीं बताता। इसलिए हम कह सकते हैं कि ऐसा कोई प्राणी नहीं होता।"

"लेकिन विज्ञान उनके न होनेके बारेमें भी कुछ नहीं बताता," एक बौनेने तर्क रखा। "इसलिए हम कह सकते हैं कि वे होते हैं!"

इसी तरह बहस चलती रही। बौने ग्रामवासियोंने यह स्वीकार नहीं किया कि सौ सिरोंवाला राक्षस नहीं होता और सुबोधने यह स्वीकार नहीं किया कि वह होता है, इसलिए उन्होंने सुबोधको प्रेमसे खाना खिलाया। फिर वे उसे गांवके बाहर तक छोड़नेके लिए आए। उन्हें पक्का विश्वास था कि वह सीधा मौतके मुंहमें जा रहा है, इसलिए उनकी आंखोंमें आंसू थे।

उसी समय धूलका एक गुब्बार-सा उड़ता दिखाई दिया। जैसे जैसे वह नजदीक आता जाता, तैसे तैसे बड़ा होता जाता। पतंगपुरके बौनोंमेंसे प्रत्येक पत्ता तोड़ भाग खड़ा हुआ। एक बार घरके भीतर घुस जानेपर उन्होंने खिड़कियोंसे झांककर देखना शुरू किया। उन्हें लगा कि सौ सिरोंवाला राक्षस बस आ ही गया है! लेकिन सुबोध बिल्कुल भी नहीं डरा। वह सड़कके बीचोंबीच जहां खड़ा था वहीं खड़ा रहा।

जल्दी सबको पता चल गया कि इतनी धूल तीन मोटरकारोंके कारण उड़ रही थी, जो एकके पीछे एक चली आ रही थीं। पहली कारमें एक लाल-सुर्ख सेब रखा हुआ था, दूसरीमें एक पकी हुई नाशपाती और तीसरीमें एक दर्जन आलूबुखारे। जब पहली कार सुबोधके पास पहुंची, तो वहीं रुक गई और उसमेंसे खरखरे भाई, नलकू भाई और चंचल कूदकर नीचे आए। उसी समय सबके सब बौने अपने अपने घरोंसे निकल पड़े और दौड़ते हुए आकर उन्होंने तीनोंको—चंचल सहित—गलेसे लगा लिया। उन्होंने उनसे राक्षसके बारेमें पूछा। जब उन्हें पता चला कि राक्षस न कभी था, न कभी होनेकी संभावना है, तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ।

"तो फिर आप लोगोंको इतनी देर कैसे लग गई?" उन्होंने पूछा।

"हम लोग लड़कियोंको फलोंकी फसल काटनेमें सहायता दे रहे थे," चंचलने उत्तर दिया।

यह जानकर सबके सब हंस पड़े।

"मैंने बुरा कुछ नहीं किया," चंचलने चोट खाए स्वरमें उत्तर दिया। "मैंने भी दूसरोंकी तरह काम किया। मैं—क्या कहना चाहिए?—अब सुधर जो गया हूं।"

खरखरे भाई और नलकू भाईने भी इसका समर्थन किया। लड़कियां उसके कामसे इतनी प्रसन्न हुई थीं कि उन्होंने इन फलोंकी सौगात सारे गांवके लिए भेजी है! इससे पतंगपुरके वासी खिल उठे, क्योंकि फल उन्हें अच्छे लगे थे।

खरखरे भाईने सुबोधको अपनी कारमें हरा गांव छोड़ आनेके लिए कहा। तुरंत ही वे रवाना भी हो गए।

ग्रामवासियोंने चंचलको सुधरा देखकर राहतकी सांस ली। लेकिन उस दिन तो उन्हें सबसे ज्यादा ताज्जुब हुआ, जब उन्होंने देखा कि वह नदीके किनारे बैठा अपने कपड़े धो रहा है। उससे भी ज्यादा तब, जब चंचलने उन्हें बताया कि लड़कियोंने उसे सामूहिक नृत्यके लिए आमंत्रित किया है। वे तो स्वप्नमें भी यह नहीं सोच सकते थे कि चंचलके भीतर इतना बड़ा परिवर्तन हो सकता है! (क्रमशः)

(रूपांतरकार : विनोदकुमार)

नन्हे-मुन्नों के लिए नए शिशु गीत

पिछले कई अंकोंसे 'पराग' में शिशु-गीत छापे जा रहे हैं। इन शिशु-गीतोंके चयनमें काफी सावधानी बरती जाती है, क्योंकि शुद्ध शिशु-गीत लिखना उतना आसान नहीं है, जितना समझा जाता है। इसलिए अच्छे गीत बहुत कम लिखे जाते हैं। ये गीत ऐसे होने चाहिएं कि इन्हें चारसे छह साल तकके बच्चे आसानीसे जबानी याद कर लें और अन्य भाषाभाषी बड़े बच्चे भी इनका आनंद ले सकें। इनसे मुहावरेदार हिन्दी सरलतासे जबानपर चढ़ जाती है।

www.kissekahani.com

खटमल भैया!

खटमल भैया चुपके चुपके,
आए पास हमारे;
कहने लगे, "खाट तो छोड़ो,
सोएंगे हम प्यारे!"

गधेराम!

लैंप जलाकर चूहे दादा,
पढ़ते थे अखबार।
बंदर मामा झटपट पहुंचे,
लेकर अपनी कार।

बोले, "देखो समाचार कुछ
गधेराम का आया,
कल की महफिलमें पट्ठेने
अच्छा रंग जमाया!"

—मंगलराम मिश्र

उल्टे खेल!

लात जमाई मच्छर ने,
तो पल में टूटी रेल!
लालाजी की मोटर को है
बंदर रहा धकेल!

बल्ब गटागट पीता देखो,
आज तिलों का तेल!
उल्लू खुली धूप में आकर
डंड रहा है पेल!

कैसा पासा पलट गया है,
होते उल्टे खेल,
नींद खुली, देखा चुन्नने—
मोटर है, ना रेल!

गर्दभ राग!

बंदर ने सारंगी पाई,
चंचक चंचक खूब बजाई।
ऊंचे सुरमें गाने गाए,
गदहेराम दौड़ कर आए।

बोले, "तुम्हें न गाना आता,
सारंगी न बजाना आता,
मुझसे सुन लो गर्दभ राग,
सोई बस्ती जाए जाग!"

—प्रेमचंद्र गोस्वामी

टिनोपाल
से सबसे अधिक सफ़ेदी आती है।

आखिरी बार कपड़े नीलाते समय बस ज़रा-सा टिनोपाल मिलाइए: फिर देखिए, आपके सफ़ेद कपड़ों में कैसी चमकदार सफ़ेदी आ जाती है! शर्ट्स, साड़ियाँ, तौलिये, चद्दरें यानी सभी कपड़े और भी अधिक सफ़ेद हो उठते हैं। और इस अधिक सफ़ेदी के लिए आपका खर्च ? प्रति कपड़ा पूरा एक पैसा भी नहीं। एक चौथाई छोटा चम्मचभर टिनोपाल बाल्टी भरे कपड़ों को अधिक सफ़ेद करने के लिए काफ़ी है।

वैज्ञानिक विधि से बनाया गया व्हाइटनर, टिनोपाल हमेशा इस्तेमाल कीजिए। यह वस्त्रों को किसी प्रकार का नुक़सान नहीं पहुँचाता।

टिनोपाल अब मुहरबन्द एल्युमिनियम फॉइल पैकेट में भी मिलता है।

एक पैकेट बाल्टी भरे कपड़ों को अधिक सफ़ेद करता है। इस्तेमाल करने में आसान, इस पैकेट से न कोई फ़ज़ूलख़र्ची होती है, न कोई ज़ोखिम।

Ciba-Geigy टिनोपाल जी. आर. गायगी, एन. ए. बाल रिवटूअरलेक का रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है।
सूहिद गायगी लिमिटेड, पी. ओ. बॉक्स ९८६, बम्बई-१ बी आर

Shilpi SG 223 A Hin.

'पराग' रंग भरो प्रतियोगिता-५०

बच्चो, नीचे का चित्र है न मजेदार! काश, यह रंगीन होता, तो क्या कहना था! चलो, तुम ही रंग भरकर इसे हमारे पास २० जून तक भेज दो। हां, अगर तुम्हारा खयाल हो कि चित्रकी पृष्ठभूमिको तुम अपनी कल्पनासे और ज्यादा उभार सकते हो, तो रंगों द्वारा उसे चित्रित करनेकी तुम्हें स्वतंत्रता है। सबसे अच्छे रंग भरने वाले तीन प्रतियोगियों को एकसे सुंदर इनाम मिलेंगे और उनमेंसे दोके चित्रोंको छापा भी जाएगा। लेकिन रंग भरने वालों-की उम्र १६ सालसे अधिक नहीं होनी चाहिए और उन्हें 'वाटर कलर' ही उपयोगमें लाने चाहिएं। चित्रके नीचे-वाला कूपन भरकर भेजना जरूरी है। पूर्तियां भेजने का पता : संपादक 'पराग' (रंग भरो प्रतियोगिता नं. ५०), पो. आ. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई–१।

यहां से काटो

यहां से काटो

यहां से काटो

कूपन

'पराग' रंग भरो प्रतियोगिता-५०

नाम और उम्र ----------

पूरा पता ----------

यहां से काटो

M. SHAHID
H. No.813, Chotta Bazar,
Kashmere Gate, Delhi-110006
Mob. No.9250627395
mshahid.shahid786@gmail.com

"देखिये बाबूजी, पैरी की मिठाइयाँ मैं स्कूल से ले आया हूँ, खासकर आपके लिये।"

बड़ा चालाक है यह लड़का। स्कूल की रिपोर्ट के असर को कम करने का सबसे अच्छा तरीका इसने ढूँढ़ ही तो लिया। लेकिन, कारण चाहे जो भी हो, बच्चे-बूढ़े पैरी की मज़ेदार और पौष्टिक मिठाइयों को खाये बिना नहीं रह सकते। खुली लीजिये या सुन्दर छपे फैंसी डिब्बों में। सब को खिलाइये। इनका आनंद लीजिये। पैरी की मिठाइयों से ज़िन्दगी में चार चाँद लग जाते हैं।

पैरीज़—उच्चकोटि की मिठाइयाँ बनानेवाले

Parry's

क्या आपने आज़माया है : लेवटो बोन बोन्स • मिल्क टॉफी • जिंजर कैप्स • लेमन बार्ली कोकोनट्स

पैरीज़ कानफेक्शनरी लिमिटेड, मद्रास

JWT/PRS 3453A

रंग भरो प्रतियोगिता नं. ४७ का परिणाम

'पराग' की रंग भरो प्रतियोगिता नं. ४७ में जिन चित्रोंको पुरस्कार योग्य चुना गया, उनमेंसे दोको यहां प्रकाशित किया जा रहा है। पुरस्कार विजेताओंके नाम और पते इस प्रकार हैं:

- **अरुण पटरथ, द्वारा श्री एम. ए. पटरथ, १५२४-ए, लक्ष्मीनिवास, नेपियर टाउन, जबलपुर (म. प्र.)।**
- **कुमारी जयश्री महान्ति, जगन्नाथ भवन, रामचंडी साही, पुरी (उड़ीसा)।**
- **दुर्गाशंकर जोशी, चांदपोल बाहर, नागरवाड़ीके पास, म. नं. २२-४७०, उदयपुर (राजस्थान)।**

पुरस्कार पाने वाले जिन दो चित्रोंको यहां छापा गया है उनमेंसे पहला चित्र है अरुण पटरथका और दूसरा कुमारी जयश्री महान्तिका। दोनों चित्रोंमें रंगोंका चुनाव, अवसरके अनुकूल पृष्ठभूमि और आकृतियोंमें हास्य तथा विस्मयके भावोंका बड़ी बारीकीसे चित्रण किया गया लगता है, जिससे दोनों चित्र सजीव हो उठे हैं।

इस बारका चित्र यद्यपि होलीके प्रसंगका था, किंतु बहुत कम प्रतियोगियोंने इस भावको समझनेकी कोशिश की और चित्रोंमें इस तरह रंग भरे कि उनमें हल्का-फुलकापन आनेके बजाय गंभीरता आ गई। यही कारण है कि ऐसे चित्र अच्छे होते हुए भी पुरस्कार योग्य नहीं बन सके।

प्रयास करने वाले दूसरे बच्चोंमें अपर्णा सिन्हा, गोरखपुर; इंदु नेगी, पिठौरागढ़; अमलेंदु नाग मनौरी; कमलेशकुमार, गुना; अमरकुमार वर्मा, अलीगढ़; राघवेंद्रसहाय, देहरादून; श्रीकिशन गुप्त, कानपुर; रंजना जोशी, अल्मोड़ा; कृपालसिंह ठाकुर, बम्बई; हिरण्यमय सिन्हा, नई दिल्ली; रोहितकुमार पुरुषोत्तमदास, भावनगर; प्रवीणकुमार, सवाई माधोपुर; महावीरसिंह, कोटा; बिड़दीचंद, सरदारशहर; सुरजाराम, सरदारशहर; एस. एस. राजन, कानपुर; शमीममोहम्मदखान, नागौर; कमलकांत ए. पटेल, बम्बई; निर्मला दुबे, बंगलौर; अमेशकुमार, हैदराबाद; कमलेशकुमारी, मुजफ्फरनगर और दिलीपकुमार दाधीच, बम्बईके प्रयास अच्छे रहे। ●

www.kissekahani.com

साठे

बिस्कुट

इतने स्वादिष्ट कि बस पूछिए ही नहीं !

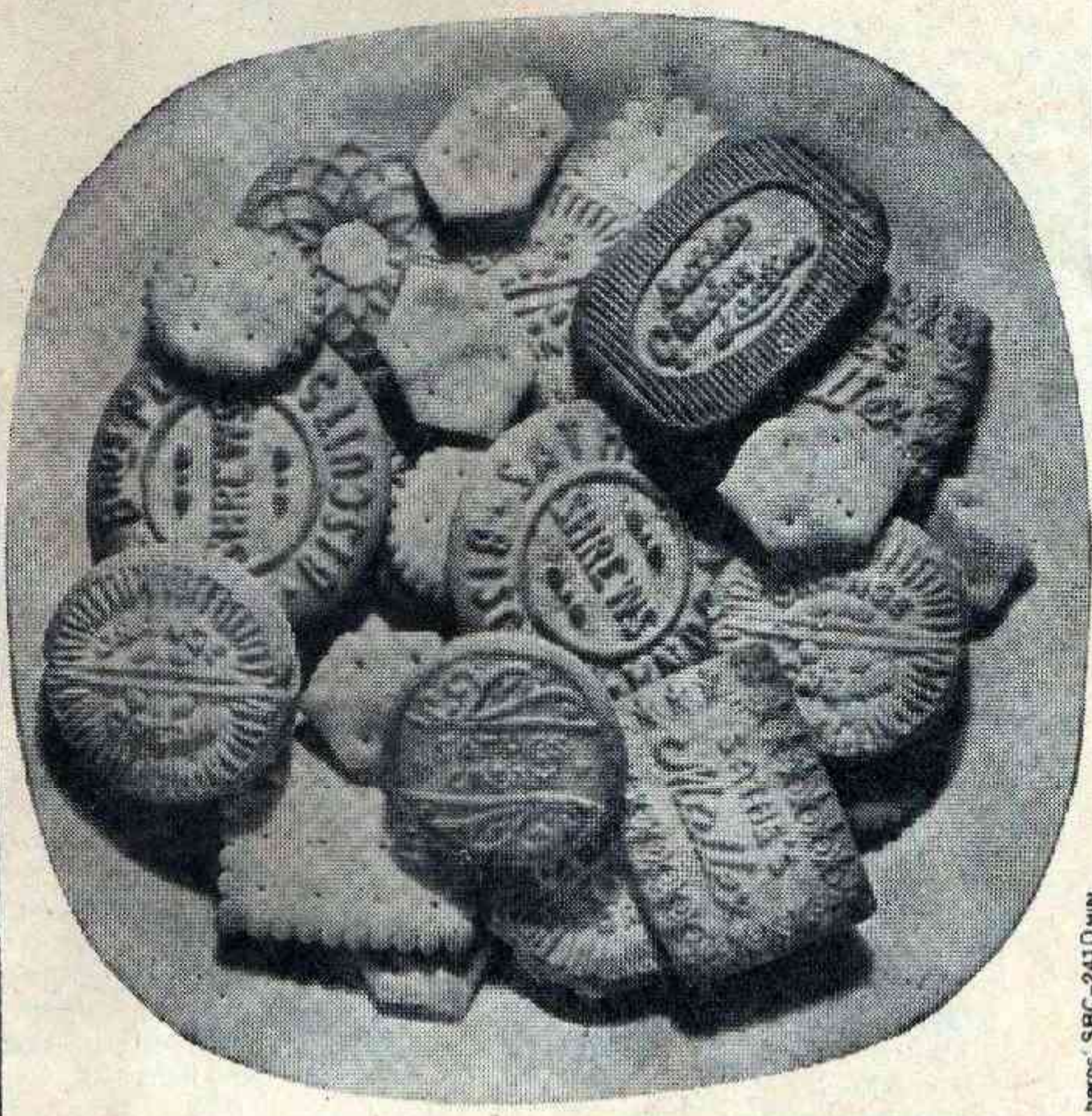

heros' SBC-2410 HIN

आभार : डा. देश दीपक.

www.kissekahani.com

ट कोलमैन एण्ड कम्पनी लिमिटेड, स्वत्वाधिकारी के लिए प्यारेलाल साहू द्वारा टाइम्स ऑफ इण्डिया प्रेस
ई में मुद्रित और प्रकाशित तथा आनंदप्रकाश जैन द्वारा संपादित; पो. आ. बाक्स २०७, दिल्ली ऑफिस
बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली–१; कलकत्ता ऑफिस : १३ / १ और १३ / २, गवर्नमेण्ट प्लेस ईस्ट

CIBA REGD. No. MH 468

M. SHAHID
H. No.813, Chotta Bazar,
Kashmere Gate, Delhi-110006
Mob. No.9250627385
mshahid.shahid786@gmail.com

बिनाका बेबी पावडर, मम्मी प्लीज। मैं एक सुकोमल, मखमल के समान मृदु व दुलार योग्य बेबी बनना चाहती हूं। बच्चे की त्वचा की सुरक्षा के लिए सीबा ने इस पावडर में सर्वाधिक मृदु कीटाणुनाशक ब्राडोसॉल का सम्मिश्रण किया है। मैं भी इसके द्वारा सुरक्षा चाहती हूं, प्लीज।

Binaca

baby powder with a gentle baby antiseptic